देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
UGC Valid Journal
(The Gazette of India, Extraordinary
Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजा शिवछत्रपति कला व वाणिज्य महाविद्यालय महागांव, महाराष्ट्र
हिन्दी विभाग अंतर्राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी विशेषांक नवम्बर 2021
हिन्दी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

डॉ. सुगंधा घरपणकर
विशेषांक सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर से संलग्न
राजा शिवछत्रपती कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
हिंदी विभाग तथा रूसी भारतीय मैत्री संघ "दिशा"
मास्को रूस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दि. 11 अगस्त 2021, **एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी**
हिंदी 'अध्येताओं को रोजगार के अवसर'

प्रकाशन सहयोग :–
डॉ. निवास जाधव
राजा शिवछत्रपती महाविद्यालय, महागांव

विशेषांक संपादक :–
डॉ. सुगंधा घरपणकर
हिंदी विभाग

सह. संपादक :–
प्रा. वनिता विरकर
प्रा. डॉ. सुकुमार आवळे
प्रा. डॉ. रचना मुसाई

आयोजक :–
हिंदी विभाग,
राजा शिवछत्रपती कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
महागाव (महाराष्ट्र)

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. ISSUE- (सेमिनार विशेषांक) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. सुगन्धा घरपणकर

हिंदी विभागाध्यक्ष, राजा छत्रपती महाविद्यालय, महागाँव, महाराष्ट्र

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुद्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. कुसुम कुंज मालाकार
हिन्दी विभाग,कॉटन विश्वविद्यालय
गुवाहाटी, असम

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व जि.शि.अधिकारी, च. दादरी

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. राजपाल
राजकीय पी.जी. महाविद्यालय
हिसार, हरियाणा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पार्वती गोंसाई
सरदार पटेल वि.वि.,
गुजरात।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
बिहार।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्होत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

***सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।**

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव–10, कृतिदेव–21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :– उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र; टेलीफोन, मोबाईल नं., ई–मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

☐ शोध पत्र 2000–2500 शब्दों (4–6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

☐ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

☐ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

☐ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/– रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/– रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	**पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)**
खाता धारक का नाम	:	**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी**
बैंक खाता संख्या	:	**1182000109078119**
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	शुभकामना संदेश	डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख	9-9
2.	शुभकामना संदेश	सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'	10-10
3.	सम्पादकीय	डॉ. सुगन्धा घरपणकर	11-11
4.	हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर	डॉ. लता पाटील	12-13
5.	प्रयोजनमूलक हिंदी और रोजगार अर्जन : पत्रकारिता के संदर्भ में	प्रा. डॉ. हिंदुराव घरपणकर	14-17
6.	अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार के अवसर	डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत	18-21
7.	हिन्दी भाषा में रोजगार के अवसर	डॉ. नरेश कुमार सिहाग	22-23
8.	हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर	डॉ. श्रीकांत बी. संगम	24-28
9.	रोजगार की भाषा-हिन्दी	राठोड राधा आत्माराम	29-33
10.	हिंदी में रोजगार का क्षेत्र : दृश्य-श्राव्य माध्यम	प्रा.डॉ. नेहा अनिल देसाई	34-36
11.	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रोजगार के अवसर	प्रा. हसीना अ. मालदार	37-40
12.	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर	प्रा. वाय.पी.पाटील	41-44
13.	हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर	गातवे युवराज शामराव	45-47
14.	राष्ट्रभाषा हिंदी में रोजगार के अवसर	सौ. रोहिणी गुरूलिंग खंदार	48-51
15.	हिंदी में रोजगार के अवसर	प्रा. ललिता भाउसाहेब घोडके	52-56
16.	हिन्दी विषय में कैरियर और रोजगार की संभावनाएं	डॉ. अनुसुइया अग्रवाल	57-60
17.	हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर	कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार	61-64
18.	हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर	प्रा.डॉ.-गडाख दिपाश्री कैलास	65-68
19.	हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं	डॉ. सी.एल. महावर	69-72
20.	हिंदी भाषा-जीविकोपार्जन के अवसर एवं संभावनाएं	आरती शर्मा	73-77
21.	हिंदी भाषा तथा रोजगार	सुश्री.स्वाति हिराजी देड	78-81
22.	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर	डॉ. भारती बाळकत्ष्ण धोंगड	82-85
23.	सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी : रोजगार के अवसर	श्री.निलेश सुरेशचंद्र पाटील	86-88
24.	हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर	प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील	89-90
25.	हिंदी के अध्यताओं को रोजगार के अवसर	डॉ. एम.एस. पाटील	91-95
26.	हिंदी अध्ययेता को रोजगार के अवसर	अनल रोडूअहरे, डॉ. अशोक मराठ	96-100
27.	हिंदी और रोजगार की संभावनाएँ	डा. संदीप पांडुरिंग शिंदे	101-103
28.	हिंदी के अध्यायता को रोजगार के अनेकानेक शुभ अवसर	डॉ अंजना अप्पासाहेब कमलाकर	104-107
29.	रोजगार की भाषा हिन्दी	डॉ. संजय बजरंग देसाई	108-110
30.	हिंदी में रोजगार की संभावनाएं	डॉ. रूपाली दिलीप चौधरी	111-115

शुभकामना संदेश

मुझे अतीव प्रसन्नता है कि राजा शिवछत्रपति कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, महागांव, जिला. कोल्हापुर, महाराष्ट्र के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर के संपादन में 'हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय आभासी गोष्टी के आधार पर एक ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है।

मनुश्य के सामने रोजगार का प्रश्न प्राचीनकाल से रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति को पचहत्तर वर्ष हो रहे है पर बेरोजगारी का प्रश्न अभी भी जैसे का तैसा है। जनमानस में यह गलत फहमी है कि हिंदी में रोजगार के अवसर बहुत ही अल्प है। वास्तव में देख जाए तो प्रतीत होता है कि जनमानस की इस सोच में कुछ सच्चाई भी है। क्योंकि अधिकांश क्षेत्रों में आज भी अंग्रेजी का वर्चस्व है। उच्च शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी है। हमारी पूरी न्याय व्यवस्था अंग्रेजी में कार्य कर रही है। मेडिकल व इंजीनियरिंग की शिक्षा अंग्रेजी में उपलब्ध है। इसमें संदेह नहीं कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2021 हिंदी साहित्य सभी भारतीय भाषाओं की दृष्टि से महनीय सिद्ध होगी।

परंतु सच्चाई यह भी है कि पिछले साढे सात दशकों में हिंदी ने खूब उन्नति करके अपने दम पर उसने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपने चरण रखे है। हिंदी भाषा ने अब महासागर का रूप धारण किया है। विश्व के लगभग समस्त देशों में हिंदी ने अपनी पताका फहरा दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी पहले से ही व्यापार–व्यवसाय की भाषा रही है। वैश्वीकरण के बाद तो हिंदी ने रोजगार के अनेक द्वार खोले हैं।

वर्तमान में हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर मिल रहे हैं। आज हिंदी मात्र साहित्य की भाषा नहीं है, अपितु हर क्षेत्र में उसने सफलतापूर्वक प्रवेश पाकर शिखर को छू लिया है। शिक्षा, प्रशासन, प्रबंधन, विधि, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार निश्चित उपलब्ध है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल मीडिया, अनुवाद, मनोरजंन, पत्रकारिता, पर्यटन, बैंक आदि क्षेत्रों में हिंदी के अध्येताओं के लिए नये नये रोजगार मिल रहे है।

तात्पर्य है कि हिंदी में रोजगार की अनंत संभवनाएं आज है। परिणामतः प्रस्तुत कृति में प्रकाशित समस्त अध्ययन पूर्ण आलेखों के माध्यम से हिंदी के अध्येयताओं को एक नई दिशा मिलेगी। अतः प्रस्तुत कृति का संपादक मंडल व लेखक वर्ग बधाई के पात्र है।

इति शुभम्!

–डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख

अध्यक्ष, विश्व हिंदी साहित्य सेवा

संस्थान, प्रयागराज, उ.प्र

शुभकामना संदेश

विदेशों में हिन्दी का भविष्य उज्जवल है।

आपके महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर बहुत अच्छा लगा।

भारतीय भाषायें और उनमें हिन्दी विदेशों में निरवरत प्रसार पा रही है।

विदेशों में हिन्दी को भारतीय भाषाओं में सम्पर्क भाषा के रूप में देखा जाता है। विदेशों में रहने वाले बहुत से भारतीयों की मात्र भाषा हिन्दी है।

यूरोप के अनेक देशों में स्कूलों और बालवाड़ी में हिन्दी मात्र भाषा के रूप में या तो भाषा या सहयोगी भाषा के रूप में पढ़ाईं जाती है। विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

विदेशों में निरन्तर हिन्दी के पाठक और श्रोता भी बढ़ रहे हैं।

कुछ मामलों में विदेशों में हो रहा हिन्दी लेखन भारत में हो रहे हिन्दी लेखन से किसी मायने में कम नहीं है। ये श्रोतों की विश्वसनीयता और ईमानदारी से जाँच और शोध करके लिखी जाने वाली रचनायें हैं। हमारा प्रवासी लेखन इसका एक उदाहरण है।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है,

"जाके पाँव न फटे बेवायीं। वो का जाने प्रीत परायी।।"

स्वयं का उदाहरण दें तो कोविड संक्रमण अथवा कोरोना संकटकाल में मेरी काव्य पुस्तक 'लॉकडाउन' को मानवीय सरोकारों को व्यक्त करने वाली पहली काव्य कृति कहा गया है।

लॉकडाउन एक महीने में मराठी और पंजाबी में प्रकाशित होने वाली है, पुस्तक प्रेस में है।

अमेरिका, कनाडा में हिन्दी के अलावा पंजाबी, मराठी भाषा की अनेक पत्र पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं और इन भाषाओं में कार्यक्रम अनेक रेडियो में प्रसारित किए जाते हैं।

आपको पुस्तक/स्मारिका आदि प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

-सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
सम्पादक, स्पाइल–दर्पण, ओस्लो, नार्वे
अध्यक्ष, भारतीय–नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फ़ोरम
speil.nett@gmail.com

सम्पादकीय-

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से सलग्न राजा शिवछत्रपती कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, हिंदी विभाग महागांव तथा रूसी–भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' मास्को रूस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार ''हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर'' बुधवार, दिनांक 11 अगस्त 2021 को संपन्न हुआ। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का इतिवृत्त प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आज विश्व में हिंदी बोलनेवालों की संख्या बढ रही है। आज हिंदी भाव विश्व में दूसरे नंबर पर है। सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा के रूप में हिंदी हमें दिखाई देती है। इससे स्पष्ट है कि इस भाषा में वैश्विक भाषा में वैश्विक भाषा बनने की क्षमता है। अतः हिंदी भाषा देश की राजभाषा संपर्क भाषा एवं कार्यालयीन भाषा के रूप में प्रयुक्त होने के कारण हिंदी के रोजगार के क्षेत्र भी बढ रहे है।

हिंदी आज देश तथा विदेशों के व्यापार उद्योग, मनोरंजन, खेल, समाचार आदि की भाषा बनी है जो सिर्फ आसान और वैज्ञानिक ही नहीं जानदार एवं कमाल भाषा है जिसका अध्ययन करने वालों को देश तथा विदेश में भी रोजगार के लिए द्वार खुल रहे है। हिंदी के द्वारा हम शिक्षी, राजनीति, इतिहास, विज्ञान, वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकते है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारों हिंदी भाषी राज्यों में के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। अतः केंद्र राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाईयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। निजी टीवी और रेडियो चैनलों की शुरूआत और स्थापित पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी रूपान्तर आने से रोजगार के अवसरों में कई गुणा वृद्धि हुई है। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादकों संवाददाताओं, रिपोर्टरों, न्यूजरीडर्स, उप–संपादकों, पुफ–रीडरों, रेडियो जॉकि, एंकर्स आदि की बहुत आवश्यकता है।

आज भारी संख्या में विदशी छात्र हिंदी सीखने के लिए भारत आ रहे है। कई तकनीकी रोजगार हिंदी के बल पर मिलने नजर आ रहे हैं हिंदी के भविष्य व बाजार का देखते हुए कहना गलत न होगा कि आने वाला समय और भी रोजगार एक होगा।

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में स्वीकृत शोधालेख ई–बुक का आकार देने हेतू विशेष रूप में सेनापती प्रतापराव गुजर शिक्षण संस्था के अध्यक्ष मा. बाळासाहेब कुपेकरसो महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. निवास जाधव, मुख्यलिपिक भरमा पाटील सर, तथा पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के प्रो.डॉ. अर्जुन चव्हाण सर इनका विशेष सहयोग मिला।

इस वेब संगोष्ठी के सह. संयोजक प्रा. वनीता विरकर महाविद्यालय के सभी सहयोगी अध्यापकों एवं प्रशासकीय सेवकों का सहयोग मिला। इनके सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है।

-प्रा. डॉ.सुगंधा हिंदूराव घरपणकर,
हिंदी विभाग, राजा शिवछत्रपती कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, महागांव,
मो. 9423269708

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 12-13
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

–डॉ. लता पाटील

राजीव गांधी शिक्षा महाविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)

इकीसवीं सदी की ओर जाने से पहले आज का भारत क्या है इसके बारे में देखना उचित होगा। हमारे देश को आजादी तो मिली लेकिन इस कालावधी में जितना विकास हमें करना था हम नहीं कर सके। आज हमारे सामने आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक आदि समस्याएँ है। इनमें और एक गंभीर समस्या है, वह है। जनसंख्या यह जनसंख्या एक बड़ी समस्या है। इसकी वजह से रोटी, कपडा, मकान, आर्थिक सामाजिक आदि समस्याओं की उत्पत्ति हुई। परिणामस्वरूप बेरोजगारी की बनती जा रही है और इस बेरोजगारी के वजह से युवाओं से लेकर वृद्धों तक शराब, ड्रग्स आदि नशीली चीजों में डूब गये हैं। और इन बेरोजगार युवकों का गुनाहगारी जगत में परिवर्तन हो रहा है। फलस्वरूप देशांतर्गत हड़ताल मोर्चा मारपीट, गोलीबारी आदि किए जा रहे हैं।

भारत में कई समस्याओं में बेरोजगारी की समस्या गंभीर समस्याओं में से एक है। सभी व्यक्ति शिक्षित होकर रोजगार की तलाश में जूट जाते है। बहुत से लोग लाभ उठाते है। कुछ लोग इससे वंचित रह जाते है। रोजगार करना मनुष्य के जिंदगी का अहम पहलू है। रोजगार के बिना गुजारा करना मुश्किल है।

रोजगार हमें ज्ञान भी देता है और हम अपने क्षेत्र में और कामयाब कैसे हो सकते है। कुछ लोग लघु उद्योगों में काम करते है। बहुत से लोग कृषि करके अपना गुजारा करते है। कई लोग व्यापार करते है और कई लोग बड़ी–बड़ी कंपनियों में नौकरी करते है। जो लोग नौकरी करते है, उन्हें मासिक वेतन मिलता है। देश में सरकार बेरोजगारी को कम करने के लिए पूरी कोशिशें कर रही है व रोजगार के अवसरों में वृद्धि होना बहुत आवश्यक है।

हमारे राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रिय और बढते अंतर्राष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त प्रगति हुई है। केंद्र सरकार राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है।

हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढ़ते अंतराष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त प्रगति हुई है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें (हिंदी भाषी राज्यों में) के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक (राजभाषा) जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। निजी टीवी और रेडियो चैनलों की शुरूआत और स्थापित पत्रिकाओं/समाचार–पत्रों के हिंदी रूपान्तर आने से रोजगार के अवसरों में कई गुणा वृद्धि हुई है। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादकों, संवाददाताओं, रिपोर्टरों, न्यूजरीहसे, उप–संपादकों, प्रुफ–रीडरों, रेडियो जॉकी, एंकर्स आदि की बहुत आवश्यकता है।

हिंदी में पत्रकारिता :–

हिंदी में रोजगार की इच्छा रखने वालों के लिए पत्रकारिता/जन–संचार में डिग्री/डिप्लोमा के

साथ–साथ हिंदी में आदमिक योग्यता रखना महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति रेडियो/टीवी/सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट राइटर/डॉयलाग राइटर/गीतकार के रूप में भी काम कर सकता है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक और कलात्मक रूप में सृजनात्मक लेखन आवश्यक होता है। लेकिन किसी व्यक्ति के लेखन के स्टाईल में सृजनात्मक लेखन में डिग्री/डिप्लोमा निश्चित तौर पर निरवार या सकते है।

हिंदी में अनुवादक :–

हिंदी में अनुवादक के क्षेत्र के लिए द्विभाषी दक्षता होना महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति एक स्वतंत्र अनुवादक के तौर पर अपनी आजीविका संचालित कर सकता है और अपनी खुद की अनुवाद फर्म भी स्थापित कर सकता है। ऐसी फर्मे अनुबंध आधार पर कार्य प्राप्त करती है तथा बहुत से पेशेवर अनुवादकों को रोजगार उपलब्ध कराती हैं। विदेशी एजेंसियों से भी अनुवाद परियोजनाओं के अवसर प्राप्त होते हैं। यह कार्य आसानी से इंटरनेट के जरिए किया जा सकता है। विश्वभर में सिस्ट्रॉन, एसडीएल इंटरनेशनल, डेट्रॉयर ट्रांसलेशन यूरो, प्रोज आदि असीमित संख्या में भाषा कम्पनियां है।

हिंदी अधिकारी :–

विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते है। हिंदी भाषा अधिनियम कि सभी संस्थानाओं में हिंदी अधिकारी की नियुक्ति होगी। भारत सरकार व निजी संस्थानों में रूप में काम करने का अवसर मिल सकती है। देश–विदेश कम सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार नियुक्ति हो सकती है।

अनुवादक व द्विभाषिया :–

प्रिंट मिडिया सहित कई सरकारी विभागों में अनुवादक व हिंदी लेखक उपलब्ध है। कई संस्थान अनुवादकों को कॉन्ट्रेक्ट आधार पर रोजगार देते हैं। अंग्रेजी या अन्य में अपना लेखन लिखने वाले जाने–माने अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के लेख का अनुवाद हिंदी में किया। अंग्रेजी में फिल्मों, विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही और अपनी ट्रांसलेशन कंपनी भी खोल सकते है।

मीडिया :–

टीवी और रेडियो चैनल्स और पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी संस्करणों में हुई बढोतरी से इन क्षेत्रों में भी नौकरियों के अवसर कई गुना बढ़े हैं।

सॉफ्टवेयर :–

हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरूरत छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे है।

प्रतियोगी परीक्षा :–

हिंदी से स्नातक करने के बाद कई प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्विस के अथवा रेलवे व बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर है। हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और आमतौर पर इस दिन महत्ता, इसकी पहुंच इसके सम्मान आदि को लेकर बात होती है। कोई दो राय नहीं कि हिंदी दुनियांभर में बढी है और इसके क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।

यानी अब हिंदी केवल राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बनाई है। आइए जानते हैं हिंदी भाषा पर अच्छी पकड ही तो कहां–कहां आपको मौका मिल सकता है खासी कमाई कर सकते हैं।

मो. 9632108983

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 14-17
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रयोजनमूलक हिंदी और रोजगार अर्जन : पत्रकारिता के संदर्भ में

–प्रा. डॉ. हिंदुराव घरपणकर
डॉ.बी.डी. जत्ती शिक्षा महाविद्यालय, बेळगांव, कर्नाटक।

प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ है ऐसी विशेष हिंदी जिसका उपयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए ही किया जाए। इसे कामकाजी हिन्दी तथा व्यावहारिक हिंदी भी कहा जाता है। आज प्रयोजनमूलक हिन्दी शब्द अंग्रेजी शब्द 'फंक्शनल लैग्वेज' के पर्याय के रूप में प्रचलित और स्विकृत है। मोटूरी सत्यनारायण ने प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप एवं कार्य क्षेत्र को स्पष्ट करते हुए लिख है – ''जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।''[1] अतः प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य हिन्दी के उन विविध रूपों से है जो सेवा माध्यम के रूप में सामने आते है। इसलिए डॉ. प्रभात लिखते है कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय का (Concept) आधार बनाती है। प्रयोजन मूलक हिंदी के चरित्र को स्पष्ट करते हुए वे कहते है ''वह अनुभव के अंश निकाल देती है। अतः वहॉ तथ्य और सिद्धांत ही रह जाते है। कामकाजी भाषा सम्प्रत्यय (Concept) तथ्य Fact और सिद्धान्त Principles के समन्वय के साथ परिणामोन्मुखी काम करती है।''[2]

प्रयोजनमूलक हिंदी विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न सामाजिक वर्गों द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा है। प्रयोजन मूलक हिंदी के डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा जी ने मुख्य दो भेद लिए है। और उनके उपभेद एक है Core Hindi और दूसरी है। Dvanced Hindi पारस्परिक सम्प्रेषण (Core Hindi) के चार उपभेद है कार्यालय प्रशासन के लिए प्रमूक्त हिन्दी, व्यावसायिक हिंदी वाणिज्य गतिविधियों के लिए प्रयुक्त, तकनीकी तथा विधि व्यवसाय में प्रयुक्त, तथा समाजी हिंदी। भोलानाथ तिवारीजीने प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला है उन्होंने हिंदी के सात प्रयोजनामूलक रूप बतलाए है। बोलचाली हिंदी, व्यापारी हिंदी, कार्यालयी हिंदी, शास्त्रीय हिंदी, वैज्ञानिक तथा तकनिकी हिंदी, समाजी हिंदी, साहित्यिक हिंदी, प्रशासनिक हिंदी तथा जनसंचार माध्यम प्रयोजन मूलक के विविध रूप ही उनके विविध प्रयोग क्षेत्रों की ओर संकेत करते है।

जब भाषा विशिष्ट दायित्वों को पूरा करती है तो वह प्रयोजनमूलक भाषा का रूप धारण करती है। विशेष प्रयोजनों के लिए समाज को विशेष भाषा की जरूरत पड़ती है। सामान्य भाषा का आधार लेकर ही प्रयोजन मूलक भाषा एकरन्ती होती है। आधुनिक युग संचार का युग है। अतः संचार माध्यमों अथवा पत्रकारिता के भाषा वैविध्य अत्यंत दृत गति से विकसित हो रहा है। अतः इन वैविध्यों को इस विशिष्ट क्षेत्र अर्थात पत्रकारिता के विषय क्षेत्र Domain से विस्तार हुआ है। पत्रकारिता आज राजनैतिक एवं सामाजिक गति विधियों तक ही सीमित नहीं रह गई है बल्कि यह आज अपने को आर्थिक साहित्यिक सांस्कृतिक आदि क्रिया कलापों से जोड़ चुकी है।

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी जर्नलिज्म Journalism का पर्याय है। जर्नलिज्म शब्द 'जर्नल' से हुआ है।

जिसका अर्थ है, दैनिक विवरण, ''पत्रकारिता वह विधा है जिसमें पत्रकारों के कार्यो कर्तव्यों का विवेचन किया जाता है, जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए वही पत्रकारिता है।''[3] वर्तमान युग में पत्रकारिता का बडा महत्व है। पत्रकारिता एक मशाल है। जिसकी रोशनी में जहॉ समाज अपना चेहरा दिखाता है। वहीं समाज की सच्चाइयों को अपनी आँखो से देखता है इसी के आधार पर समाज की समस्याओं का समाधान करता है। इसलिए इसे संघर्ष के समय पत्रकारिता का महत्व अधिक बढ़ा है।

आधुनिक युग में प्रिंट मीडिया का महत्व बहुत बढ गया है। जिनके हाथों में प्रिंट मीडिया है वे अभिजात वर्ग के लोग है। उन्हें कम समय में अधिक धन की आवश्यकता रहती है। पत्रकारिता यह उनके लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। भूमंडलीकरण के प्रभाव से आज विश्व एक जागतिक गाँव में परिवर्तित हो रहा है। हर क्षेत्र बाजार से जुड़ रहा है। हिंदी विश्व भाषा के रूप में उभरकर आ रही है। बहुराष्ट्रीय कंम्पनियों को हिंदी का सहारा लेना पड़ रहा है। उसी तरह हिंदी पत्रकारिता भी विश्व स्तर पर पहुँचकर अपना चमत्कार दिखाने लगी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी के अलग–अलग रूप देखने को मिलते है। हिंदी अकेली ऐसी भाषा है जिसमें अत्याधिक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है।

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में पत्रकारिता की प्रासंगिकता दिन–ब–दिन बढ़ रही है। आज की दुनिया ग्लोबल विलेज की दुनियां है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रोजगार के नये अवसर प्रदान किये है। शिक्षा कें द्वार खोले है। आज के युवकों में पैसा कमाने की दौड़–सी लगी है। उनके लिए पत्रकारिता बहुत ही सहायक होती है। ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता मुनष्य–जीवन के प्रत्येक पहलू से प्रभावित होकर हर पहलू को प्रभावित करती है। परस्पर निर्भयता और समन्वयकरण के कारण यह समाज का दर्पण बन गई हे। इसकी लोकप्रियता और प्रभाव को देखते हुए इसे लोकतन्त्र का 'चौथ खम्भा' कहा जाता है।''[4] पत्रकारिता के विविध पहलूओं से हमें रोजगार प्राप्त हा सकता है वे इस प्रकार है।

1) खोजी पत्रकारिता :–

जब कोई अधिकारी, संस्था या संगठन किसी तथ्य को छिपाने की कोशिश करता है तो वहाँ खोजी पत्रकारिता प्रयोग में लायी जाती है। इसमें खोजी पत्रकारिता को जासूस की भूमिका निभानी पड़ती है। अप्रामाणिक तथ्य, भ्रष्टाचार, घोटाला आदि बातों को उजागर करने के लिए खोजी पत्रकारिता अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। वर्तमान समय में भारत कार्डों का राष्ट्र हो गया है। हर दिन एक कांड होता है। ऐसी स्थिति में हमारे देश में खोजी पत्रकारिता और पत्रकारों का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।

2) विज्ञान पत्रकारिता :– (Science Journalism)

आधुनिक वैश्वीकरण की दुनिया में विज्ञान की उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाने के लिए विज्ञान पत्रकारिता बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें विज्ञान से संबंधित समाचारों सूचनाओं अनुसंधान उपलब्धियों को समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, संचार माध्यमों से लिखकर जनसामान्यों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी पत्रकार की है। विज्ञान पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक है। विज्ञान पत्रकारिता मानव जीवन के हर एक पहलू को विकास से जोड़ने का साधन है। विज्ञान पत्रकारिता विश्व के लोगों को विज्ञान के नए–नए खोजों से परिचित कराता है। इसके माध्यम से देश की कृषि, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी, रहन–सहन स्वास्थ्य समस्याओं को विज्ञान पत्रकारिता के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

3) वृत्तान्त पत्रकारिता :- (Commentary Journalism)

उत्सव, लोकसभा, मेला, समारोह, अधिवेशन आदि का दूरदर्शन और आकाशवाणी द्वारा प्रसारण करना इस वृत्तान्त पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य है। यह वृत्तान्तकार अपनी मोहक वाणी से श्रोताओं को बाँधने में सफल होता है। दृश्य–काव्य माध्यमों के अन्तर्गत इस पत्रकारिता का विशिष्ट महत्व है।

4) फिल्म पत्रकारिता :- (Film Journalism)

इस पत्रकारिता में फिल्मी सितारों के रंग–बिरंगी तस्वीरें तथा उनके बारे में जानकारी दी जाती है। दर्शकों को प्रभावित करने के लिए इस पत्रकारिता का उपयोग होता है। फिल्मों की समीक्षा, नई फिल्म की जानकारी, शुटिंग रिपोर्ट, साक्षत्कार रिलिज, आदि फिल्म पत्रकारिता के प्रमुख पक्ष है।

5) आर्थिक पत्रकारिता :-

हमारे देश में आर्थिक पत्र–पत्रिकाओं में द इकोनॉमिक टाइम्स, दैनिक अकोला बाजार समाचार, फाइनेन्शियल एक्सप्रेस, रिसाला बाजार, उद्योग भारती, अरम उजाला, व्यापार भारती आदि लोकप्रिय पत्रिका है। विश्व के सभी देशों के आपसी संबंध आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों पर ही निर्भर रहते है। इसी अर्थ से संबंधित सभी बातों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता महत्वपूर्ण है। आर्थिक योजनाएँ, बाजार समाचार, मुद्रा बाजार, पूँजी बाजार, वस्तु बाजार, बैंक, ग्रोमोद्योग, बजट, राष्ट्रीय आय के समाचार, वित्तिय निगम आदि आर्थिक पत्रकारिता के विषय है।

6) ग्रामीण पत्रकारिता :- (Rural Journalism)

देश की ग्रामीण जनता की समस्याओं उनकी आशा–आकाक्षांओं को ग्रामीण पत्रकारिता के माध्यम से प्रस्तुत करना इस ग्रामीण पत्रकारिता का उद्देश्य है। भारत के गाँवो में नईं चेतना और वैज्ञानिक विकास का प्रचार–प्रसार इस पत्रकारिता के द्वारा किया जा सकता है। कृषि पत्रकारिता द्वारा इस क्षति की पूर्ति की जा सकती है। इसके द्वारा किसानों के हित के लिए अनेक काम में नवीन खोज अपनाने के लिए आसानी से प्रेरित किया जा सकता है। इसमें कृषि अर्थशील, कृषि रसायन, कीटक शास्त्र, कृषि प्रसार, पशुपालन, दुग्ध उद्योग, भूमि संरचना, उद्यान शास्त्र, बाजार भाव, फल मंडी बाजार, फसल रिपोर्ट, मौसम समाचार तथ नयी योजनाओं का उल्लेख किया जाता है।

7) खेल पत्रकारिता :- (Sports Journalism)

वर्तमान समाय में खेल पत्रकारिता का क्षेत्र महत्वपूर्ण है। खेल के संबंध में अग्रिम और चल दो प्रकार के संवाद लिखे जाते है। अग्रिम में शामिल होने वाली टीमे, खिलाड़ियों के नाम, क्रीड़ा व्यवस्था खेल विशेष के बारे में जानकारी दी जाती है। चल संवाद में खेल का निष्पक्ष समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाता है। इसमें 'खेल–खिलाडी', 'किक सम्राट', 'स्पोर्टस्वीक', 'खेलयुग' आदि पत्रिकाएँ है। इस पत्रिका से खिलाडियों को प्रोत्साहन मिलता है।

8) बाल पत्रकारिता :- (Child Journalism)

बच्चों के लिए आज अनेक पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है। जिनमें रंग–बिरंगे फूल–पत्तियों, कार्टून मनोरंजक कविता, चुटकुले, कहानी आदि का समावेश रहता है। 'बाल सखा', पराग, शिशु, चन्दामामा, नन्दन, किशोर, चुन्नूमन्नू, गुडिया, बालभारती आदि कईं पत्रिकाएँ निकलती है।

9) रेडियो, टेलिविजन पत्रकारिता :-

इसमें समाचार बुलेटिन, समाचार दर्शन, समीक्षा, व्याख्यात्मक सामग्री, ध्वनी, समाचार वाचन विविध प्रकार की जानकारी रेडियो पत्रकारिता में आती है। टेलीविजन पत्रकारिता के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान का होना आवश्यक है। टेलीविजन पत्रकारों को लेखन के साथ शब्द, ध्वनि, दृश्य पर ध्यान देना आवश्यक है। उनका भविष्य आज सुनहरा है।

उपर्युक्त क्षेत्रों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि पत्रकारिता के माध्यम से हम आज अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकते है। पत्रकारिता इस सदी की अच्छी उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. मोटूरी सत्यनारायण – प्रयोजनमूल हिंदी – सं. डॉ. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव, पृ. 21.
2. डॉ. राजकुमारी रानी – पत्रकारिता विविध विधाएँ, पृ. 17.
3. डॉ. रेश्मा नदाफ – जनसंचार एवं पत्रकारिता, पृ. 51.

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 18-21
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार के अवसर

–डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत
सहायक प्राध्यापक, कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय सटाणा, ता. बागलाण जि. नासिक।

विश्व में हर जीव अपनी शारीरिक जरुरतें पूर्ण करने हेतु उसे भोजन की आवश्यकता होती है। जिसके द्वारा वह अपने शरीर को पृष्ट एवं मजबूत बनाता है। इन जीवों में सबसे बुद्धिवान प्राणी मनुष्य माना जाता है। मनुष्य के लिए रोटी, कपड़ा और मकान यह आवश्यक है, इसकी पुर्ति के लिए वह नौकरी तथा व्यापार, उद्योग एवं कुछ ना कुछ करता है, अर्थात् उसे रोजगार की आवश्यकता होती है।

हम हिंदी भाषा के कारण हिंदी अध्ययता के लिए रोजगार के अवसरों पर विचार–विनिमय करने वाले है। सबसे पहले हिंदी भाषा के संदर्भ में जानकारी आवश्यक है। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत है। हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रभाषा है। हमें राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रभाषा पर गर्व होना चाहिए। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी के कारण ही सारे राज्य एक सुत्र में पिरोकर भारत देश का निर्माण हुआ है। आज यह एक संघ राष्ट्र के रुप में अवतारित है। भारत देश अलग–अलग राज्य, विभिन्न भाषा, बोली, संस्कृति का देश है फिर भी हिंदी भाषा के कारण एकता में बँधा है, यह कहना अनुचित नहीं होगा। आपस में विचारों का आदान–प्रदान, व्यापार, संस्कृति की जानकारी यह केवल हिंदी भाषा ही परिणाम है।

हिंदी भाषा को बोलनेवाले तथा जानने वाले केवल भारत देश में ही नहीं तो सारे विश्व में विद्यमान है भारत में हिंदी भाषा कों बोलनेवालों की संख्या अधिक है, "हिंदी देश की ऐसी भाषा है जो देश के अधिकत्तर हिस्सों में बोली और समझी जाती है। यह देश को जोड़ने काम करती है।"[१] ज्ञानी जैल सिंह इनका यह कथन है, अर्थात हिंदी सबको एक सुत्र में लाने का कार्य करती है।

१९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ और १४ सितम्बर १९४९ को स्वाधीन भारत के संविधान में हमारे राष्ट्रीय नेताओं का सपना साकार हुआ। हिंदी संघ की राजभाषा और देवनागरी लिपि राजलिपि स्वीकृत की गई।

१४ सितम्बर १९४९ को हिंदी भाषा को राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ और देवनागरी लिपि का प्रयोग होना यह निर्णय लिया गया। विश्वभर में हिंदी का बोलबाला हो रहा है। हिंदी भाषा लगातार लोकप्रिय हो रही है विभिन्न देशों में भी हिंदी लोकप्रिय बन रही है। हिंदी भाषा का क्षेत्र भी दिन प्रतिदिन विशालतम बनता जा रहा है। हिंदी अध्ययताओं के लिए रोजगार के अवसर भी अनंत है। वहाँ तक हमारी पहुँच भी होनी चाहिए।

हिंदी भाषा अध्ययता के लिए रोजगार के क्षेत्र :–

विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 60 करोड़ से अधिक है और हिंदी समझने वालों की संख्या

लगभग एक अरब से भी ज्यादा है। सबको रोजगार की आवश्यकता है। हिंदी के कारण निम्नवत् क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त हो सकते है। शिक्षा/अध्यपन क्षेत्र–पत्रकारिता के क्षेत्र, रेडियों जॉकी और समाचार वाचक, हिंदी में सृजनात्मक साहित्य, पर्यटन, फिल्म, शासन, सरकारी दफ्तरों में, पुलिस विभाग, ड़ाक क्षेत्र, जीवन बीमा, साहित्य क्षेत्र, गीतकार, संगित क्षेत्र, दूरदर्शन, संवाददाता, रेल का क्षेत्र, हवाई जहाज, बैंक, भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना, नाटक, व्यापार, औद्योगिक क्षेत्र, संगणक, दूरसंचार हिंदी भाषिक, मार्गदर्शक अनुवादक आदि अनंत क्षेत्र रोजगार के लिए उपलब्ध है। अलग–अलग क्षेत्रों में अलग पदों के लिए (जिस नौकरी के लिए) आवेदन करते है वहाँ उसके अनुसार शैक्षणिक अर्हता होना आवश्यक है। हम अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता के लिए प्राप्त रोजगार पर दृष्टि डालेंगे। इससे पूर्व अनुवाद का अर्थ, अनुवाद की परिभाषा जानना आवश्यक है।

अनुवाद का अर्थ :–

'अनुवाद' यह शब्द 'अनु+वाद' दो शब्दों सें मिलकर बना है 'अनु' का अर्थ बाद में अथवा पश्चात और 'वाद' का शब्द संस्कृत के वेद् धातु से बना है। जिसका अर्थ 'बोलना' या कहना अर्थात कही गई बात को पुनः कहना अनुवाद है"।[२]

अनुवाद के अर्थ को संक्षिप्त शब्द सागर हिंदी शब्द भंडार कें इस प्रकार बताया है। "अनुवाद–'उत्था/तर्जुमा, पुनरुक्ति, फिर कहना, दोहराना, वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन।"[३]

नालंदा विशाल शब्द सागर में भी यही अर्थ प्राप्त होता है– "भाषांतर/उत्था, तर्जुमा, पुनरुक्ति, अध्ययन पुनःरुलेख, मिमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय का दूसरे शब्दों में दोहराणा।"[४] अर्थात् अनुवाद का अर्थ किसी प्राप्त आलेख/सामग्री आशय का दुसरे शब्दों में भाषा में दोहराना है।

अनुवाद की परिभाषा :– अनेक विद्ववानों ने दी हुई हे उनमें सें कुछ १) भोलानाथ तिवारी – "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग इस प्रकार अनुवाद 'निकटतम' समतल्य और सहज प्रति प्रतीकन है"।[५]

अवधेश मोहन गुप्त – "अनुवाद स्त्रोत के पाठ के –कथन और कथ्य की लक्ष्य भाषा में सहज एवं समतुल्य अभिव्यक्ति है।

पट्टनायक – "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसक द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा समुदाय से दूसरी भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।"[7]

तात्पर्य एक भाषा में कहे गये अथवा लिखे गये आशय/सामग्री को दूसरी भाषा में उसी भावबोध से रुपांतरित करना हिंदी भाषा के कारण अनुवाद के अनंत क्षेत्र अध्ययता के लिए रोजगार के रुप में उपलब्ध है, उनमें कुछ का निम्न वर्णन किया है।

बैंक का क्षेत्र :–

आज वैश्वीकरण के कारण सभी क्षेत्र अपना विकास कर रहे है। मानव के विकास के साथ हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार के क्षेत्र भी विकसित हुए है। "सन १९६९ में १४ प्रमुख वाणिज्यक बैंक एवं तद्पश्चात १९८० में अन्य वाणिज्यक बैंको के राष्ट्रीकरण के फलस्वरुप बैंकों पर अधिनियम, नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम लागू हो गए। राष्ट्रीय करण के कारण बैंकिग ढांचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए है। अतः कारोबारी विकास एवं संविधिक

उपबंधों को पूरा करने हेतु बैकों के लिए आवश्यक हो गया कि वे हिंदी में कार्य करें। मूल बैकिंग नियम में भी जारी/प्रकाशित करना अनिवार्य है।"[८]

तात्पर्य :–

बैकों में अनुवाद के रुप में हिंदी अध्ययता को अनुवाद के रुप में रोजगार प्राप्त है। शुरु में ही बैंको का कामकाज अंग्रेजी में था। उसमें पत्र व्यवहार, लेखन, फार्म, दस्तावेज, नियम, विनिमन। सभी में अंग्रेजी का प्रयोग था पश्चात राजभाषा अधिनियम के कारण उसें हिंदी भाषा में अनुवादित करना आवश्यक है। अतः बैंक के क्षेत्र में हिंदी अध्ययता को रोजगार प्राप्त है।

सरकारी विभाग :–

सरकार के लगभग सभी विभागों में अनुवादक की जरुरत होती है। जो सरकारी दस्तावेज हैं उनका अनुवाद करते है। भारत में राजभाषा अधिनियम के अनुसार सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी और हिंदी भाषा में होना अनिवार्य है। साथ ही साथ राज्य सरकारों में क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी जाती है। इन सभी दस्तावेजों के अनुवाद के लिए अनुवादक की जरुरत होती है। विधानसभा में इंटरप्रेटर का पद होता है। जिसका काम भाषण दे रहे नेता की बातों को साथ–साथ अनुवाद करना होता है। सरकार द्वारा चल रहें मिडिया हाऊस, दूरदर्शन और आकाशवाणी में अनुवादक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वाणिज्य क्षेत्रों से जुडी सभी नीतियों और नियमों का अनुवाद करते है। विधि क्षेत्र न्यायालयों मे भी अनुवादक की आवश्यकता होती है आदि अनेंक सरकारी विभागों में हिंदी अध्ययताओं कों रोजगार के अवसर प्राप्त है।

विज्ञापन उद्योग :–

आज हम सभी जगह पर वैश्वीकरण के कारण अपनी चीज एवं अपने उत्पादन को सामान्य से सामान्य जन तक पहुंचने हेतू अपने उत्पादन का वस्तु का महत्व समझाने के लिए विज्ञापनों में प्रतियोगिता चल रही है। और हर व्यक्ति को विज्ञापन के द्वारा विभिन्न भाषाओं में तथा हिंदी भाषा में विज्ञापन प्रस्तुत किए जाते है चाहे वह फलक लेखन द्वारा दूरदर्शन, टीवी, रेडियो, समाचार पत्र आदि अनेक माध्यमों से प्रस्तुत होता है। हिंदी अनुवादक के लिए यह रोजगार प्राप्ति के लिए विशाल क्षेत्र है।

समाचार मिडीया :–

आज समाचार मीडिया अनुवाद के बिना अधुरा है। टी.वी, समाचार पत्र, मासिक, पत्रिका, भ्रमरध्वनी, संगणक आदि देश–विदेश की खबरों को अपने लोगों तक पहुँचाने हेतू एक अनुवादक की भुमिका महत्वपूर्ण होती है। मिडिया एवं समाचार पत्रों में पत्रकारिता की उपाधि अनिवार्य होती है। जिसके पास यह उपाधि है उसे रोजगार के द्वारा अपने आप खुल जाते है। संवाददाता के रुप में कई ऐसी न्युज कंपनियाँ है। जहाँ अनुवादक के रूप में रोजगार के अवसर प्राप्त है।

प्रकाशन घर :–

सामान्यत्तर किसी एक भाषा में अपना साहित्य सृजन करता है और उसे किताब को दूसरी भाषा में विभिन्न भाषिक लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रकाशक अनुवादक का सहारा लेकर दूसरी भाषाओं में अनुवाद है यहाँ अनुवाद के रुप में हिंदी अध्ययता को रोजगार प्राप्त होता है। कई ऐसे अंग्रेजी साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ है। आज तक अनेक कहानी, गीत, कविताएँ एवं साहित्य की अन्य विधाओ का अनुवाद हो रहा है। अंग्रेजी

भाषा के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद विश्व की प्रमुख भाषाओं में प्राप्त है।

वैज्ञानिक साहित्य :–

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत सामाजिक एवं भौतिक दोनों प्रकार के विषय आते है। इनमें मनोविज्ञा, व्यवहार विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, पर्यावरण विज्ञापन, भौतिक विज्ञापन आदि विषयों का अनुवाद की दृष्टि में शामिल किया जा सकता है।

व्यापारी जगत :–

व्यापार और व्यवसाय करने हेतु भारत एक बड़ा बाजार है। बाजार की भाषा हिंदी है। इसलिए विदेशी कंपनियाँ अपने वस्तुओं की बिक्री के लिए हिंदी को अपनाए है। वे अपनी सामग्री–चीजों का विज्ञापन हिंदी में ही देते है जिससे आम जनता तक अपनी सामग्री पहुँचाते है। इस पर एक कहावत है। "उपभोक्ता अपनी भाषा में खरीदता है किंतु व्यापारी ग्राहक की भाषा में ही बेच सकता है।"[६] विदेशी कंपनी के व्यवसायिक व्यापारी व्यापार करने हेतू आते है जो उन्हें तथा सभी कंपनी में काम करने वाले लोंगो के लिए हिंदी आवश्यक होती है। हिंदी के कारण रोजगार उपलब्ध होते है।

सिनेमा उद्योग :–

सिनेमा के जगत में आज कल रिमेक्स का बहुत बोल बाला है। कई गीत, कहानियाँ, फिल्में डबिंग के रुप में आ रही है। यह ऐसा रुप है कि कई अंग्रेजी फिल्म हिंदी में अनुवादित कर के दिखायी जाती है। इस सिनेमा के क्षेत्र में संवाद, कहानी, गीत, तथा अन्य कई साधन है। जिसे हिंदी में एवं अन्य भाषाओं में अनुवादित किया जाता है अर्थात फिल्म जगत में भी। हिंदी अध्ययता को रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते है।

निष्कर्ष :–

हिंदी अध्ययता के लिए दुनिया में अनुवादक के रुप में अनंत ऐसे क्षेत्र है जिसमें रोजगार की संभावनाएँ प्राप्त है। केवल उसके लिए उसके पास अनुवाद की दृष्टि से हिंदी के साथ अन्य भाषा की जानकारी होना आवश्यक है। अनुवादक के पास यदि साहित्य स्नातकोत्तर की उपाधि हो तो एक अनुवादक के रुप में उसकी योग्यता में वृद्धि होती है और वह अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। अनुवादक के क्षेत्र में बढ़ते अवसरों के देखते हुए कई विश्वविद्यालयों में एक साल का डिप्लोमा कोर्स उपाधि वर्ग प्रारंभ किया है तथा साहित्य में स्नातक के लिए पाठयक्रम में भी अनुवाद को निर्धारित किया गया है। विश्व में हिंदी अध्ययता के लिए अनुवाद के क्षेत्र में अनंत रोजगार के क्षेत्र उपलब्ध है। हिंदी के बिना विश्व गूँगा है। जय हो हिंदी की, जय हो हिंदुस्थान की।

संदर्भ :–

1. प्रयोग मूलक हिंदी अधूनातन आयाम – डॉ. अंबादास देशमुख, पृ. ३५
2. वही– पृ. ४३
3. अनुवाद का स्वरुप और आयाम – डॉ. त्रिभुवनराय, पृ. ८६
4. संक्षिप्त शब्द सागर – हिंदी शब्द भंडार– नागरी प्रचारिणि सभा, काशी, पृ. ४३
5. नालंदा विश्व शब्द सागर – श्री नवलजी – पृ. ५६
6. साहित्य सौरभ–हिंदी अध्ययन मंडल, सा.कु.पुणे विश्वविद्यालय पुणे।
7. वहीं– पृ.१६५
8. अनुवाद का स्वरुप और आयाम – डॉ. त्रिभुवनराय, पृ. ८७

ई.मेल – panditdd@rediffmail.com, भ्रमरध्वनी– 9503298246

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 22-23
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी भाषा में रोजगार के अवसर

–डॉ. नरेश कुमार सिहाग
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

आज भाषा का विकास न हुआ होता, तो मनुष्य आज इतनी प्रगति नहीं कर पाता। आज भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्रों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। भारत ही नहीं अपितु विश्व में हिन्दी भाषा के बारे में रूचि बढ़ती जा रही है। हिन्दी विश्व की सर्वाधिक व्यवस्थित और संगठित भाषा है। इस भाषा में जो बोला जाता है, ठीक वैसा ही लिखा भी जाता है। हिन्दी भाषा का शब्दकोष विश्व की किसी भी भाषा से कम नहीं है। राजस्थान में मूलतः हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। सम्पूर्ण राजस्थान में हिन्दी भाषा के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान की जाती है। यहॉ तक कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भी हिन्दी भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है। राजस्थान सरकार के ज्यादातर कार्यालयों की भाषा हिन्दी ही है। कार्यालयों के मध्य पत्राचार का माध्यम हिन्दी भाषा ही है। हालांकि सरकार के स्तर जारी आदेशों की भाषा हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी भी होती है।

हिन्दी भाषा के माध्यम वैसे तो सभी प्रकार के रोजगार हासिल किए जा सकते है, कारण कि अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र हिन्दी भाषा में ही होते है। भारतीय प्रशासनिक सेवा भारत देश की सर्वोच्च सेवा है, में भी हिन्दी भाषा का एक अनिवार्य प्रश्न पत्र होता है। राजस्थान में अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी भाषा ज्ञान के प्रश्नोत्तर अवश्य ही किए जाते है, चाहे राजस्थान प्रशासनिक सेवा की परीक्षा हो या फिर कनिष्ठ सहायक की परीक्षा। प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी भाषा के ज्ञान के अभाव में उत्तीर्ण करना कठिन होता है। फिर भी केवल हिन्दी भाषा की ही बात करें तो हम पाते है कि अधिस्नातक हिन्दी विषय से उत्तीर्ण करके राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा या राज्य स्तरीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण करके महाविद्यालय या विश्वविद्यालयों में सहायक आचार्य के पद पर नियुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

अधिस्नातक हिन्दी के साथ शिक्षा स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद विद्यालयी शिक्षा में व्याख्याता के पद व वरिष्ठ अध्यापक के पद पर भी नियुक्ति प्रतियोगिता परीक्षा जो राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जाती है, उत्तीर्ण करके प्राप्त की जा सकती है। कार्यालयों में कनिष्ठ सहायक के पद पर नियुक्ति प्राप्त करने के लिए उत्तीर्ण करने वाली परीक्षा में 50 प्रतिशत अंक भार हिन्दी भाषा का ही होता है। कनिष्ठ सहायक पद पर नियुक्त होकर आगे प्रशासनिक सहायक के पद भी पदोन्नति प्राप्त की जा सकती है। राजस्थान लोक सेवा द्वारा आयोजित होने सब इंस्पेक्टर की परीक्षा में भी हिन्दी भाषा का प्रश्न पत्र होता है, जो कि परीक्षा उत्तीर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिन्दी भाषा ज्ञान के द्वारा बाहरी राज्यों के व्यक्ति भी यहॉ की सरकारी सेवाओं में नियुक्ति प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा ज्ञान के माध्यम से किसी भी प्रकार

व्यापार राजस्थान में आसानी से किया जा सकता है। अर्थात् राजस्थान व्यापार वाणिज्य का अधिकांश काम काज भी हिन्दी भाषा के माध्यम से ही किया जाता है। राजस्थान के लोग हिन्दी भाषा ज्ञान के माध्यम से सिनेमा के क्षेत्र में भी फिल्मों एवं नाटकों के अलावा हिन्दी गानों के अन्दर रोजगार की तलाश कर सकते है। राजस्थान में हिन्दी भाषा के माध्यम से सरकारी एवं निजी दोनों ही क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषा के माध्यम से ही हर प्रकार के रोजगार प्राप्त किए जा सकते है। एक सब्जी बेचने वाला भी अपना रोजगार भाषा के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है, तो भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्य करने वाला व्यक्ति भी भाषा के माध्यम सेवा कर सकता है। बिना भाषा ज्ञान के रोजगार प्राप्त करना कठिन कार्य है। बात चाहे हिन्दी भाषा की हो या फिर किसी अन्य भाषा की। राजस्थान प्रांत में जहॉ विस्तृत धरातल पर हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है, वहॉ पर हिन्दी भाषा के ज्ञान के अभाव में रोजगार प्राप्त करना असंभव सा लगता है। कहने तो पुराने जमाने में कहा जाता था कि 'तीन कोस पर पानी नौ कोस पर भाषा' अर्थात् तीन कोस पर पानी बदल जाता है और नौ कोस की दूरी पर भाषा बदल जाती है। परन्तु वर्तमान में यह कहावत बदल गई है क्योंकि वर्तमान में तकनीकि ज्ञान के माध्यम से भाषा का क्षेत्र विस्तृत हो गया है।

ई–मेल : nksihag202@gmail.com
गुगन निवास, 26, पटेल नगर, भिवानी (हरियाणा)
मो. 9466532152

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 24-28
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

-डॉ. श्रीकांत बी. संगम
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सी.एस.बी. कलाए एस.एम.आर.पी. विज्ञान और
जी.एल.आर. वाणिज्य स्नातक महाविद्यालय, रामदुर्ग–591123

हिंदी भाषा में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। इस समय अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहां हिंदी का अध्ययन करने वाले युवा अपना भविष्य संवार सकते हैं। हिंदी में रोजगार के अवसरों को जानने से पूर्व अगर आप इन त्यों पर दृष्टि डालें तो पूरा परिदृश्य स्पष्ट हो जाएगा। हिंदी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इस समय दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से अधिक है वहीं हिंदी समझ सकने वाले लोगों की संख्या एक अरब से भी ज्यादा है।

वर्तमान परिदृश्य में हिंदी समूचे विश्व के आकर्षण का केंद्र बनती जा रही है। विश्व के लगभग 140 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन–पाठन हो होना एक शुभ संकेत है। आज बाजार में अपना पांव पसारे कई टीवी चैनलों को लगने लगा है कि हमें अगर भारत में लोकप्रियता अर्जित करनी है और पैसा कमाना है तो यह हिंदी के बिना संभव नहीं। डिस्कवरी, नेशनल, ज्योग्राफिकल एवं बच्चों के लोकप्रिय चैनल पोगो को अंततः तथा अपनी प्रसारण का हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत करना ही पड़ा।

आज का युग सूचना क्रांति का युग है। जहाँ ज्ञान–विज्ञान का निरंतर विकास होता जा रहा है। परस्पर संपर्क क्षेत्र भी बढ़ता जा रहा है। अतः ऐसी स्थिति में वह भाषा सर्वप्रिय है और सर्वोपयोगी मानी जा सकती है, जो अंतर्राष्ट्रीय सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, भाषा के प्रायः दो रूप माने जाते हैं, सामान्य अभिव्यक्तिपरक रूप तथा प्रगतिपरक अभिव्यक्ति रूप। जिसमें से प्रगति पर भाषा का सीधा संबंध ज्ञान, विज्ञान, तकनीक के क्षेत्र से रहता है और ज्यों–ज्यों विकास के चरण बढ़ते जाते हैं, इस प्रकार की भाषा की उपयोगिता भी बढ़ती जाती है।

अंततः शिक्षा का प्रथम मूर्त लक्ष्य रोजगार प्राप्त करना है। अतः हिंदी में विज्ञान, प्रबंध एवं तकनीकी विषयों की स्तरीय पुस्तकों का होना आवश्यक है। ताकि हिंदी भाषी वे विद्यार्थी, जो अंग्रेजी नहीं जानते, व्यवसायिक शिक्षा से वंचित न रह जायें। इसके अतिरिक्त प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी भाषा के अध्ययन के प्रति बालकों की रूचि जागृत करने के लिए हिंदी भाषा की श्रेष्ठ पाठ्य पुस्तकों की कमी दूर करना होगा। विषय सामग्री के चयन में निष्पक्षता एवं तटस्थता आवश्यक है। कम से कम पुस्तकों को राजनीतिक दाँव–पेचों से दूर रखना आवश्यक है। पाठ्य पुस्तकें रुचिकर, जिज्ञासा वर्धक, मनोरंजक एवं संपदापरक होनी चाहिए। ताकि बच्चों की पढ़ाई बोझिल ना लगे। पाठ्यपुस्तकें केवल उपदेशों की पिटारी न हो वरन बच्चों में सहज रूप में ही अच्छे संस्कार

डालने में समक्ष हो।

प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिंदी के प्रयोग में गुणात्मक वृद्धि हुई है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब तथा व्हाट्सएप जैसे अनुप्रयोगों में तो अब हिंदी का ही दबदबा है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिंदी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है।

आइए नजर डालते हैं उन तमाम क्षेत्रों पर जिसमें हिंदी पढ़ने वाले छात्र करियर चुनकर अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। साथ ही अपनी राष्ट्रभाषा के संवर्धन का पुण्य भी प्राप्त कर सकते हैं।

हिंदी के मर्मज्ञ करें रचनात्मक लेखन :-

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में जाने वालों के पास दो विकल्प होते हैं। पहला है, स्वतंत्र लेखन (Freelancing) और दूसरा फिल्म, टीवी, रेडियो आदि संस्थानों में काम करते हुए लेखन। हालाँकि दोनों में कोई विशेष अंतर नहीं है। दोनों ही रूप में आप काम एक ही करते हैं। कुछ लोग किसी संस्था के नियमों और शर्तों में बंध कर काम करना कम पसंद करते हैं, उनके स्वतंत्र लेखन बेहतर विकल्प होता है। आप शुरुआत किसी संस्था में जुड़कर कर सकते हैं और अनुभव हो जाने के बाद नौकरी छोड़कर फ्रीलान्सिंग कर सकते हैं। इस माध्यम से आप घर बैठे काम करते हुए पैसे कमा सकते है।

ब्लॉग लेखन भी इन्हीं विकल्पों का एक शानदार उदाहरण है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा के साथ कैरियर का सुनहरा अवसर है। आप अपनी पसंद का कोई विषय चुनकर इसकी शुरुआत कर सकते हैं। और धैर्य के साथ मेहनत करते हुए और साथियों के परस्पर सहयोग से सफलता प्राप्त कर सकते है। अच्छी खबर, हैप्पी हिंदी, साहित्य शिल्पी, आदि ऐसी ही कुछ ब्लॉग हैं जिन्होंने हिंदी ब्लॉगिंग को नया आयाम दिया है।

हिंदी फिल्म का योगदान :-

हिंदी फिल्मों का भी हिंदी भाषा को बढ़ावा देने हेतु महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1940 से लेकर 1980 तक हिंदी भाषा में बहुत अच्छी फिल्मों का निर्माण हुआ। 11 फिल्म पूरे देश भर के बड़े–बड़े शहरों में पांच–छह महीनों तक हाउसफुल रहती थीं। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, परंतु प्रमुख कारण शुद्ध हिंदी भाषा का प्रभाव अधिक समझा जाता है। हमारे देश के लोग अधिकतर हिंदी फिल्में देखकर यादगार संस्मरण के लिए फिल्मों के संवाद बोल कर देखते हैं। साथ–साथ हिंदी भाषा भी बोलने का प्रयास करते हैं।

हिंदी भाषा के जानकार बने अनुवादक, दुभाषिया बनें :-

अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है। दुनिया भर में जैसे–जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है, वैसे–वैसे अनुवादकों और द्विभाषाविदों की मांग बढ़ती जा रही है। अनेक देशी–विदेशी मीडिया संस्थान, राजनैतिक संस्थाएं, पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े–बड़े होटलों में अनुवादकों और दुभाषियों की अच्छी खासी मांग है। युवाओं को चाहिए कि अपने अनुरूप अवसरों को तलाश कर इस क्षेत्र में अपना भविष्य सुरक्षित करें।

खेल जगत :-

खेल जगत में भी हिंदी सर चढ़कर बोल रही है। खेल हमारे राष्ट्रीय सम्मान की वस्तु है, जिसने आज अंतर्राष्ट्रीय रूप ले लिया है। खेलों की जानकारी खेलते समय खिलाड़ियों की स्थिति, उनकी क्षमता, योग्यता, जय–पराजय का आंखों देखा हाल दूरदर्शन पर दिखाया जाता है, और आकाशवाणी पर सुनाया जाता है। यह

अंग्रेजी में तो आता ही है, क्योंकि अभी हम में गुलामी की ठसक बाकी है, पर हिंदी आज इतनी समर्थ एवं सक्षम हो गई है कि उसके माध्यम से आंखों देखा हाल सुनाया जाने लगा है। अब वे ही शब्द बोले जाते हैं जो हिंदी के हैं – बल्ला, बल्लेबाजी, गेंदबाजी।

हिंदी पढ़ने वाले बनाए पत्रकारिता में कैरियर :-

हिंदी का अध्ययन करने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहाँ मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इस समय सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों और सबसे ज्यादा देखे जाने वाले समाचार चैनलों में दो तिहाई से अधिक हिंदी भाषा के ही हैं। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र–पत्रिकाएं हैं जो सुयोग्य युवाओं के स्वागत में तैयार खड़े हैं।

आज देशभर में हिंदी के समाचार पत्र व पत्रिकाएं लाखों की संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं। सत्तर और अस्सी के दशक में हिंदी भाषा में साप्ताहिक हिंदुस्तान व धर्मयुग छपा करती थीं। धर्मयुग मुंबई से प्रकाशित होकर पूरे देश भर में वितरित होती थी, जिसे पाठक पढ़ने के लिए प्रतीक्षा करते थे। इसी तरह और भी पत्रिकाएं थीं जैसे सुषमा, सारिका, माधुरी आदि। एक मासिक पत्रिका और थी– 'मनोहर कहानिया'' इसकी बिक्री आज भी लगातार बढ़ रही है।

इस क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक है कि भाषा पर आप की पकड़ बहुत अच्छी हो. और आप अपनी बातों को सरलता और सहजता से अभिव्यक्त कर सकें जिसमें हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन विशेष लाभप्रद है। पत्रकारिता में आने की इच्छा रखने वाले युवाओं को अपने आसपास घटित होनेवाली घटनाओं के प्रति सजग और संवेदनशील होना भी बहुत जरूरी होता है।

भारत सरकार के भारतीय संस्कृति संबंध योजना :-

पहले भारत सरकार की भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् विभिन्न देशों में तीन साल के लिए हिंदी प्राध्यापक चुनकर भेजती थी, वह अब भी भेज रही है, पर अब अनेक देशों ने खुद भी नियुक्तियां करनी शुरू कर दी है। जापान, कोरिया, सिंगापुर में अब सीधे हिंदी प्राध्यापक भर्ती हो रहे हैं। खाड़ी देशों के अलावा भी यूरोप, अमेरिका में भी हिंदी शिक्षकों की मांग है।

हिंदी के छात्र बनाएं रेडियो जॉकी और समाचार वाचक के रूप में शानदार करियर :-

रेडियो जॉकी ऐसा करियर है जिसमें आपकी आवाज देश दुनिया में सुनी जाती है। ऑल इंडिया रेडियो पर प्रस्तोता अमीन सयानी का वो अंदाज– 'जी हाँ भाइयों और बहनों' हम आज तक नहीं भूले हैं। आज भी रेडियो मिर्ची पर आर. जे. नवेद हमेशा ट्रेडिंग में रहता है। बच्चा–बच्चा इस नाम से परिचित है। यह तो मात्र एक उदाहरण है। ऐसी बहुत सी प्रतिभाएँ हैं जो इस क्षेत्र में नाम और दाम कम आ रही हैं। यदि आप भी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आवाज अच्छी है और आप में श्रोताओं का मनोरंजन करने की क्षमता है, तो यह एक बेहतरीन करियर है।

इसी से मिलता–जुलता काम समाचार वाचक का भी है। इसमें आपको दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। बस आपको अपनी सधी हुई प्रभावशाली आवाज में समाचार पढ़ने होते हैं। और देश विदेश की घटनाओं की जानकारी देनी होती है। इन से संबंधित कोई प्रोफेशनल कोर्स कर लेने

से काम मिलने में आसानी हो जाती है।

हिंदी में ग्लोबल संभावनाएँ :-

ज्यों–ज्यों दुनियां ग्लोबल हो रही है, हिंदी की मांग बढ़ रही है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी का अध्ययन हो रहा है। अनुवाद का काम भी हो रहा है। पिछले दिनों अमेरिकी स्कूलों में भी हिंदी पढ़ने की मांग बढ़ी है।

वैश्वीकरण के कारण विदेशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण :-

वैश्वीकरण के कारण विदेशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ा है। अनेक देशों में हिंदी अनुवादकों और दुभाषियों व शिक्षकों की मांग बढ़ी है। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के विविध स्तरीय पाठ्यक्रम चला रहे हैं। अमेरिकी सरकार (नेशनल सिक्योरिटी लैंग्वेज इनिसियेशन फॉर युथ (NSLI-Y)) कार्यक्रम के अंतर्गत 15 से 18 आयु वर्ग के अमेरिकी नागरिकों के लिए बाह्य संस्कृतियों से संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से विविध स्तरीय विदेशी भाषाएं सीखने हेतु योग्यता पर आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करती है। सत्र 2010.11 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत 7 भाषाएं सम्मिलित की गई। इन 7 भाषाओं में हिंदी भाषा के अध्ययन को भी सम्मिलित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना हिंदी की उत्कट जीवनी–शक्ति का परिचायक है, क्योंकि अपनी इस विकास यात्रा में हिंदी को किसी प्रकार की सरकारी सहायता या प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हुआ है।

सूचना प्रौद्योगिकी :-

इसके अंतर्गत मुख्य रूप से आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र के साथ ईमेल, इंटरनेट तथा वेबसाइट आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। सूचना प्रौद्योगिकी का ऐसा विलक्षण विस्फोट हुआ कि दुनिया में उसका महत्व स्वीकारा गया। भारत के सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान में पूरे विश्व में प्रतिष्ठा अर्जित की। आज बड़े–बड़े देश भारतीय तकनीकी व्यक्तियों को अपने यहाँ आमंत्रित करने में जुटे हैं।

हिंदी के छात्र अध्यापन के क्षेत्र में पाएँ रोजगार के भरपूर अवसर :-

हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक करियर विकल्प के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ उच्च शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक शिक्षण के अवसर योग्यतानुसार उपलब्ध रहते हैं और इसे सदाबहार करियर माना जाता है। हिंदी विषय में परास्नातक करने के उपरांत समय–समय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में सम्मिलित हुआ जा सकता है। इसमें अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले को जूनियर रिसर्च फैलोशिप (जेआरएफ) प्रदान की जाती है। जिसके माध्यम से शोध कार्य (पीएच.डी.) करने वाले छात्रों को प्रतिमाह 30000.00 रुपये छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। वहीं परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति का अवसर मिलता है।

हिंदी भाषा के प्रमुख शिक्षण संस्थान :-

नीचे हम हिंदी भाषा तथा मीडिया, जर्नलिज्म आदि के प्रमुख शिक्षण संस्थानों का नाम दे रहे हैं, जहाँ से आप अपनी पसंद के क्षेत्र में अध्ययन कर, हिंदी में रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

- अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय पंचटीला, वर्धा (महाराष्ट्र)
- माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)
- इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मास कम्युनिकेशन, जेएनयू केंपस (नई दिल्ली)

– बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस (उत्तर प्रदेश)
– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
– दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई (तमिलनाडु)
– आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टनम (आंध्र प्रदेश)
– इग्नू (IGNOU) नई दिल्ली।

रोजगार के अवसर बढ़ाने का संबंध दो प्रकार के प्रक्रिया से जुड़ा है। पहला उपक्रमों का सृजन एवं दूसरा, पहले से स्थापित उपक्रमों का विस्तार। रोजगारोन्मुखी नीतियाँ जैसे : निवेश को प्रोत्साहन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियमन तथा व्यापार एवं श्रम बाजार के लिए अनुकूल तंत्र तैयार करने में ही रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिलेगा। रक्षा एवं एरोस्पेस, शिक्षा एवं स्वास्थ्य, सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा आदि ऐसे नए उभरते हुए क्षेत्र हैं जहाँ रोजगार की संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। भारत में 2022 तक हरित ऊर्जा के क्षेत्र में 10 लाख रोजगार के अवसर उत्पन्न करने का लक्ष्य रखा है।

अंत में कह सकते हैं कि विश्वभर में हिंदी भाषा के लगातार बढ़ते प्रयोग और प्रभाव ने हिंदी में रोजगार की संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं और यह भविष्य में और अधिक रोजगारपरक होगी, ऐसा निश्चित जान पड़ता है। आप अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार अपना क्षेत्र चुनकर अपना भविष्य संवार सकते हैं। हिंदी में रोजगार के अवसर भरपूर है।

वर्तमान में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करना ही भारत का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। विवेकपूर्ण तरीके से बनाई गई नीतियाँ एवं उनका कुशल कार्यान्वयन भारत को विकास के पथ पर अग्रसर कर सकता है एवं उसके नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार ला सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित अतुल राजा एवं कुशल प्रकार प्रकाश के लेख पर आधारित।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति– लक्ष्मणराव।
3. हिंदीजन– कैरियर / हिंदी भाषा
4. भारत दर्शन– वर्तमान परिदृश्य में हिंदी (विविध)– डॉ सचिन कुमार।
5. गवेषणा 2011. हिंदी भाषा : वर्तमान परिदृश्य– सुनीता रानी घोष
6. आउटलुक संपादक : आलोक मेहता, नवंबर 2009 अंक।
7. हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य– प्रो. नरेश मिश्र
8. वर्तमान में साहित्यकारों के समक्ष चुनौतियाँ– सुशील शर्मा
9. वर्तमान परिदृश्य में इंटरनेट का प्रभाव और हिंदी साहित्य– रचना संगम, 2018

मोः 9483216469
Email: sbshindi@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 29-33
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रोजगार की भाषा–हिन्दी

–राठोड राधा आत्माराम

शोध छात्रा, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा, विद्यापीठ, औरंगाबाद।

हिंदी विश्व में चीनी भाषा के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और विदेश में करीब 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या करीब 90 करोड़ है। हिंदी अपने भारत देश की राजभाषा है। हिंदी भाषा आज के दौर मे अत्यधिक लोकप्रिय हो गयी हैं। हिंदी भाषा के क्षेत्र में आज रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त प्रगति हुई है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारों (हिंदी भाषी राज्यों में) के विभिन्न विभागों में, हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। अतः केंद्र/राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक राजभाषा जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। निजी टीवी और रेडियो चैनलों की शुरुवात और स्थापित पत्रिकाओं/समाचार–पत्रों के हिंदी रुपान्तर आने से रोजगार के अवसरों मे कई गुणा वृध्दि हुई है। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादकों, संवाददाताओं, रिपोर्टरों, न्यूजरीडर्स, उप–संपादकों, प्रूफ–रीडरों, रेडियो जॉकी, एंकर्स आदि की बहुत आवश्यकता है। इनमें रोजगार की इच्छा रखने वालो के लिए पत्रकारिता/जन–स ंचार में डिग्री/डिप्लोमा के साथ–साथ हिंदी में अकादमिक योग्यता रखना महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति रेडियो/टिवी/सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट राइटर/डॉयलाग राइटर/गीतकार के रुप में भी काम कर सकता है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक और कलात्मक रुप में सृजनात्मक रुप में सृजनात्मक लेखन आवश्यक होता है। लेकिन किसी व्यक्ति के लेखन के स्टाइल में सृजनात्मक लेखन में डिग्री/डिप्लोमा निश्चित तौर पर निखार ला सकता है। विदेशी छात्र भी हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा मानते हैं।

भूमंडलीकरण के बाद से हिंदी में तेजी से बदलाव देखने को मिला है। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में 100 से भी ज्यादा संस्थानों में हिंदी की विधिवत पढ़ाई होती है। बड़ी संख्या में विदेशी छात्र हिंदी भाषा सीखने के लिए भारत आ रहे हैं। कई तकनीकी रोजगार, हिंदी के जरिए मिलते नजर आ रहे हैं।

हिंदी के भविष्य और बाजार को देखते हुए कहना गलत न होगा कि आने वाला समय हिंदी के प्रोफेशनल्स के लिए और भी रोजगार पुरक होगा। आज स्थिति यह है कि हिंदी भाषा के अच्छे जानकारों की कमी बढती जा रही है। मांग बहुत अधिक है पर पूर्ति हेतु योग्य प्रोफेशनल्स नहीं मिल रहे हैं। यकीन के साथ यह कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में अपको रोजगार के बेशुमार अवसर मिलेंगे।

हिंदी भाषा में उपलब्ध पाठ्यक्रम :–

हिंदी भाषा में स्नातक, स्नातकोत्तर, एम.फिल, पीएचडी आदि की जा सकती है। इसके अलावा डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा पाठयक्रम भी उपलब्ध हैं। इन कोर्सो या अन्य हिंदी भाषा से जुड़े कोर्स जैसे अनुवादक, रचनात्मक लेखन करने के उपरांत रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो जाते हैं। यकीनन हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएं अनंत हैं।

हिंदी में नौकरी के अवसर :–

गौरतलब है कि हिंदी भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त इजाफा हुआ है।

सरकारी विभाग :–

केंद्र सरकारी और हिंदी भाषी राज्यों की सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में कार्य करना अनिवार्य है। अतः केंद्र–राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाषा प्रबंधक, आशुलिपिक, टंकक जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के अधीन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग काम करता है। यहां पर हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को परिभाषित और नए शब्दों का विकास किया जाता है। यहां भी अंग्रेजी की जानकारी के साथ हिंदी भाषा में दक्ष लोगों के लिए रोजगार ढेरों अवसर हैं।

संचार माध्यम :–

गौरतलब है कि निजी टेलीविजन चैनलों और एफ एम रेडियो चैनलों की शुरुआत और स्थापित पत्र–पत्रिकाओं के हिंदी रुपांतर आने से इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में बेहताशा वृध्दि हुई है। हिंदी मीडिया एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में बेतहाशा वृध्दि हुई है। हिंदी मीडिया एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, संवाददाताओं, न्यूज रीडर्स, उप–संपादकों, प्रूफ रीडरों आदि की आवश्यकता है।

रोजगार की इच्छा रखने वालों के लिए पत्रकारिता, जनसंचार में डिग्री या डिप्लोमा के साथ हिंदी में अकादमिक योग्यता रखना आवश्यक है। आज सैकड़ों टेलीविजन, चैनल हैं, जिन पर हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। यहां तक कि एनीमल प्लेनेट, डिस्कवरी चैनल और नेशनल जियोग्राफी जैसे अंग्रेजी चैनल भी हिंदी में कार्यक्रम बनाते हैं। हिंदी का बाजार इतना व्यापक हो गया हैं कि इन विदेशी चैनलों को भी हिंदी भाषा में प्रसारण करने को मजबूर होना पड़ा।

जन संचार माध्यमों में अवसर :–

फिल्मी या गैरफिल्मी सभी कार्यक्रमों में एंकरिंग या कार्यक्रम संचालन संयोजन के लिए हिंदी की अनिवार्यता और उपयोगित हर तरह से सिद्ध हो चुकी है। चाहे नृत्य, संगीत, गायन की प्रतियोगिताओं के रीयलिटी शोज हो या सम्मान पुरस्कार वितरण समारोह–हिंदी की कुशल संप्रेषणीयता के बिना ये सफल हो ही नहीं सकते। इनके लिए हिंदी में अभिव्यक्ति परक प्रशिक्षण की ज़ररुत होगी ताकि रोजगार के नए द्वार खुले।

मीडिया और विज्ञापन :-

स्क्रिप्ट लेखन, एनिमेशन गीत लेखन और कम्प्यूटर का ज्ञान स्व–रोजगार के मोहक अवसर प्रदान करता है। हिंदी में आकर्षक और प्रभावी विज्ञापन तैयार करने के लिए युवाओं की मांग बढ़ी है। प्रसून जोशी जैसे कई लेखकों ने विज्ञापन की दुनिया में एक अलग पहचान कायम की है। विज्ञापन का मनमोहक जगत हिंदी में कुशल और सृजनात्मक संभावनाओं को निमंत्रण देता है और सभी लोकप्रिय कार्यक्रमों में बार–बार दिखाए जाने वाले इन विज्ञापनों में हर कंपनी के करोड़ों का फायदा होता हैं।

वैश्विक संदर्भ में हिंदी :-

वैश्विक संदर्भ में हिंदी अब साहित्यिक अध्ययन और अध्यापन की सीमाओं से बाहर आकर विभिन्न प्रौद्योगिकीय और व्यावसायिक क्षेत्रों मे अपना स्थान बना चुकी है। इन दिनों देश में ही नहीं विदेश में भी व्यावसायिक पाठयक्रमों में हिंदी की व्यावहारिक कार्यपरक कुशलता पर बल दिया जा रहा है। भारतीय व्यावसायिक जगत में अपने व्यक्तियों को कार्यक्षम बनाने की दृष्टि से बिजनेस हिंदी के पाठयक्रम चलाए जा रहे हैं।

किसी संस्था या सरकारी नौकरी के अतिरिक्त अनेक क्षेत्र ऐसे हैं। जिन में हिंदी में कार्य कुशलता वैश्विल स्तर की स्व–रोजगार संभावनाओं के लिए नए दरवाजे खोल देगी। यहॉ तक कि हिंदी के वैश्विल प्रचार–प्रसार और अध्ययन को भी बल मिलेगा और हमारे सभी छात्र हिंदी अपने रोजगार के लिए भी उपयोगी बना सकेंगे।

ऑनलाइन हिंदी :-

शिक्षण के कई निजी पाठयक्रम स्व–रोजगार की दिशा में महत्वपूर्ण वैश्विक प्रयास हो सकते हैं।

संचार–सूचना प्रौद्योगिकी में दिनों–दिन बढ़ रही हिंदी की उपयोगिता और अनिवार्यता अधिक से अधिक कार्य–सक्षम युवाओं को रोजगार दिला सकेगी।

मनोरंजन जगत :-

आप में प्रतिभा है तो आप रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि के लिए स्क्रिप्ट राइटर, डायलॉग राइटर, गीतकार के रुप में भी करियर बना सकते है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक एवं कलात्मक रुप से सृजनात्मक लेखन जरुरी है। अंतरराष्ट्रीय लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद, हिंदी के लेखकों की कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद कार्य भी किया जा सकता है। फिल्मों की स्क्रिप्ट, विज्ञापनों को हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करने का भी कार्य किया जा सकता है। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए द्विभाषी दक्षता होना आवश्यक है। इस क्षेत्र में दक्ष व्यक्ति स्वतंत्र अनुवादक के तौर पर अपनी आजीविका चला सकता है और अनुभव के उपरांत खुद की अनुवाद फर्म को भी स्थापित कर सकता है।

प्रकाशन क्षेत्र :-

हिंदी की पहुंच और बढती लोकप्रियता के चलते प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थानों ने न केवल हिंदी प्रकाशनों की शुरुआत की है अपितु श्रेष्ठ बिक्री लक्ष्य प्राप्त करने वाली पुस्तकों के बड़े पैमाने पर अनूदित रुपांतर

हिंदी में प्रकाशित करना शुरु कर दिए हैं। अतः इन संस्थानों में भी अनुवादक, संपादक और कंपोजन के रुप में करियर के अवसर मौजूद हैं। पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रकाशकों के यहॉ प्रूफ रीडींग, हिंदी टाइपिंग जानने वालो की बहुत मांग है।

अंग्रेजी टाइपिंग करने वाले आपको बहुत मिल जाएंगे लेकिन हिंदी में टाइपिंग भी सिख ली जाए तो प्रकाशकों के यहां जॉब करके अच्छा पैसा कमाया जा सकता है।

विदेशों में अवसर :–

हिंदी भाषा में स्नातकोत्तर और पीएचडी कर चुके उम्मीदवारों के लिए विदेशों में भी रोजगार के अवसर हैं। कुछ देशों द्वारा हिंदी को बिजनेस की भाषा स्वीकार किए जाने के फलस्वरुप विदेशी विश्वविद्यालयों में शिक्षक के तौर पर भी परंपरागत शिक्षण व्यवसाय को अपनाया जा सकता है।

अध्यापन के क्षेत्र में अपना करियर बनाने के बाद टीजीटी अध्यापक/माध्यमिक विद्यालय शिक्षक बना जा सकता है। आज टीजीटी अध्यापकों की मांग पूरे देश में है। उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की मांग भी कम नहीं है। एम.ए हिंदी में 55 प्रतिशत अंक लाने और नेट क्लियर करने के बाद एम फिल, पीएचडी करने से महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाने की योग्यता हासिल हो जाती है। हिंदी प्राध्यापकों की नियुक्तियों गैर हिंदी भाषी प्रदेशों में भी होती है।

विज्ञापन जगत :–

विदेशी कंपनियो भी अब हिंदी में विज्ञापन तैयार करवा रही हैं। यदि आप विज्ञापन के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं तो इस क्षेत्र में नाम और शोहरत की कोई कमी नहीं है। देश में विदेशी चैनलों, विदेशी मीडिया का आगमन हुआ तो लगने लगा कि हिंदी का वजूद घट जाएगा, लेकिन हिंदी की उपयोगिता का ही आलम है कि आज सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल एवं सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला समाचार पत्र हिंदी में ही है।

हिंदी सिनेमा भी लोगों के लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। बीबीसी सहित कई वेबसाइटस अपना हिंदी पोर्टल चला रहे हैं। माइक्रोसॉप्ट ने भी हिंदी के माध्यम से वर्चस्व स्थापित करने के लिए हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टम शुरु किया है। हिन्दी आज इस देश में बहुत बड़े फलक और धरातल पर प्रयुक्त हो रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच संवादों का पुल बनाने में आज इसकी महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आज इसने एक और कम्प्यूटर, टेलेक्स, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक फिल्म और विज्ञापन आदि जनसंचार के माध्यमों को अपनी गिरफत में ले लिया है, तो वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, हवाई जहाज, बीमा उद्योग, बैंक आदि औद्योगिक उपक्रमों, रक्षा, सेना, इन्जीनियरिंग आदि प्रौद्योगिक संस्थानों, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों, आयुर्विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, ए.एम.आई के साथ विभिन्न संस्थाओं में हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण दिलाने कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी अर्ध्द सरकारी कार्यालयों लेटर पैड़, आदेश, राजपत्र, अधिसूचना, नीलाम, अपील, मंजूरी पत्र आदि में प्रयुक्त होकर अपने महत्व को स्वतः सिद्ध कर दिया है। कुल मिलाकर यह कि पर्यटन बाजार, तीर्थस्थल, कचहरी आदि अब की जद में आ गए हैं। हिन्दी के लिये

यह शुभ है।

पर्यटन : चिकित्सा और संस्कृति :-

भारत वैसे भी विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल ताजमहल के कारण पर्यटन का आकर्षण केंद्र बना हुआ है। इतना हीं नहीं हिंदू और बौध्द धर्माविलबी देश अपनी धार्मिक आस्था के कारण भी भारत को पर्यटन का केंद्र मानते हैं। पर्यटन में व्यवस्थित प्रबंधन और द्विभाषी कुशल गाइड और आशु अनुवादक का कार्य हिंदी में रोजगार की अनंत संभावनाएँ जगाता है। इतना ही नहीं मेडिकल टूरिज्म, सांस्कृतिक पर्यटन आदि में हिंदी के ज्ञान का वैश्विक दृष्टि से ब–खूबी इस्तेमाल हो सकता है।

सारांश :-

हिन्दी भाषा लगातार लोकप्रिय होती जा रही है। सोशल मीडिया से लेकर तमाम प्लेटफॉर्म पर हिन्दी का बोलबाला है। इसके साथ ही हिन्दी में रोजगार या करियर बनाने के विकल्पों में भी लगातार इजाफा होता जा रहा है। हिंदी भाषा का आज हर क्षेत्र में प्रयोग किया जा रहा हैं। उदा– प्रिंट मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिन्दी के इस्तेमाल में इजाफा हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : वैश्विक रोजगार की संभावनाएँ – प्रो. वाशिनी शर्मा पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, किताब महल, 22ए, सरोजिनी नाइडू मार्ग, इलाहाबाद, प्रकाशन– 2001.
3. डॉ. भोलानाथ तिवारी, राजभाषा हिन्दी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

मोबा.न .8329218798 / 7875875137

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 34-36
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी में रोजगार का क्षेत्र : दृश्य–श्राव्य माध्यम

–प्रा.डॉ. नेहा अनिल देसाई

सहायक प्राध्यापक, राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, क़दमवाड़ी रोड, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

हिंदी भाषा विश्व स्तर पर विकसित हो रही है। हिंदी पढ़नेवालों की तादात दिनों–दिन बढ़ रही है। समकालीन समाज में जानकारी के साथ जरूरत भी महत्वपूर्ण है। इस कारण हिंदी अध्ययन कर्ताओं को प्रयोजनमूलक हिंदी के साथ जोड़ने का कार्य शिक्षा विभाग ने शुरु किया है। हिंदी भाषा अध्येयताओं में रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों के अवसर की जिज्ञासा उत्पन्न करने का प्रयास है। हिंदी अधिकारी, अध्यापक, दुभाषी, पर्यटन विभाग, समालोचक, पत्रकारिता, एवं अनुवादक आदि रूप में रोजगार के अवसर प्राप्त हो चुके है। इसके साथ–साथ हिंदी अध्ययन करने वाले अध्येयताओं के लिए दृश्य–श्राव्य माध्यम भी खुल गया है।

हिंदी भाषा एवं साहित्य की महानता को और उसकी सुंदरता को आम आदमी के सामने लाने के लिए दृश्य–श्राव्य माध्यम को स्वीकार करना आवश्यक है। साहित्य के साथ बदलते समय और समाज की माँग के दृष्टिकोण की आवश्यकता है। वर्तमान युग की नई पीढ़ी को दृश्य–श्राव्य माध्यम के दिशा–निर्देश की आवश्यकता को अधोरेखित किया जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की कोशिश करना आवश्यक है इसे स्पष्ट करते हुए सुधीश पचौरी का कथन है, "महानुभावों! कोर्स बदलो! सारा बदलो! पाठ–पद्धतियाँ बदलो! परीक्षा पद्धति बदलो! हिन्दी को सामाजिक एवं समकालीन बनाओ! साहित्य को पेट से जोड़ो! प्रयोजनमूलक हिन्दी बनाओ! हिन्दी के बाजार से हिन्दी को जोड़ो! उसे साहित्य पढ़कर रोटी मिलेगी, यह भरोसा उसे न हुआ तो तुम हे महान साहित्यकार! हिन्दी साहित्य का पाठक ढूँढ़ते रह जाओगे। इस नए श्पाठकश को भूमंडलीकरण और बाजार बना रहा है! और तुम उसे श्खत्मश कर रहे हो ! उसे बनने दो ! नया बनने दो ! रास्ता दो उसे !" [1]

स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम में बदलाव आवश्यक है। इक्कीसवीं सदी में तेजी से बदलते समाज में दूरदर्शन का बड़ा योगदान है। सिनेमा जगत के साथ–साथ छोटे पर्दे पर भी अभिनय संपन्न व्यक्तियों की आवश्यकता बढ़ गई है। विभिन्न चैनलों के माध्यम से विभिन्न धारावाहिकों का निर्माण, प्रसारण अधिक बढ़ गया है। राजीव सक्सेना के अनुसार, "हम कहानियों, किस्सों, नाटकों में समाज के दर रोज हो रहे बदलाव का अक्स तलाशते थे। किसी शायर ने कहा है– 'आइना वही रहता है, चेहरे बदल जाते हैं....' लेकिन इस दफा आइना बदला है, अव्वल चेहरे वही हैं। विगत कुछ साल में समाज का आइना साबित हुआ है 'सिनेमा', खासकर 'हिंदी सिनेमा', माध्यम चाहे 'बड़ा पर्दा' रहा हो या छोटा पर्दा।[2] लेकिन हिंदी में रोजगार के अवसरों में चिंता की स्थिति दिखाई देती है। हिंदी भाषी अध्येयताओं के लिए नए तरीके से रोजगार के अवसर तलाशना महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। सरकारी एवं निजी कार्यालयों के साथ–साथ नए व्यवसाय नीतियों की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

जनसंचार माध्यम में दूरदर्शन की धारावाहिकाओं में भी रचनाकार से लेकर अभिनय संपन्न व्यक्ति की

आवश्यकता है। इस कारण हिंदी अध्येयताओं के लिए संवाद लेखन से लेकर अभिनय संपन्नता तक एक सुनहरा अवसर मिल रहा है। बेरोजगार जीवन की समस्याओं से छुटकारा पाने और छात्रों की महत्त्वकांक्षा को प्रोत्साहित करते हुए नया मोड़ देने के लिए मीडिया पाठ्यक्रम को पढ़ाया जा सकता है। कई विश्वविद्यालयों में सिनेमा जगत से संबधित पाठ्यक्रम शुरू किया है जो निम्नलिखित है :–

1. फिल्म एण्ड टेलिविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे
2. जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन।
3. इग्नू द्वारा संचालित फिल्म पाठयक्रम।
4. सेंटर फॉर रिसर्च इन आर्ट फिल्म एण्ड टेलीविजन दिल्ली स्क्रीन प्ले, डायलॉग, लिरिक्स व कॉपी राइटिंग में एक साल का डिप्लोमा व एडवांस पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम।

दूरदर्शन पर सरकारी चौनलों के साथ निजी चैनलों की भरमार हो गयी है। सिनेमा जगत में रोजगार के अवसरों की विभिन्न क्षेत्रों की माँग भी बढ़ रही है। हिंदी अध्येयताओं को परिवर्तन की प्रेरणा और नई दिशा का मौका मिल सकता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में व्यावहारिक संभावनाओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। रोजगार के क्षेत्रों में आए बदलावों को स्वीकार करने की जरूरत को अधोरेखित किया जा सकता है। इस कारण नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा नई दिल्ली का भूतपूर्व विज्ञापन हिंदी अध्येयताओं के जिज्ञासा बढ़ाने के प्रयास में दिया है। जाहिरात : "(नाट्य क्षेत्रामध्ये करिअर करू इच्छिणाऱ्या उमेदवारांसाठी एनएसडीमध्ये प्रवेशाची सुवर्णसंधी.)

नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नवी दिल्ली येथे जुलै २०२० पासून सुरू होणाऱ्या तीन वर्षे कालावधीच्या (२०२०–२१) पूर्ण वेळ निवासी श्डिप्लोमा इन ड्रमिटिक आट्र्स' कोर्ससाठी प्रवेश घेण्यासाठी प्रशिक्षणाचे मुख्य उद्दिष्ट अभिनय, दिग्दर्शन आणि नाट्य क्षेत्राशी निगडित इतर अंगांमध्ये उमेदवाराला तयार करणे. प्रशिक्षणाचे माध्यम हिंदी/ इंग्रजी असेल।

पात्रता :–

(१) पदवी (कोणत्याही शाखेतील) उत्तीर्ण।

(२) किमान ३ वेगवेगळ्या नाट्यनिर्मिती संस्थांशी संबंधित अनुभव. (सर्टिफिकेट ऑफ पार्टिसिपेशन/ब्रोचर/लिफलेट/न्यूज पेपर क्लिप्स इ. पुरावा जोडावा।

(३) अंग्रेजी/हिंदी भाषेचे ज्ञान असणे आवश्यक।

(४) नाट्य क्षेत्रातील नामांकित (Theatre Expert) व्यक्तीचे शिफारस पत्र (Recommendation Letter).

वयोमर्यादा दि. १ जुलै २०२० रोजी १८ ते ३० वर्षे. (अजा/अज– ३५ वर्षेपर्यंत)

एकूण प्रवेश २६ जागा. (अजा–४, अज २. इमाव ७, खुला १३)

निवड पद्धती उमेदवारांना मे जून २०२० मध्ये देशभरातील १२ केंद्रांवर (महाराष्ट्रात मुंबई केंद्र आहे.) होणाऱ्या प्रिलिमिनरी एक्ज़ामिनेशनल बसावे लागेल।"[3]

(जाहिरात : jobkatta-in 7 February 2020)

विज्ञापन निम्न है :–

(नाट्य क्षेत्र में करियर करने की इच्छा रखने वाले उम्मीदवारों के लिए एनएसडी में नैशनल स्कूल ऑफ

ड्रामा, नई दिल्ली में जुलाई 2020 से शुरु होनेवाले तीन वर्षे काल के (2020–21) पूर्णकालिक रेजिडेंट डिप्लोमा में प्रवेश के लिए प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उम्मीदवार को अभिनय, निर्देशन और नाटक के क्षेत्र से सबंधित अन्य क्षेत्रों में तैयार करना है। प्रशिक्षण का माध्यम हिंदी/अंग्रेजी होगा।

पात्रता :–

(1) स्नातक (किसी भी शाखा से) उत्तीर्ण

(2) कम से कम 3 अलग अलग नाटककारों से संबंधित अनुभव (भागीदारी का प्रमाणपत्र पत्र/बाउचर /पत्रक/समाचार पत्र क्लिप्स)

(3) अंग्रेजी/हिंदी भाषा का ज्ञान होना चाहिए।

(4) थियेटर विशेषज्ञ से (Theatre Expert) सिफारिश पत्र। (Recommendation Letter)

आयु मर्यादा :– 1 जुलाई 2020 को 18 से 30 वर्ष। (अजा/अज 35 वर्ष तक)

कुल प्रवेश :– 26 सीटे (अजा– 4, अज–2, इमाव–7, खुला–13)

चयन प्रक्रिया उम्मीदवारों को मई–जून 2020 में आयोजित होने वाली प्रारंभिक परीक्षा में देश भर के 12 केंद्रों (मुंबई महाराष्ट्र का केंद्र है।) पर होने वाले परीक्षाओं में बैठना होगा। प्रस्तुत विज्ञापन से अभिनय में रुचि रखने वाले अध्येयताओं को अपने आप को काबिल बनाने का नया दृष्टिकोण मिल सकता है। दूरदर्शन का दर्शक वर्ग मध्यवर्ग का है। कहना गलत न होगा कि आज भी मध्यवर्ग का गहरा जुड़ाव हिंदी भाषा से है। इस कारण दृश्य–श्राव्य माध्यम के निर्माण कार्य में हिंदी भाषा अध्येयताओं को रोजगार के रूप में अवसर प्राप्त हो सकते है।

निष्कर्ष :–

प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत नई दिशा निर्देश जारी करने के लिए बहुत कुछ सोच–विचार नए सिरे से लेकर किए जा सकते है। हिंदी अध्येयताओं को गुणवत्तापूर्वक योगदान के लिए भाषाओं के साथ नई दिशा–निर्देश से प्रोत्साहन दें तो लाभ होगा। सभी शिक्षा संस्थाओं एवं व्यक्तिगत स्तर पर हिंदी के प्रयोग में रुचि उत्पन्न करने की ओर पहल आवश्यक है। भाषा के अध्ययन में व्यावहारिक पक्ष को दृष्टिकोण में रखकर दृश्य–श्राव्य माध्यम प्रेरणा और सार्थक सिद्ध हो सकता है। इक्कीसवीं सदी में मीडिया एवं बाजारवाद में गतिशील परिवर्तन हुआ है और हिंदी भाषा दोनों क्षेत्रों में माध्यम बन कर कार्य कर रही है।

संदर्भ :–

1. पचौरी सुधीश : साहित्य का उत्तर समाजशास्त्र नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. प्र. संस्करण 2006 पृ. 15 (साहित्य : पेट का सवाल)
2. सं. यादव राजेन्द्र हंस मासिक अप्रैल, 2011 पृ. 68 (बदलते दौर का हिंदी सिनेमा : राजीव सक्सेना)
3. जाहिरात : jobkatta-in 7 February 2020

Mail id: drnehaadesai@gmail.com

Mobile : 9145333549

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 37-40

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रोजगार के अवसर

–प्रा. हसीना अ. मालदार

अध्यक्षा, हिंदी विभाग, डी.आर.माने महाविद्यालय, कागल

वर्तमान युग में हिंदी भाषा केवल साहित्य की भाषा ही नहीं रही है उसके प्रयोजनों में बहुत परिवर्तन हुआ हैं। आज भारत जैसे देश में हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक व्यवहार, कानून, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं सूचना क्षेत्र आदि में हो रहा है। आज हिंदी का प्रयोग केवल साहित्य एवं पढ़ाई के लिए न होकर व्यावहारिक स्तर पर भी हो रहा है। विज्ञान के नियम, प्रयोग विधि, गुणसूत्रों को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य हिंदी में ही दिखाई दे रहा है। साथ ही दूरसंचार, दूरदर्शन, पत्रकारिता, अभियंत्रिकी, संगणक तथा इंटरनेट के लिए भी हिंदी का प्रयोग अधिक मात्रा में हो रहा है। 21वीं सदी में विश्व भर में भूमंडलीकरण, नीजिकरण ने पूरे दुनिया को एक कर दिया है। जिससे पूरा विश्व एक गाँव में बदल गया है। युवा पीढ़ी इसमें रोजगार के नए अवसर ढूंढ रही है। इस वैश्वीकरण तथा भूमंडलीकरण के दौर में रोजगार के अवसर पहले से ज्यादा है लेकिन इसके लिए इन अवसरों को पहचानना आवश्यक है।

हिंदी भाषा का व्यवहारिक उपयोगिता के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयोग हो रहा है। दैनिक व्यवहार, पत्रकारिता, बैंक, कार्यालय, फेसबुक, शिक्षा आदि के साथ आधुनिक संचार माध्यमों में भी हिंदी के रूप को अपनाया जा रहा है। आ. सीताराम चतुर्वेदी कहते हैं, "लेखन मूक भाषण है और भाषण मूक लेखन। आजकल हिंदी का प्रयोग हर जगह होने लगा है। अतः हिंदी का अच्छा लेखन करना ही महत्वपूर्ण नहीं रह गया है तो लेखन के साथ संवाद या संभाषण का भी महत्व बढ़ गया है। प्रयोजनमूलक हिंदी में वार्तालाप को भी समाविष्ट किया गया है। इसमें केवल लिखने के लिए ही नहीं तो बोलने के लिए भी प्रेरित किया गया है। क्योंकि बिना शुद्ध बोले, शुद्ध कैसे लिखेंगे?"[1] अर्थात लिखने एवं बोलने के लिए हिंदी का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया :–

वर्तमान युग का सबसे सशक्त माध्यम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है। भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का तेजी से विकास होता हुआ दिखाई दे रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, विज्ञापन, सिनेमा आदि समाविष्ट होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कुशल मानव संसाधन की बहुत मांग है। इसके लिए हिंदी भाषा का छात्र कुशलता प्राप्त करके रोजगार अवश्य प्राप्त कर सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दर्शकों और श्रोताओं के साथ सरलता के साथ दिल और दिमाग में अपना अलग स्थान बना लिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम के रूप में सामने आ रहा है। उसके साथ ही इसमें हिंदी छात्रों के लिए रोजगार के अनेक अवसर भी दिखाई दे रहा है। आकाशवाणी, टेलीविजन,

इंटरनेट, विज्ञापन आदि में अनेक रोजगार निर्माण होते हुए दिखाई दे रहे हैं। हिंदी के छात्रों के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभिन्न रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है।

आकाशवाणी :–

आज मनोरंजन के विभिन्न साधन उपलब्ध है। फिर भी रेडियो सुनने वालों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। हिंदी भाषा का छात्र अपने आप में अगर अपनी लेखन क्षमता का थोड़ा विकास करता है। तो वह आकाशवाणी के लिए लेखन कर सकता है। शिक्षा, खेल, मनोरंजन, धारावाहिक आदि का लेखन कर सकता है।

रेडियो एक श्राव्य माध्यम है। इससे आपकी आवाज ही आपकी पहचान बनती है। आपकी आवाज के माध्यम से ही आप देश के कोने– कोने तक पहुंच सकते हैं। आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए आप सूत्र संचालक एवं निवेदक के रूप में भी काम कर सकते हैं। हिंदी भाषा का प्रभुत्व रखने वाला निवेदन शैली में निपुण, उच्चारण कौशल्य में निपुण, अभिनय कौशल का ज्ञाता एवं उनके अनुकूल शब्दों के आरोह–अवरोह का ज्ञान रखने वाला छात्र निवेदक के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकता है। इस क्षेत्र में मासिक वेतन पर तथा दिन विशेष पर मेहनताना के रूप में भी आप रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

टेलीविजन :–

टेलीविजन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे लोकप्रिय एवं ताकतवर साधन है। क्योंकि टेलीविजन व्यक्ति की जरूरत बन गया है। टेलीविजन का प्रभाव हर वर्ग में है और विशाल जनसमूह के लिए इसका जादू सा चढ़ा हुआ है। टेलीविजन ने दुनिया की दूरियों को मिटा दिया है।

मनोरंजन की दुनिया में रोजगार की अनंत संभावनाएं है। यदि आप शब्दों से खेल सकते हैं तो हिंदी भाषा के अध्येता को यहाँ आसानी से रोजगार मिल सकता है। यहाँ आपको अपना हुनर क्या है? और तथा आप क्या बनाने की सोच रहे हैं, आप अपनी पसंद से चुन सकते हैं। टेलीविजन पर अनेक धारावाहिक चल रहे हैं और सभी वर्ग के लोग बड़े आनंद से यह धारावाहिक देखते हैं। अगर आपको हिंदी का अच्छा ज्ञान है तो आप ही नए–नए धारावाहिक लिख सकते हैं। अपने कौशल्य से, शब्दों के प्रयोग से एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के जानकारी से इस क्षेत्र में रोजगार की अनेक संभावनाएं निर्माण हो सकती है। मीडिया और टेलीविजन के बढ़ते प्रभाव के बीच आपके पास कई ऐसे मौके है कि आप इसमें रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

सिनेमा :–

आज फिल्म एवं सिनेमा मनोरंजन और शिक्षा का अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है। हिंदी सिनेमा पूरे विश्व में प्रदर्शित होते हैं। भारत जैसे देश में अनेक भाषाओं में फिल्में प्रदर्शित होती है लेकिन लोगों की अधिक रुचि हिंदी फिल्मों में ही दिखाई देती है। हिंदी भाषा के अध्येता को फिल्मी दुनिया में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। लेकिन इसके लिए सिर्फ हिंदी भाषा का ज्ञान ही काफी नहीं है। इसके लिए भाषा के साथ–साथ फिल्म का भी ज्ञान होना आवश्यक है।

हिंदी भाषा का अध्ययन अगर सिनेमा में रोजगार प्राप्त करना चाहता है। तो उसे शब्दों से खेलना आना चाहिए। तभी आपको फिल्मों में काम मिल सकता है। अपनी कल्पनाशीलता, भाषा ज्ञान, भाषा पर प्रभुत्व आदि से सिनेमा में संवाद लेखन, पटकथाकार, गीतकार आदि क्षेत्रों में काम कर सकता है।

पटकथाकार :–

भारत देश बहुभाषी है। इसमें विभिन्न भाषाओं में फिल्में बनाई जाती है। लेकिन हिंदी की फ़िल्में लोगों

के दिलो–दिमाग पर छा जाती है। आज हिंदी में अच्छी पटकथा लेखकों का अभाव दिखाई दे रहा है। इससे हिंदी फिल्मों का दर्जा है वह घटता जा रहा है। हिंदी भाषा का अध्ययन जो अच्छी कहानियाँ लिखने की क्षमता रखता है, वह अच्छी पटकथा को लिख सकता है। लेकिन उसे इस बात की ओर ध्यान देना पड़ेगा कि जो वह लिखता है उसे दृश्याया कैसे जाए? इससे वह एक सफल पटकथाकार बन सकता है। हिंदी भाषा के छात्र फिल्मी दुनिया में पदार्पण करेंगे, तो धन, सम्मान एवं शौहरत उन्हें मिल जाएगी। इसके लिए उन्हें भाषिक सामर्थ्य एवं कल्पनाशीलता की आवश्यकता है।

संवाद लेखन :–

फिल्मों में संवाद बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। संवाद लिखने की अपनी कला होती है। एक संवाद से फिल्में हिट होती है। संवाद हमेशा पात्र, चरित्र एवं परिस्थिति के अनुरूप होने चाहिए। आज जितनी मात्रा में हिंदी फिल्में प्रदर्शित हो रही है, उन्हें देखकर लगता है कि हिंदी के अध्येता को रोजगार अर्जन करने की चिंता करना आवश्यक नहीं है। फिल्म में संवाद लेखन में जितनी सफलता हिंदी उच्चतम शिक्षा पाने वाले को मिल सकती है, उतनी अन्य किसी को मिलना संभव नहीं है। अगर हिंदी भाषा का अध्ययन संवाद लेखन की बारिकी को समझ जाएगा, तो उसे फिल्मी दुनिया में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

गीतकार :–

गीत ही फिल्मों की जान होती है। संगीत एवं धुन के माध्यम से गीतों को प्रस्तुत किया जाता है। गीत लिखने की अपनी एक तकनीक होती है। कविता लिखना और गीत लिखने में अंतर होता है। कविता केवल पाठक पढता है लेकिन गीतों को दर्शाया जाता है। कभी–कभी धुन के अनुसार बोल एवं शब्द बदलने पड़ते हैं। हिंदी साहित्य का अध्ययन करने वाली युवा पीढ़ी गीतों का लेखन करें, तो गीतकार के रूप में स्थापित हो सकते हैं। हिंदी के छात्रों के लिए यह एक मार्ग है रोजगार प्राप्ति का।

इंटरनेट :–

इंटरनेट यह इस शताब्दी का मनुष्यता का दिया गया सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट ने हीं दुनिया को एक गाँव में बदल दिया है। ऐसा कहते हैं कि हर नई तकनीक अपने साथ सुनहरे मौके लेकर आती है। भारत देश तेजी से डिजिटल हो रहा है। इस में रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। भारत देश में इंटरनेट का उपयोग करने वाले की संख्या 48.1 करोड़ से बढ़कर 2022 तक 78.2 करोड होने की उम्मीद है। इसका कारण है इंटरनेट का सस्ता होना है। आज इंटरनेट पर हिंदी भाषा का भी प्रयोग किया जा रहा है। इससे हिंदी भाषा का अध्ययन करने वाले छात्र को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

1) **घोस्ट राइडर :–**

यह व्यक्ति केवल पैसों के लिए टेक्स्ट लिखता है। इसके लेखन का श्रेय किसी और को मिल जाता है। यह खास तौर पर मशहूर हस्तियाँ, खिलाड़ी, अधिकारी आदि के लिए आत्मकथा, लेख, लिखना तथा संपादित करने का काम करता है।

2) **कंटेंट राइटर :–**

भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। भारत जैसे देश में अनेक विदेशी कंपनियां निवेश कर रही है। इसलिए उनकी वेब को हिंदी भाषा में तैयार किया जाता है। विभिन्न वेबसाइट की सामग्री को हिंदी बनाने के लिए हिंदी

की अच्छी जानकारी होने वाले लोगों की आवश्यकता है। इसमें हिंदी भाषा के साथ–साथ संगणक के सामान्य ज्ञान से भी रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

विज्ञापन :–

वर्तमान भूमंडलीकरण के दौर में हर कोई कुछ ना कुछ बेचते हुए नजर आता है। अपनी वस्तु को बेचने के लिए हर संभव प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उत्पादक विज्ञापन की मदद लेता है। विज्ञापन के बिना कोई भी चीज बेचना कठिन है। "विज्ञापन का लक्ष्य मूलतः उपभोक्ता को प्रभावित कर उसकी क्रय शक्ति को बदलना है। व्यापारीकरण के कारण निर्माता अपनी वस्तुओं को स्मरणीय, पठनीय, आकर्षक एवं प्रेरक बनाता है।"[2]

भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बहुत बड़ी बाजार के रूप में देखा जाता है। आज अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ अपने प्रोडक्ट भारत में बेचने के लिए आ रही हैं। इसलिए इन प्रोडक्ट का विज्ञापन हिंदी में करना पड़ता है क्योंकि भले ही भारत बहुभाषी देश है। लेकिन इसमें हिंदी समझने वालों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ रही है। इसलिए विज्ञापन क्षेत्र में हिंदी भाषा के अध्येता को रोजगार के अवसर बढ़ते ही जाएंगे। हिंदी का अध्येता विज्ञापन के क्षेत्र में रोजगार आसानी से प्राप्त कर सकता है। इसके लिए केवल साहित्यिक हिंदी का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। इसके साथ–साथ हिंदी के व्यावहारिक रूप से भी परिचित होना आवश्यक है। विज्ञापन लिखने के लिए भाषा पर प्रभुत्व, संप्रेषणशीलता और शब्दों का सही चयन आवश्यक है। तथा कम से कम शब्दों में प्रभावी रूप से अपना संदेश ग्राहकों के पास कैसे पहुंचे इस बात पर विचार करके विज्ञापन तैयार किए जाते हैं। आज भारत में अनेक कंपनियां अपनी वस्तुएं बेचना चाहती है। इसलिए इन वस्तुओं का विज्ञापन करना अनिवार्य मानते हैं। इसलिए विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी भाषा के अध्येता को रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

निष्कर्ष :–

भारत देश महासत्ता बनने के कगार पर है। इस महासत्ता बनने में हिंदी भाषा के जानकारों को रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हो रहे हैं। हिंदी भाषा के अध्येता को रोजगार प्राप्ति के लिए साहित्यिक हिंदी के साथ साथ व्यवहारिक हिंदी का कौशल आत्मसात करना होगा। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का बढ़ता प्रभाव हिंदी अध्येता को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है। इसके लिए हिंदी भाषा के पारंपरिक शिक्षा के साथ व्यवहारिक शिक्षा को प्राप्त करना होगा। टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, विज्ञापन आदि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में हिंदी भाषा के अध्येता को रोजगार के अनेक अवसर हैं और उनके लिए रोजगार बढ़ने की संभावना दिखाई दे रही है। मीडिया ने पूरे विश्व में हलचल मचा दी है। हिंदी के छात्रों को केवल अपनी काबिलियत पर भरोसा करके अपनी नई पहचान बनाने की कोशिश करनी होगी। इससे इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उन्हें आसानी से रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

संदर्भ :–

1. डॉ राजकुमारी रानी : पत्रकारिता विविध विधाएँ।
2. संपादक गोरखनाथ किर्दत : अनुवाद स्वरूप।

मो. नं. – 9284901919

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 41-44
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर

–प्रा. वाय.पी.पाटील

तुकाराम कृष्णाजी कोलेकर, कला एंव वाणिज्य महाविद्यालय नेसरी।

हिंदी विश्व में चिनी भाषा के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत के संविधान में देवनागरी लिपी में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। हिंदी की गिनती भारत की संविधान की आठवी अनुसुची में शामिल पच्चीस भाषाओं में की जाती है। आज हिंदी भाषा के विविध रुप दिखाई देते है। हिंदी भाषा का प्रयोग बोली भाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा, जनसंचार माध्यम की भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा भूमंडलीकरण के युग में विश्व भाषा के रुप में प्रचलित हो रही है। वैश्विक स्तर पर हिंदी बोलनेवालो की तथा समझने वालो की संख्या बहुत तेजी से बढ रही है। विश्व में आज वही भाषा समृद्ध एंव संपन्न मानी जाती है। जो मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ती के साथ उसे रोजगार प्राप्ति और रोजी–रोटी कमाने के लिए सहायता करती है। हिंदी भाषा भारत के साथ वैश्विक स्तर पर रोजगार प्राप्ति के लिए समृद्ध एंव संपन्न भाषा के रुप में विकसित हुई हैं। हिंदी भाषा के बलबुते पर आज विभिन्न जगहों पर लाखो रोजगारों का सृजन प्रतिवर्ष होता है और हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रचार–प्रसार हो रहा है। भारतीय संविधान में उसे राजभाषा के रुप में स्वीकृत कर विभिन्न रोजगारों का सृजन भी किया है। हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय तथा नौकरी एंव व्यवसाय में भी मिलते है।

प्रशासन व सरकारी कार्यालयों मे राजभाषा हिंदी अधिकारी :–

14 सितम्बंर 1949 को भारत की राजभाषा के रुप में हिंदी भाषा को स्वीकार किया गया है। राजभाषा अधिकारी पद स्वाधीन भारत की आवश्यकता की निर्मिती है। सरकारी कार्यालयो में राजभाषा अधिकारी पद का प्रावधान किया है। केंद्र सरकार की मंत्रालयों अधीनस्थ कार्यालयो, भारतीय रेल, सभी राष्ट्रीयकृत बॅकों में, भारतीय दूरसंचार निगम, महानगर दूरसंचार निगम, भविष्यनिधी, भारतीय आयुर्विमा मंडल, न्यु. इंडिया इंश्योरेंस कंपनी अदि विभिन्न जगहो पर राजभाषा अधिकरी की नियुक्ती होती है।

हिंदी अधिकारी के रूप में नियुक्ति :–

हिंदी अधिकारी पद की नियुक्ति उपर्युक्त सभी विभागों में होती है। जीन युवाओं को सेना में जाने का आकर्षण होता है, वे अपना करियर सेना में हिंदी अधिकारी के रुप में भी बना सकता है।

अनुवादक :–

अनुवाद एक बहुत बड़ा क्षेत्र है। इसकी सीमाओं को हम तय नही कर सकते। भुमंडलीकरण के इस युग में अनुवादको की माँग बढ़ रही है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरपर ऐसी कई प्रकाशन संस्थाए है, जो पुस्तको

के अनुवाद के लिए अनुवादक की मांग करती है। इसमें साहित्य क्षेत्र, जनसंचार क्षेत्र, कृषि क्षेत्र, प्रशासकीय क्षेत्र, वाणिज्य क्षेत्र, क्रीडा क्षेत्र, विज्ञापन क्षेत्र, राष्ट्रीयकृत बॅक तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों का क्षेत्र, धार्मिक तथा संस्कृतिक क्षेत्र में अनुवादक के रुप में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

अध्यापक :–

भारतीय संस्कृति में गुरु यांनि आध्यापक को विशेष स्थान दिया जाता हैं। अध्यापन करना यह एक पवित्र कार्य है। जिन्हें सामाजिक कार्य करने और छात्रों के सर्वांगिण विकास के लिए रुचि रखने वालो को अध्यापक बनकर देश की सेवा करने का शैक्षणिक योग्यता के अनुसार पाठशाला, स्कुल माध्यमिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, आर्मी स्कुल, निजी संस्थाओं में कार्य करने का अवसर मिलता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के अनुसार अज्ञान अंधकार मिटाकर देश के युवको को ज्ञानी बनाना, देशप्रेम जगाना, भारतीय संस्कृति और धरोहर से अवगत कराना अध्यापक का प्रमुख कार्य है।

हिंदी भाषा की सहजता और वैज्ञानिकता के कारण पुरे विश्व में इसका अध्ययन अध्यापन हो रहा है। इसिलिए विदेशो में भी हिंदी अध्यापक के अवसर मिल रहे है।

जनसंचार माध्यम :–

आकाशवाणी, दुरसंचार और सिनेमा आदि क्षेत्र में आज क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे है। विभिन्न निजी कंपनियों ने आपने स्थानिक आकशवाणी चैनल खोल दिये है। दुरदर्शन निजी चैनलौ की संख्या असीमित हो गई है। जिनमें चोबीसो घंटै कार्यक्रम प्रसारित करने की होड़ लगी है। मनोरंजन उद्योग का सालाना टर्न ओहर करोंडो में पहुंच चुका है। टी.आर.पी बढाने व प्रतियोगिता में बने रहने के लिए सभी निजी चैनल नित्य नये कार्यक्रमों के निर्माण प्रसारण, संचालन व अभिनय के क्षेत्र में पटकथा लेखन, संवाद लेखन, स्क्रिप्ट लेखन, आर्टिस्ट, गीत लेखन समाचार लेखन में लगे रोजगार के अवसर उपलब्ध है।

भूमंडलीकरण के युग में संचार माध्यमो का विस्तार बहुत तेजी से बढ रहा है। पत्र–पत्रिका, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म और नाटक आदि से नित्य नयी जानकारी मिलती है। पत्रकारिता एक ऐसी शक्ति बन गई है, जो समाज की कमियों, गलतियों तथा कुरीतियों को उजागर करके उन्हें दूर करने का प्रयास करती हैं। इसी के साथ वह समाज जागृति करती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में युवाओं को समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, न्यूज चैनल, प्रसार भारती, पब्लिकेशन, डिजाईन, फिल्म मेकींग में रोजगार के अवसर मिलते है।

विज्ञापन :–

भारतीय उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए उत्पादन और उपभोक्ता के बीच विज्ञापन महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक उपभोक्तावादी बाजारवादी संस्कृति में यह कड़ी निरतंर मजबूत हो रही है। उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विज्ञापन जनसंचार माध्यमों द्वारा वस्तु एंव सेवा का प्रचार–प्रसार करता है। विज्ञापन विभाग में बहुराष्ट्रीय कंपनियां, समाचार पत्रो, पत्रिकाओं, रेडियो, दुरदर्शन, बाजार अनुसंधान संगठन आदि में कार्य करने का अवसर मिलता है।

इसी प्रकार हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढते अंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ हिंदी भाषा में रोजगार के अवसरों मे जबरदस्त प्रगति हुई है।

डॉक्युमेंटी लेखक/प्रलेख लेखक :–

भाषा पर प्रभुत्व तथा अधिकार रखने वाला और लेखन कार्य में विशेष रुचि रखने वाले व्यक्ति को हिंदी प्रलेख लेखक रुप में नाम और धन कमाने का अवसर मिलता है। प्रलेख को अंग्रजी मे ''डॉक्युमेंट्री' कहा जाता है। वैश्वीकरण के युग में सारा संसार एक दूसरे के समीप आया है। एक दूसरे के आचार–विचार, रहन–सहन, उत्सव–त्यौहार, वेशभूषा, खान–पान, संस्कृति, इतिहास, प्राकृतिक स्थल, ऐतिहासिक घटना आदि के विभिन्न विषयों पर प्रलेख लेखन किया जा सकता है। डाक्युमेंट्री के, द्वारा ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, आयुवैदिक और तकनिकी विषयों की जानकारी विश्व के किसी भी कोने में पहुंचाया जा सकता है। डॉक्युमेंट्री विशिष्ट उद्देश और चैनल और शॉर्ट फिल्म के लिए किया जाता है। डॉक्युमेंट्री लेखन के द्वारा रोजगार प्राप्त कर सकते है।

पटकथाकार :–

वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का प्रभाव दिनों–दिन बढ रहा है। हिंदी भाषा पढने या समझने वालों की संख्या पूरे विश्व में सबसे ज्यादा हैं। इसलिए पटकथाकार या कहानीकार के लिए इस क्षेत्र में एक सुनहरा मौका मिलता है। आज भारत देश में एक साल में हजारों फिल्म्स बनाती हैं और कुछ सुपरहिट भी बनाती है। इसमें कहानीकार अहमं भूमिका निभाता है। दूरदर्शन, निजी चैनेल्स, फिल्म, शॉर्ट फिल्म, साहित्य पत्रिकाओं में पटकथाकार के रुप में रोजगार का अवसर मिलता है।

निवेदक :–

निवेदन करना यह एक कला है। भूंमडलीकरण के इस युग में और जनसंचार माध्यमों के बढते प्रभाव के कारण निवेदको की मांग बढ रही है। रेडियो, दूरदर्शन और हजारों न्यूज चैनल्स के साथ छोटे–बड़े समारोह में निवेदक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निवेदक अप्रत्यक्ष रुप से समारोह का संचालन करता है। रेडियों, फिल्म, दूरदर्शन और हजारों निजी चैनल्स में निवेदक की आवश्यकता होती है। कॉलेज, विश्वविद्यालयों के साथ सामाजिक, राजनितिक, सांस्कृतिक तथा विभिन्न स्तरों के कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इन सभी कार्यक्रम की सफलता निवेदक के उपर निर्भर होती है। भारत तथा वैश्विक स्तर पर हिंदी का जो प्रचार–प्रसार हो रहा है। जो व्यक्ति हिंदी भाषा पर अपना प्रभाव रखता है तथा प्रासंगिकता की सुझ–बुझ रखता है। उस व्यक्ति को एक निवेदक के रुप में रोजगार का अवसर मिल सकता है।

उद्घोषक :–

जनसंचार माध्यमो में सबसे प्रभावी माध्यम रेडियो माना जाता है। रेडियो सुनने वालो की तादात अन्य जनसंचार माध्यम से ज्यादा है। रेडियो पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होते है। समाचार, नाटक, वार्ता, संगीत, गाने, भजन, भाषण, विभिन्न राज्यों की आरम्भिंक और अंत की सुचना देने के कार्य उद्घोषक उद्घोषणा से करता है। रेडियो तथा एफ.एम.चैनल के सभी कार्यक्रम और दूरदर्शन के कुछ हद तक कार्यक्रम उद्घोषक की उद्घोषणा के सहारे चलते है। रेडियो, एफ.एम रेडियो तथा एफ. एम. चैनल सभी कार्यक्रम उद्घोष की उद्घोषणा के सहारे चलते है। रेडियो, एफ.एम. रेडिओ, इवेंट ऑर्गनाइजेशन कंम्पनियो में निजी चैनल और दूरदर्शन आदि में रोजगार का अवसर मिलता है।

गीतकार :–

मनुष्य मनोरंजन प्रिय प्राणी है। अपने सुख–दुख, उत्साह, उमंग, वेदना दर्द, उत्सव–पर्व, त्योहार आदि को लोकगीत, ऋतुगीत, प्रतगीत, बधाइयॉ गीत, श्रमगीत, प्रेमगीत, विरहगीत, शादी में गाये जाने वाले गीत के द्वारा अपनी वाणी को अभिव्यक्ति देता है। गीतकार या कवि ने लोकगीत, देशभक्ति, प्रेमगीत, प्रकृति, आदि को आधार बनाकर, आंनद बक्षी जावेद आख्तर, हसरत जैनपुरी, आदी गीतकारों ने दिल की धड़कनो में उत्साह, उंमग, प्रेरणा डालने का कार्य किया है तथा भारतीय सिनेमा के द्वारा जनजीवन के सुख–दुखों को अभिव्यक्त किया फिल्म, दूरदर्शन, निजी चैनेलो मे चल रही हजारो धारावाहिक सीरियल, नाटको में आज युवावर्ग के लिए गीतकार के रुप में रोजगार के अवसर मिल सकता है।

पर्यटक मार्गदर्शक :–

भारत बहुभाषी, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश है। यहॉ धार्मिक, सांस्कृतिक ऐतिहासिक, भौगोलिक, प्राकृतिक, सागरतटीय तथा पर्वतीय स्थलो की कमी नहीं है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक विभिन्न स्थलो को देखने के लिए तथा भारतीय संस्कृतिक की विशेषत को देखने के लिए लाखो पर्यटक आते है। इन पर्यटको में विभिन्न स्थलों की जानकारी, महत्व और विशेषता बताने का काम पर्यटक मार्गदर्शक करता है। भारत सरकार के साथ ही विभिन्न राज्यों में अपने–अपने राज्य का पर्यटन विभाग स्वतंत्र रुप से कार्य करता है। पर्यटन विषयक संस्थाओ में पर्यटक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। जो आने वाले पर्यटकों को उस स्थल की जानकारी, महत्व, विशेषताओ को बता सके। ऐसे जगहो पर पर्यटक मार्गदर्शक के रुप में रोजगार के अवसर मिलते है।

क्रीड़ा समालोचक :–

आजकल प्रो–कबड्डी से लेकर ओलम्पिक खेल तक सभी खेलो में रुचि रखनेवाले अलग–अलग लोक हैं। खेल कही भी खेला जा रहा हो उसका सीधा प्रसारण हम घर में बैठकर देख और सुन सकते हैं। खेल हमारा उत्साह बढाना है। उसी के साथ दिलचस्प समालोचक से चार चॉद लग जाते है। विश्व में क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बेसबॉल, प्रो–कबड्डी आदि कई खेल सुप्रसिद्ध है और उसे लाखों की तादाद में देखा जा सकता है। समालोचक की सटीक कॉमेंट्री हो तो वह खेल देखने में मजा आता है। आज दूरदर्शन निजी खेल चैनल्स, खेल की संस्थाएं आदि में क्रीड़ा समालोचक के रुप में रोजगार का अवसर मिलता है।

संवाद लेखन :–

साहित्य क्षेत्र विस्तृत एवं बड़ा है। साहित्य की विभिन्न विधाएं हैं जैसे कि उपन्यास, कहानी, नाटक में संवाद अहम भूमिका निभाते है। दैनिक जीवन में सफल एंव चतुर व्यक्ति, दुसरो को प्रभावित करने की क्षमता संवाद लेखन में रखता है। इसलिए फिल्म, दुरदर्शन और निजी चैनल्स में प्रसारित धारावाहिक में शार्ट फिल्म में संवाद लेखन के रुप में रोजगार का अवसर मिलता है। इसी प्रकार हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढते अंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ हिंदी भाषा में रोजगार के अवसरों मे जबरदस्त प्रगति हुई है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची :–

1. प्रयोजन हिंदी आधुनातन आयाम– डॉ अम्बादास देशमुख : शैलेजा प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
2. मीडीया कालीन हिंदी स्वरुप एंव संभावनाएँ – डॉ. अर्जुन चव्हाण : राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
3. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर – प्रा विकास पाटील : ए.बी.एस. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2019

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 45-47
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर

–गातवे युवराज शामराव
सहायक प्राध्यापक, कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म. सोनवणे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय सटाणा, ता. सटाणा जि. नासिक

प्रस्तावना :–

हिंदी भाषा का क्षेत्र बडा विस्तृत एवं व्यापक है क्योंकि भारत के कुल आबादी के ४० प्रतिशत लोग हिंदी बोलते समझते है। आज वर्तमान समय में बढ़ती आबादी के चलते रोजगार यह एक गंभीर समस्या बनी हुई है। ऐसे में भी हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार के कई अवसर प्राप्त हो सकते है। हिंदी और अंग्रेजी केंद्र सरकार की अधिकारिक भाषा है। इसलिए कार्यालयों में हिंदी एवं अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है। अधिनियम १९६७ के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को कार्यालयीन कामकाज संपादित करने के लिए अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है इसका सीधा अर्थ यह भी है कि हिंदी अधिकारी, प्रबंधक, उपप्रबंधक, अनुवादक आदि के रुप में नौकरी की असीम संभावनाएँ है।

हिंदी भाषा के अध्येताओं के लिए सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार के कई अवसर प्राप्त हो सकते है। जिसकी जानकारी निम्नानुसार :–

शिक्षक :–

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। हिंदी अध्येताओं कें लिए हिंदी विषय मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक बन सकते है। शिक्षक समाज निर्माण मे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। शिक्षक पढ़ाने के साथ–साथ सामाजिक, नैतिक मूल्य संवर्धन का भी कार्य करते है। हिंदी विषय शिक्षक पद पर नोकरी करने के लिए प्रथम श्रेणी में स्नातक उपाधि प्राप्त कर बी.एड करना होता है। तथा महाविद्यालय में अध्यापक बनने के घलिए विद्या निष्णात उपाधि जरुरी होती है उसके बाद नेट, सेट अथवा पी.एच.डी उपाधी प्राप्त करने पर अध्यापक की नौकरी प्राप्त की जा सकती है।

राष्ट्रीयकृत एवं निजी बैंको में प्रबंधक :–

बैंकों के अंतर्गत होने वाले कार्यालयीन कामकाज के लिए अंगेजी के साथ–साथ हिंदी का प्रयोग करना अनिवार्य है। अतः हिंदी अध्येताओं के लिए बैकों में जो अलग–अलग पद होते है वहां नौकरी मिलने की संभावनाएँ होती है। हिंदी अध्येता को स्नातक उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् परीक्षा तथा साक्षात्कार द्वारा प्रबंधक, उपप्रबंधक, कैशियर आदि पदों पर नौकरी करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

हिंदी अधिकारी :-

राजभाषा का प्रचार–प्रसार तथा राजभाषा के रुप में हिंदी मे कामकाज बढ़ाने के लिए लगभग हर विभाग में हिंदी अधिकारी की नियुक्ति की जाती है। हिंदी अधिकारी हिंदी मे होनेवाले कामकाज की देखरेख करते है। वे अनुवाद का काम करते है। अनुवाद कार्य के लिए उन्हे अंग्रेजी का भी ज्ञान होना आवश्यक रहता है। अनुवाद कार्य बडा जटिल कार्य होता है। सटिक एवं सार्थक शब्दप्रयोग करना अनिवार्य होता है। हिंदी अधिकारी जानकारी को दूसरे विभागों से इकट्ठी करके हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का प्रयास करते है। अपने विभाग में हिंदी न जाननेवाले कर्मचारियों को हिंदी पढ़ाते है साथ ही प्रशिक्षण, सेमिनार, संगोष्ठी आदि में स्वयं सहभागी होने के साथ–साथ कर्मचारियों कों भी प्रेरित करते है।

हिंदी अधिकारी को लोंगो से मिलना–जुलना पड़ता है। इस पद के लिए हिंदी मे स्नातकोत्तर उपाधि होनी चाहिए डॉक्टरेट की डिग्री हो तो बेहतर रहता है। हिंदी मे लेखन क्षमता अच्छी होने के साथ वह हिंदी का अच्छा वक्ता होना चाहिए। यदी हिंदी, अंग्रजी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान हो तो लाभ मिल सकता है। जैसे महाराष्ट्र जैसे राज्य में अगर वह नौकरी करता है तो मराठी भाषा का ज्ञान उसे लाभ दिला सकता है। हिंदी भाषा अधिकारी पदौन्नती पाकर जनसंपर्क अधिकारी आदि का भी काम संभाल सकता है।

पत्रकारिता :-

वर्तमान जगत में पत्रकारिता के क्षेत्र में ऐसे अनेक पत्र–पत्रिकाएँ है जिनका प्रकाशन हिंदी भाषा में होता है। ऐसे में प्रकाशक, पत्रकार, संपादक आदि पदों के लिए नौकरी के अवसर प्राप्त हो सकते है। कई ऐसी सरकारी पत्र–पत्रिकाएँ है जिनका प्रकाशन हिंदी भाषा में होता है। सामान्यतः पत्रकारिता के क्षेत्र में नौकरी प्राप्त करने के लिए स्नातक अथवा स्नातकोत्तर पदवी आवश्यक होती है। हिंदी में वृत्तपत्र एवं पत्र–पत्रिकाओं के क्षेत्र में कार्य करने के लिए हिंदी का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है।

अनुवादक :-

आज साहित्य अथवा पत्रकारिता के क्षेत्र अनुवाद ऐसा कार्य है जिससे एक भाषा में प्रसारित ज्ञान दूसरे भाषा में अनुवादित कर प्रकाशित किया जाता है। विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। भारत में भी कई भाषाएँ बोली जाती है किंतू संविधानिक तौर पर २२ भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। सरकारी कार्यालयों में राजकाज के लिए अंग्रेजी तथा हिंदी भाषा का प्रयोग करना अनिवार्य है। इसलिए सरकारी कार्यालय हो अथवा सरकारी पत्र–पत्रिकाएँ अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुवाद एक ऐसा कार्य है जिसमें एक भाषा में व्यक्त विचार या साहित्य को दूसरी भाषा में जैसे के तैसे अनुवादित करना होता है इसके लिए अनुवादक को उन दो भाषाओं का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है जिसका अनुवाद वह करनेवाला है अनुवादक पद पर नोकरी प्राप्त करने के घलिए घजिस भाषा का अनुवाद करना है और जिस भाषा में करना है उन दोनो भाषाओं में स्नातक स्तर की योग्यता और अनुभव होना जरुरी होता है। हिंदी के साथ–साथ विदेशी भाषाओं का ज्ञान हो तो अधिक सफलता दिला सकता है।

पोस्टमास्टर :-

पोस्ट ऑफिस मे अनेक गतिविधियाँ ऐसी होती है जिनकों करने के लिए पोस्टमास्टर को हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि सरकारी पत्राचार, मनीऑर्डर वितरण, प्राप्तियों का

लेखा–जोखा आदि कार्य हिंदी, अंग्रेजी भाषा में किए जाते है। अतः पोस्टमास्टर को हिंदी भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है।

हिंदी भाषा अध्येताओं के लिए केन्द्रिय मंत्रालय विभाग तथा अधिनस्थ कार्यालय और राज्य सरकारी कार्यालय आदि क्षेत्रों में नोकरी के कई अवसर प्राप्त हो सकते है।

संदर्भ सूची :-

१) हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर – हिंदीकुंज.कॉम

२) विकलांगो के लिए रोजगार – विनोद कुमार मिश्र

३) दैनिक भास्कर – लक्ष्य पत्रिका– नवम्बर–२००६

४) अनुवाद अवधारणा और आयाम – डॉ.सुरेश सिंघल

५) शब्द ब्रम्ह– अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका – १७ दिसम्बर २०१२

Email : urajgatwe86@gmail.com

Mob No: & 9823738387

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 48-51
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राष्ट्रभाषा हिंदी में रोजगार के अवसर

–सौ. रोहिणी गुरूलिंग खंदारे
(M.A.,B.Ed., M.Phil., SET)
सहायक अध्यापिका, न्यू होरायझन स्कूल, औरनाळ, तह.गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिंदी हमारे भारत माता की बिंदी है। जिस प्रकार नारी कितने भी गहने डाले या किमती साड़ी पहने लेकिन बिंदी के बिना उसका सौंदर्य नहीं खुलता। उसी प्रकार हमारे भारत माता का भी सौंदर्य हिंदी के बिना अधूरा है। खुद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि, ''राष्ट्रभाषा हिंदी के बिना देश गूँगा है।'' इसलिए हिंदी केवल राजभाषा तक सीमित नहीं हैं बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बना रही है। इसी कारण हिंदी भाषा में अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे है। अनेक विद्वानों ने अपने देश में हिंदी का प्रचार प्रसार किया है। यूरोपीय हिंदी विद्यान रेवरेण्ड फादर डॉ. कामिल बुल्के गोस्वामी तुलसीदास की हिंदी से प्रभावित हुए थे। सन 1935 में अपना देश बेल्जियम छोड़कर भारतीय नागरिक बने। वे कहते है– ''अंग्रेजी यहां दासी या अतिथी के रुप में ही रह सकती है, बहुरानी के रुप में नहीं। संस्कृत मॉ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।''[1] आज अंग्रेजी का बोलबाला हो तो भी हिंदी भाषा में जो माधुर्यता है वह उस भाषा में नही है। हिंदी भाषा की माधुर्यता के कारण ही हर एक क्षेत्र में इस भाषा का प्रयोग हो रहा है और रोजगार के अवसर भी दिन–ब–दिन बढते ही जा रहे है। अध्यापन, हिंदी अधिकारी, हिंदी योग अध्यापक, अनुवाद, फिल्म, पर्यटन, मीडिया, विज्ञापन, क्रिकेट कमेंटरी आदि क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध है।

अध्यापन :–

अगर हिंदी भाषा विषय के माध्यम से अध्ययन किया है तो हम इस विषय में अध्यापन का कार्य कर सकते है। जैसे–

1. 12 वी डी.एड. – पहली कक्षा से चौथी कक्षा के बच्चों को अध्यापन।
2. बी.ए., डी.एड. – पॉचवी कक्षा से सातवी कक्षा के बच्चों को अध्यापन।
3. एम.ए., बी.एड.– ग्यारहवी और बारहवी कक्षा के बच्चों को अध्यापन।
4. एम.ए., नेट, सेट, पी.एच.डी. – विश्वविदयालय के बच्चों को अध्यापन।

सी.बी.एस.ई. स्कूल के बच्चों का अंग्रेजी विषय अच्छा होता है लेकिन हिंदी विषय में वे बच्चे कमजोर होते है। वर्तनीयों की गलतीयॉ ज्यादा होती है। ऐसे बच्चे हिंदी का टयूशन लगाते है। इसलिए हम हिंदी विषय के टयूशन लेकर रोजगार प्राप्त कर सकते है।

अमेरिका में लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढाई जाती है। ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रांत की

सरकार ने देश के केंद्र सरकार से हिंदी को राष्ट्रीय पाठयक्रम में शामिल करने की गुजारिश की है। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी की लोकप्रियता बढने के कारण विदेशी छात्रों को हिंदी सिखाने के अवसर भी है।

हिंदी योग अध्यापक :–

आज करोना के महामारी के कारण लोग अपने सेहत की तरफ अधिक से अधिक ध्यान दे रहे है। इस महामारी में डॉक्टर भी कोरोना से लड़ने के लिए योगा और प्राणायाम सिखने का सलाह दे रहे है। इसलिए योगा का प्रचार और प्रसार दिन–ब–दिन बढता ही जा रहा है। पूरे विश्व में ही योगा का महत्त्व बढ रहा है। भारत के साथ विदेश में भी आज हिंदी योगा अध्यापक की जरुरत है। हम योग अध्यापक का कोर्स करके योगा के क्लासेस ले सकते है। योगा क्लास में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, शरीररचना आदि विषयों पर व्याख्यान देना पडता है। साथ ही साथ मराठी योग किताबों का अनुवाद हिंदी में हो रहा है तो वहॉ हम अनुवादक के रुप में भी रोजगार प्राप्त कर सकते है।

विज्ञापन :–

आज का युग विज्ञापन का युग है। अखबार, आकाशवाणी, दूरदर्शन पर हजारों विज्ञापन दिखाई और सुनाई देते है। विज्ञापन हमारे जीवन का हिस्सा बनकर रह गया है। उदयोजक अपने उत्पादन का प्रचार और प्रसार करने के लिए विज्ञापन के द्वारा ग्राहकों को अपने उत्पादन की ओर आकर्षित कर लेते है।

विज्ञापन में आकर्षकता, सहज बोली भाषा, सुलभ शब्द रचना, भाषा में नाद माधुर्य आदि बातों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन सभी बातों से युक्त हमारी हिंदी भाषा है। इसलिए हिंदी भाषा के विज्ञापन बहुत ही आकर्षित होते है। यहॉ हिंदी के छात्र रोजगार प्राप्त कर सकते है। बडे–बडे कंपनियों में विज्ञापन तैयार करने वाले तज्ञों का एक स्वतंत्र विभाग होता है। इस विभाग में 'मुख्य मसुदा लेखक' यह एक खास पद होता है। ऐसे तज्ञ व्यक्तियों को कंपनीयों में अच्छी तनख्वा मिलती है। इसलिए विज्ञापन के क्षेत्र में आज रोजगार की बडी संधियॉ उपलब्ध है।

अनुवादक :–

अनुवाद के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना बहुत जरुरी है इसलिए अनुवादक को दुभाषिया भी कहा जाता है। इंटरनेट के जरिए हम अनुवाद का काम कर सकते है। विश्वभर में सिस्ट्रॉन, एसडीएल इंटरनैशनल, डेटॉयर ट्रांसलेशन ब्यूरो, प्रोज आदि असीमित संख्या में भाषाओं की कंपनियॉ है। वे बहुभाषी सेवाएँ उपलब्ध कराते है और इनमें से एक भाषा हिंदी भी है। स्वतंत्र अनुवादक के रुप में भी हम कार्य कर सकते है। सरकारी तथा निजी संस्थान में आज अनुवादकों की आवश्यकता है। कर्मचारी चयन आयोग हर साल हिंदी अनुवादकों की भर्ती करता है। संसद में हिंदी अनुवादक के बिना कार्य संचालन असंभव है। इसलिए इस कार्य को संपन्न करने के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक है। डिस्कवरी नॅशनल जिओग्राफी, कार्टून तथा खेल जगत से जुडे अंग्रेजी प्रसारण अब हिंदी में अनुवादित किया जा रहा है। विदेशी किताबों के हिंदी अनुवाद के लिए पब्लिसिंग हाऊस में अनुवादक नियुक्त किए जाते है।

हिंदी अधिकारी :–

प्रशासकीय तथा कार्यालयी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग बढता हुआ दिखाई दे रहा है। सरकारी, अर्ध सरकारी, गैर सरकारी कार्यालयों में प्रशासकीय कामकाज हिंदी में किया जाता है। इसलिए डॉ. अम्बादास देशमुख जी

लिखते है कि, ''आज हिंदी ही एकमात्र कार्यालयीन और प्रयोजन मूलक भाषा की क्षमता से परिपूर्ण है।''[2] भारत सरकार और निजी संस्थान में हिंदी अधिकारी के रुप में रोजगार प्राप्त कर सकते है। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि, सभी संस्थानों में हिन्दी अधिकारी को रखना पडेगा। विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते है। देश विदेश में सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार के रुप में भी काम करने का अवसर मिल सकता है। यदि हमारा मुख्य विषय हिंदी है और अंग्रेजी का भी ज्ञान है तो हम हिंदी अधिकारी की नौकरी प्राप्त कर सकते है।

मीडिया :–

अगर हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ हो तो हिंदी छात्र पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर कर सकते है। बी.ए. तथा एम.ए.के बाद पत्रकारिता का डिप्लोमा कोर्स होता है। इस कोर्स को हासिल करने के बाद किसी भी पत्र–पत्रिका में रिपोर्टर या उपसंपादक के रुप में भी रोजगार प्राप्त कर सकते है। जिनकी हिंदी और अंग्रेजी भाषा अच्छी है वे विदेश में भी हिंदी पत्रकारिता के रुप में कार्य कर सकते है। मीडिया के क्षेत्र में संपादक, संवाददाता, रिपोर्टर, न्यूज रीडर्स, उपसंपादक, प्रूफ रीडर, रेडिओ जॉकी, एकर्स आदि के रुप में हम रोजगार प्राप्त कर सकते है।

फिल्म :–

फिल्म तथा दूरदर्शन सीरियल में भी रोजगार के अवसर बहुत है। जैसे– अभिनेता उपअभिनेता, खलनायक, स्क्रिप्ट राइटर, गायक, संगीतकार, गीतकार, संपादक, पटकथा आदि के रुप कार्य कर सकते है। आज अन्य भाषाओं से भी ज्यादा हिंदी फिल्म देखनेवालों की संख्या दिन–ब–दिन बढती ही जा रही है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में हिंदी फिल्मों का ही बोलबोला है। हिंदी भाषा में इतनी ताकत है कि हिंदी फिल्मी डॉयलॉग का असर बच्चों से लेकर बूढों तक होता है।

हिंदी समाचार का प्रसारण भी टी.वी. चैनल पर होता है। तब वहां एंकर, पत्रकार, संवाददाता आदि के रुप में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

पर्यटन :–

पर्यटन के क्षेत्र में भी हिंदी छात्रों को रोजगार के अवसर है। कल्चरल टूरिजम मैनेजमेंट का डिप्लोमा कोर्स करके हम पर्यटन के क्षेत्र में नौकरी प्राप्त कर सकते है। पर्यटन स्थल की खासियत तथा वहां की विशेषता बताने के लिए गाइड की जरुरत होती है। हिंदी भाषा विश्व के सभी लोग जानते है। इसलिए हिंदी के सहारे लोगों को पर्यटन स्थल की जानकारी देना आसान हो जाता है।

भाषण लेखन :–

आज नेता लोग समाज के सामने खुद को अच्छा साबित करने के लिए भाषण देते है। हिंदी भाषा के माधुर्य भाव की छाप जनता पर अच्छी पडती है। हिंदी छात्र नेताओं के लिए भाषण लिखकर दे सकते है। चुनाव के वक्त घोषवाक्य भी तैयार कर सकते है। जनसंपर्क कंपनीयॉ तो भाषण लिखकर देनेवालों की तलाश में रहते है।

लेखक/कवि :–

अगर हिंदी लेख लिखने में माहिर है तो हम लेखक तथा कवि के रुप में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की विविध समस्याएं तथा हालात को ध्यान में लेकर हम लेखन तथा साहित्य के विविध विधाओं का लेखन कर सकते है। शुरुआत में छोटी–छोटी कविताएं, लघुकथाएं लिखकर उन्हें समाचार पत्रों तथा साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कर सकते है। बाद में हम उसमें माहिर होने के बाद साहित्य के विविध विधाओं का लेखन करके रोजगार प्राप्त कर सकते है। सेमिनार, वेबिनार तथा संगोष्टियां में विशेष मार्गदर्शक के रुप में मार्गदर्शन कर सकते है।

क्रिकेट कमेंटरी :–

विश्व के सभी लोगों का प्रिय खेल याने क्रिकेट। अगर हिंदी भाषा पर अच्छा प्रभुत्व हो तो हम क्रिकेट कमेंटरी का कार्य कर सकते है। जब क्रिकेट खेला जाता है तब आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर खेल का लेखा–जोखा वर्णन किया जाता है। अगर हिंदी में खेल का वर्णन किया तो उसका अच्छा प्रभाव खिलाड़ियों के साथ–साथ जनता पर होता है। याने हम हिंदी भाषा में अच्छा क्रिकेट कमेटरी कर सकते है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रुप में हम यह कह सकते है कि भूमंडलकरण के कारण आज हिंदी का महत्व बढ़ रहा है। जिसके कारण व्यापारी कंपनियां चाहे देशी हो अथवा विदेशी अपना माल बेचने के लिए हिंदी को ही प्रथम स्थान दे रहे है। व्यापारिक संस्थानों में हिंदी जानकारी रखने वालों की आवश्यकता तो रहेगी ही। विश्व बाजार ने तो हिंदी की ताकत को पहचाना है। विश्व को उपभोक्ता बाजार मानने वाली विदेशी कंपनियों ने विज्ञान एवं सूचना के क्षेत्र में हिंदी को ही महत्व दिया है। इसलिए हम सरकारी संस्थाओं से लेकर निजी संस्थाओं में रोजगार प्राप्त कर सकते है। अतः केंद्र तथा राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाईयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। तृतीय विश्व हिंदी संमेलन में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने सही कहा था कि, ''साहित्य, संस्कृति और सद्भाव की भाषा हिंदी को व्यापार, उदयोग तथा प्रौदयोगिकी की भाषा बनानी चाहिए जिससे हिंदी किसी अनुशंसा से नही बल्कि अपनी शक्ति से संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन सके।''[3]

संदर्भ सूची :–

1. राष्ट्रभाषा (पत्रिका) अक्तूबर 2011–अनंतराम त्रिपाठी पृ. 14
2. प्रयोजनमूलक हिंदी अनुनातन आयाम– डॉ. अम्बादास देशमुख पृ. 57
3. अर्न्तराष्ट्रीय जगत में हिंदी का वर्तमान और भविष्य महेशचंद्र द्विवेदी।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 52-56
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी में रोजगार के अवसर

–प्रा. ललिता भाउसाहेब घोडके
कला व वाणिज्य महाविदयालय, शेंडी, भंडारदरा डॅम, ता. अकोले, जि. अहमदनगर।

प्रस्तावना :–

हिंदी केवल इस देश की राष्ट्रभाषा ही नहीं है, बल्कि वह इस देश की मिट्टी से जुड़ी सामान्यजनों की भाषा है। भाषा का जीवन और संस्कृति के साथ अटूट संबध होता है। इसीलिए जब हम हिंदी का एक शब्द बोलते है, तब उस शब्द के साथ शब्द की पूरी संस्कृति से हम परिचित हुए बिना नहीं रह सकते। अफ्रीका से लौटने पर जब गांधीजी ने पहला भाषण हिंदी में दिया था, तब उन्होंने कहा था मैं हिंदी में नहीं, भारत की भाषा में बोल रहा हूँ। संपूर्ण राष्ट्र में भावनात्मक तथा सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रधान साधन केवल हिंदी है। किसी भी देश की भाषा छिनने से उस देश की संस्कृति छीन ली जाती है इसीलिए प्रत्येक आक्रमणकारी ने सबसे पहले पराधीन देश की भाषा छीन ली और अपनी भाषा उस पर लाद दी। भाषा बदलते ही समाज और संस्कृति अपने–आप बदलती है इसीलिए भाषा की हिफाजत और उसका संवर्धन हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य बन जाता है।

हिंदी जन्म से ही जनसंचार की भाषा रही है। संचार–माध्यमों की भाषा के रुप में हिंदी की प्रगति देखने लायक है। जनसंचार माध्यमों के कारण हिंदी बोलने वालों की संख्या दिन–ब–दिन बढती जा रही है। अंग्रेजी चैनलों का हिंदी अनुवाद हिंदी के विश्वरुप को रेखांकित करता है। विज्ञान, तकनीकी, वाणिज्य तथा सूचना प्रौदयोगिकी के क्षेत्र में हिंदी अपनी मजबूत स्थिति बनाती जा रही है। हमारी राष्ट्रीय भाषा की अत्याधिक लोकप्रियता और बढते अंतराष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ, हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी अधिक प्रगति हुई है। सूचना–क्रांति के इस युग में संचार–साधनों से हिंदी क्षेत्र में क्रांति आई है विज्ञान, तकनीक, इलेक्ट्रॉनिक, नए अविष्कारों व कंप्युटर ने जनजीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किया है। हिंदी की अनेक पत्र पत्रिकाओं ने इन वैज्ञानिक अनुसंधानों को जनता तक पहुंचाया और उनके जीवन को उन्नत बनाया।

स्वंय पत्रकारिता भी नूतन अविष्कारों से पुष्पित व पल्लवित हुई और उसका कायाकल्प हुआ। इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता नवोदित देश तथा राजभाषा हिंदी के लिए प्राणधारा बन गई। नए–नए अविष्कार नए आयामों को और नई दिशाओं को उद्घाटित कर रहे है। तार, टेलिफोन, मोबाईल, सिनेमा, टेलिविजन, रेडियो, ऑडियो वीडीयों, कंप्युटर, ए.टी.एम. मशीन, एजुसेट फैक्स, ई मेल नेटस्केप लिंक, ब्राउजर, टेलीप्रिंटर, पेजर, इंटरनेट व अनेक सॉक्टवेयर आदि संचार माध्यम हिंदी क्षेत्र में विराट रुप धारण कर चुके है और हिंदी को वैश्विक भाषा

बनाने में सिद्धहस्त हुए है। वर्तमान 21वीं सदी में इन संसाधनों के प्रयोग में आने से हिंदी उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रेसर हो रही है और वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुकी है। अपने देश की साहित्य पत्रकारिता का विकास अत्यंत तीव्र गति से हुआ है। भारत की विभिन्न प्रमुख भाषाओं में हिंदी भाषा की पत्रकारिता ने साहित्य को बीसवी सदी के प्रत्येक कालखंड में परिवर्तित किया है और नया दिशा बोध किया है। पत्रकारिता का साहित्य की लगभग सभी विधाओं से सह संबंध होता है। भाषा के स्वरुप और साहित्य के विकास में पत्रकारिता का अमूल्य योगदान रहा है। आज स्थितियॉ बदल गई है।

अब हम भाषा और साहित्य को भी वैश्विक दृष्टि से देख रहें है और यांत्रिक विभीषिकाओं का सामना करने को विवश हो रहे है। भारतेंदु युग से स्वाधीनता प्राप्ति तक की अवधि में पत्रकारिता से हिंदी–भाषा और हिंदी साहित्य समृद्ध हुये थे, परंतु आज मीडिया पर पश्चिमी सभ्यता के बढते प्रभाव ने हिंदी भाषा के स्वरुप को विकृत करने का प्रयास किया है। पत्रकारिता ही एक ऐसा संचार माध्यम है, जो भाषा एवं साहित्य की मूल प्रवृत्ति, प्रकृति और उसके मूल स्वर तथा लक्ष्य को सुरक्षित रखने में सहयोग कर सकता है। सामाजिक संदर्भ में पत्रकारिता और साहित्य दोनों परस्पर सापेक्ष है। समाज से ही प्रेरित होकर पत्रकार संदेश प्रेषित करता है और समाज के ही विविध पक्षों को साहित्यकार लेखनी के माध्यम से उजागर करता है। समसामयिक परिवेश से किसी न किसी रुप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकारा दोनो ही लेखक है, दोनो ही सर्जनाकार है, दोनों के कार्य किन्हीं ऐसे गुणों की अपेक्षा करते है जो दोनों के लिए अपरिहार्य है अपाविल दृष्टि, चिंतन लेखन में प्रेषणीयता की शक्ति दोनो देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परंपराओ के अतिरिक्त उस संश्लिष्ट सांस्कृतिक परंपरा, उस सामाजिक चेतना से भी संबद्ध है, जिससे उन्हें अपनी बात औरों के प्रति निवेदित करने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है। प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार भी है, प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्रकार भी है।

हिंदी भाषा लगातार लोकप्रिय होती जा रही है। सोशल मीडिया से लेकर तमाम प्लेटफॉर्म पर हिंदी का बोलबाला है। इसके साथ ही हिंदी में रोजगार या कैरियर बनाने के विकल्पों में भी लगातार इजाफा होता जा रहा है। हिंदी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इस समय दुनियाभर में हिंदी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से ज्यादा है, वह हिंदी समझ सकने वाले लोंगो की संख्या करीब 1 अरब से भी ज्यादा है। प्रयोजन मुलक हिंदी आधारित वाणिज्य, प्रशासन एवं विदेश व्यापार के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओ के जिन द्वारे को खोला है उन्हें दो स्तरों पर समझा जा सकता है, 1. राष्ट्रीय, 2. अंत राष्ट्रीय तथा नौकरी एवं स्वव्यवसाय के रुप में।

राष्ट्रीय स्तर :–

(क) प्रशासन व सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी अधिकारी –

संविधान के संशोधन 1967 के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को कार्यालयीन कार्य को संपादित करने के लिए अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य होगा आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रतिवेदन, निविदा, अनुबंध एवं विभिन्न प्रारुपों को हिंदी में बनाना तथा जारी करना अनिवार्य है केंद्र सरकार या राज्य

सरकारों के सभी विभागों, उपविभागों में हिंदी अधिकार, अनुवादक, प्रबंधक, उपप्रबंधक के रुप में रोजगार की असीम संभावनाएं है इसके लिए योग्यता कुछ इस प्रकार है :–

1. स्तानक स्तर पर एक विषय के रुप में हिंदी के साथ ही अनुवाद के क्षेत्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
2. स्नातकोत्तर स्तर के साथ हिंदी अनुवाद की योग्यता होना।

(ख) भारतीय सेना में हिंदी अधिकारी के रूप में नियुक्ति :–

जिन युवाओं को सेना में जाने का आकर्षण होता है, वे अपना कैरियर सेना में हिंदी अधिकारी के रुप में भी बना सकते है।

(ग) राष्ट्रीयकृत एवं निजी बैंको में :–

सभी राष्ट्रीयकृत बैंको में हिंदी अधिकारी के पद नियुक्तियों के लिये आये दिन समाचार पत्रों में रिक्तिया प्रकाशित होती है। निजी क्षेत्र के बैंक जैसे आय सी आय सी, एच डी एफ सी आदि भी व्यवसाय विस्तार के लिये उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में साधारण परिवेश के लोंगो की भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षित करके अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे है। अंग्रेजी बोलने वाले पब्लिक स्कूल से निकले लोगों को नौकरी देने के पारंपारिक मॉडल में बदलाव करके गांवो के सरकारी स्कूल में पढे स्नातक युवाओं की भी भर्ती कर रहे है। इस नीति से न सिर्फ लगातार बढ रही मंदी को थामने में मदद मिल रही है बल्कि ग्रामीण और उपनगरों के बेरोजगार युवकों को भी रोजगार मिल रहा है।

(घ) अनुवादक :–

राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कई प्रकाशन संस्थाएं है जो पुस्तकों के अनुवाद के लिए अनुवादक की मांग करती है।

(च) जनसंचार माध्यम :–

आकाशावाणी, दूरदर्शन व सिनेमा आदि के क्षेत्र में आज क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे है। विभिन्न निजी कंपनियो ने अपने स्थानीय आकाशवाणी चैनल खोल लिये है। दूरदर्शन पर निजी चैनलों की संख्या असीमित हो गई है। विभिन्न कार्यक्रमों के निर्माण, प्रसारण, संचालन व अभिनय के क्षेत्र में आज पहले से कही अधिक अवसर उपलब्ध है। सुनहरे भविष्य के द्वार हिंदी के माध्यम से खुले है कुछ प्रमुख कैरियर इस प्रकार है।

1. पटकथा लेखन 2. संवाद लेखन 3. स्क्रिप्ट लेखन 4. डबिंग आर्टिस्ट
5. गीत लेखन 6. समाचार लेखन, वाचन, संपादन आदि।

इनके लिए विधिवत प्रशिक्षण लेकर एक उत्तम जीविका के रुप में इसे अपनाया जा सकता है। इस प्रकार के लेखन के लिये एक विशेष पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है जिसे रचनात्मक लेखन कहते है।

(छ) विज्ञापन एजेंसी :–

कॉपी राइटर, डबिंग आर्टिस्ट विभिन्न विज्ञापन एजेन्सियों में हिंदी कॉपी राइटर की अत्यधिक मांग है। भारतीय उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिये उसकी भाषा व भावना की समझ आवश्यक है।

(ज) पत्रकारिता :–

समाचार पत्रों व समाचार चैनलों की निरंतर बढती हुई संख्या के कारण आज पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत ही आवश्यक हो गया है सभी समाचार पत्रों व चैनलों को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जो स्तरीय, सरल व शुद्ध हिंदी लिखना व बोलना जानते हों। संपादक, उपसंपादक, प्रुफरीडर आदि कई पदों पर हिंदी भाषा में आज रोजगार उपलब्ध है।

(झ) इंटरनेट :–

स्वव्यवसाय के रुप में

1. घोस्ट राइटर :–

यह वह व्यक्ति होता है जो केवल धन के बदले टेक्स्ट लिखता है लेकिन उसके लेखन का अधिकारिक श्रेय किसी और को मिलता है। ये खासतौर पर मशहूर हस्तियॉ, राजनितिज्ञों और बडे अधिकारियों के लिये आत्मकथा, लेख या अन्य सामग्री लिखते या संपादित करते है। बहुत बार इनकी मदद किताब को स्पष्ट, परिष्कृत करने या बिखरी आत्मकथा को सलीके से लिखने में ली जाती है इंटरनेट के माध्यम से इसे पुर्णकालिक या अंशकालिक व्यवसाय बनाया जा सकता है।

2. विज्ञान एवं तकनीकी लेखन :–

आज सभी राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, समाचार, पत्र पत्रिकाएं, जर्नल्स आदि की अपनी वेबसाइटस नए अवसर पैदा किये है यहॉ तक कि जैसी आय बी एम जैसी आय टी कंपनियॉ भी अब इस क्षेत्र में आगे आ रही है।

3. कंटेट राइटर :– विभिन्न वेबसाइट की सामग्री को हिंदी में बनाने के लिये हिंदी लेखको की आवश्यकता है। कम्प्यूटर के सामान्य ज्ञान से भी आजीविका कमायी जा सकती है।

4. तकनीकी शब्दावली का निर्माण :–

केंद्र सरकार व राज्य सरकार को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो तकनीकी शब्दावली का निर्माण कर सके हिंदी पाठ्यक्रम में व्यावहारिक हिंदी के पाठों को बना सके।

3. अंतर्राष्ट्रीय स्तर :–

(क) हिंदी का विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण :–

विश्व में भारत की मजबूत स्थिति व सबसे बड़े बाजार के रुप में परिवर्तन होने के कारण प्रत्येक देश व्यवसाय के विकास हेतु भारतीय उपभोक्ता को रिझाना महत्वपूर्ण मानता है। भारत का अधिकतर उपभोक्ता वर्ग उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में फैला हुआ है और उन तक अपनी पहूँच बनाने के लिये हिंदी की जानकारी होना अनिवार्य है। साथ ही भारतीय संस्कृति अपने आप में एक ऐसा विषय है जिसे लेकर विश्व के लोगों के मन मे सदैव जिज्ञासा होती है। वर्तमान समय में आयुर्वेद, योग और आध्यत्मिक ज्ञान ऐसे नये विषय है जो विदेशी खोजकर्ताओ व शोधार्थियों को आकर्षित कर रहे है।

(ख) विदेशों में हिंदी पत्रकारिता :–

एशिया के प्रमुख देशों में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं को बड़े शौक से पढा जाता है। अतः विभिन्न एशियाई देशों

में हिंदी पत्रकारिता का एक नया रोजगार क्षेत्र है।

निष्कर्ष :-

उपर्यक्त विवेचन इस बात की उपयुक्त जानकारी उपलब्ध कराता है कि हिंदी भाषियों के लिये निराश होने जैसा कुछ नहीं है। यदि हिंदी को भूमंडलीकरण के पटल पर उभारना है तो उसे युग के वैज्ञानिक एवं तकनीकी नियमों के अनुरुप ढालना होगा तभी हिंदी की प्रयोजनीयता का स्वरुप उभरकर सामने आएगा। आज हिंदी मे असीम संभावनाए है क्योंकि दुनिया का सबसे बड़ा बाजार हमारे पास है। विश्व के अन्य भाषा–भाषियों को इस बाजार में उतरने, स्थापित व सफल होने के लिये हमें व हमारी भाषा को आगे बढाना है। हिंदी ने सब को अपना बनाया है, हिंदी सबकी बनेगी। इस अवसर का लाभ उठाया जाए तो हिंदी को विश्व भाषा के रुप मे स्थापित किया जाएगा।

मो नं. 8007027003

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 57-60
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी विषय में कैरियर और रोजगार की संभावनाएं

–डॉ. अनुसुइया अग्रवाल, डी. लिट्.
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी, शा. म. व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद (छत्तीसगढ़)

हिन्दी सूर मीरा तुलसी जायसी की तान है।
हिन्दी हमारा शब्द स्वर यह अमिट पहचान है।
हिन्दी से ही पुलकित है घर आंगन वन उपवन।
हिन्दी हमारी चेतना, हमारी वाणी का शुभ वरदान है।

साथियों। जिस भाषा के पास तुलसीदास, सूरदास और अन्य महान कवि हो उस हिन्दी भाषा की शक्ति का पता उनकी रचनाओं को पढ़कर लगाया जा सकता है। दरअसल भाषा, संस्कृति और सभ्यता का तात्विक रूप भारत भर में एक समान है।'[1] इसी एकरूपता ने हिंदी को 'विश्व क्षितिज' के 'भाल' की 'बिंदी' बनाया। इसलिए मैं रघुवीर सहाय की इन पंक्तियों का अक्सर दुहराती हूं कि– कहने वाले चाहें कुछ भी कहें। हमारी हिन्दी सुहागन है, सती है, खुश है।

बहरहाल भारत अपनी श्रेष्ठ भाषा और बेजोड़ संस्कृति के कारण; समानता और एकता की दृष्टि से विश्व स्तर पर शोहरत प्राप्त देश रहा है। भाषा को मान– सम्मान दिलाने में बापू का बहुत बड़ा योगदान था। बापू की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी अपनी जड़ों से जुड़ने की भावना। भारतीय जनता को बलवती और स्वावलंबी बनाने के लिए सर्वप्रथम उन्होंने भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी भाषा की गुलामी से उबारने की दिशा में ध्यान दिया। उनका पहला महत्वपूर्ण कार्य था हिन्दी को राष्ट्र के आपसी संवाद की भाषा बनाने का प्रबल पुरूषार्थ। उन्हीं के प्रयत्नस्वरूप आज न केवल हिन्दीभाषी प्रदेशों में अपितु अहिन्दीभाषी प्रदेशों में भी हिंदी का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है जहॉ अंग्रेजी में कामकाज की अनिवार्यता होने पर भी पूरे भारत में आज हिन्दी आपसी संवाद की भाषा के रूप में सहजता से विकास कर रहा है।

विदित हो कि भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची के आर्टिकल 343 (1) में देवनागरी लिपि में हिन्दी को भारत सरकार की सरकारी भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी। इन 45 वर्षो में हिन्दी ने एक नया मुकाम हासिल कर लिया है। आज मंदारिन चाइनीज और अंग्रेजी भाषा के बाद हिन्दी तीसरे स्थान पर दुनियां में सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है। भारत में राज्य स्तर पर भी हिन्दी बिहार, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड और छत्तीसगढ़ की राजकीय भाषा अर्थात कामकाज की भाषा है। पूरी दुनियॉ में लगभग 54.4 करोड़ से भी अधिक लोग हिन्दी बोलते, लिखते और समझते हैं।

कोटि कोटि कंठों की मधुर स्वरधारा है,

हिन्दी है हमारी, हिन्दुस्तान हमारा है।

इस समय तो हिन्दी केवल बोलचाल की नहीं अपितु तकनीकी भाषा के रूप में भी भरपूर विकसित हो चुकी है। लेडी श्रीराम कॉलेज की प्राचार्य सुमन शर्मा के अनुसार हिन्दी अब तकनीकी रूप से भी खूब सक्षम हो चली है। इस भाषा में लगभग सभी तकनीकी शब्दों के अर्थ और परिभाषाएं उपलब्ध हैं। वर्ष 1991 में केन्द्र सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग के तहत् भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास (टीडीआईएल) मिशन शुरू किया गया। इसी तरह वर्ष 1991 में ही हिन्दी सहिंत विभिन्न भारतीय भाषाओं से लगभग 30 लाख प्रचलित शब्दों का एक कोष तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य आईआईटी, दिल्ली को सौंपा गया। हिन्दी भाषा के डिजिटल इस्तेमाल के लिए कई संगठनों ने हिन्दी वर्ड प्रोसेसर्स तैयार भी किया है; जैसे– श्रीलिपि, सुलिपि, अक्षर, क्रुतिदेव, एपीएस आदि। हिन्दी के लगातार इसी विकास के कारण अब गर्व के साथ युवा वर्ग हिन्दी को कैरियर के रूप में चुन रहे हैं।

आज नए बाजार और हिन्दी के विस्तार ने इसे अच्छे कैरियर के रूप में स्थापित किया है। हिन्दी पढ़ने वाले, समझने वाले और इसी क्षेत्र में कैरियर बनाने वालों के लिए बाजार लगातार विकसित हो रहा है। यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिक्स के आंकड़ों के अनुसार इंटरप्रेटर और ट्रांसलेटर के कैरियर में 2024 तक लगभग 29 प्रतिशत की वृद्धि रहेगी। ऐसे ही टेक्निकल राइटर के रूप में यह ग्रोथ लगभग 10 प्रतिशत रहने की संभावना है। लोग समझने लगे हैं कि हिन्दी को कैरियर के रूप में अपनाकर सफलता के शिखर पर पहुंचा जा सकता है। न केवल भारत अपितु दुनियां भर में हिन्दी विशेषज्ञ (एक्सपर्ट्स) के रूप में और भी आकर्षक और महत्वपूर्ण कई अवसर और विकल्प हैं; जिसके विषय में मैं आपसे क्रमशः संवाद स्थापित करती चलूंगी।

दुभाषिया अथवा अनुवादक :–

किसी एक सोर्स भाषा यानि स्त्रोत भाषा से किसी अन्य टारगेट भाषा यानि लक्ष्य भाषा में समान अर्थो में किसी लेख का अनुवाद करने वाले व्यक्ति को ट्रांसलेटर अथवा अनुवादक कहा जाता है। जो व्यक्ति स्त्रोत भाषा में बोली जाने वाली बातचीत को लक्ष्य भाषा में समान अर्थो सहिंत बोलकर अभिव्यक्त करते हैं उन्हें इंटरप्रेटर या दुभाषिया कहते हैं। एक हिन्दी ट्रांसलेटर यानि अनुवादक लगभग 05– 06 लाख रूपये सालाना प्राप्त कर सकता है। अनुभव और अभ्यास बढ़ने के साथ– साथ आय में लगातार वृद्धि होती जाती है।

शिक्षक, सहा. प्राध्यापक, प्राध्यापक और विदेश में हिन्दी प्रशिक्षक :–

हिन्दी एक्सपर्ट्स यानि विषय विशेषज्ञ के रूप में वांछित योग्यताधारी युवा देश– विदेश में हिन्दी भाषा के टीचर यानि शिक्षक, लेक्चरर, प्रोफेसर यानि प्राध्यापक, सहा. प्रा. या इंस्ट्रक्टर यानि प्रशिक्षक की नौकरी प्राप्त कर सकते है। यह देश दुनियां में हिन्दी एक्सपर्ट्स यानि विशेषज्ञों के लिए बढ़िया कैरियर ऑप्शन है। एक स्कूल शिक्षक भी लगभग 05–06 लाख रूपये सालाना आसानी से कमा सकता है। वहीं महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के सहा. प्राध्यापक, प्राध्यापक तो 08– 10 लाख से लेकर 18– 20 लााख सालाना आय बना लेते हैं। जैसे– जैसे वांछित योग्यता और अनुभव बढ़ता है वैसे– वैसे तनख्वाह भी बढ़ती जाती है। सेवानिवृति के बाद भी बढ़िया पेंशन इस नौकरी का विशेष आकर्षण है।

ऑफलाइन या ऑनलाइन कंटेंट राइटर एवं टेक्नीकल राइटर :–

इंटरनेट और डिजिटल दौर में ऑफलाइन या ऑनलाइन कंटेंट राइटर/टेक्नीकल राइटर की काफी मांग

है। हिन्दी एक्सपर्ट्स हिन्दी भाषा में यह पेशा ज्वाइन कर सकते हैं। इसके अलावा ट्रांसलेशन के क्षेत्र में भी शानदार कैरियर के अवसर हैं। यहां पर भी आसानी से 03– 04 लाख रूपये सालाना आय हो सकती है। अपने अनुभव और कार्य के प्रति संजीदगी के द्वारा आय में लगातार वृद्धि संभव हो सकती है।

एंकर, न्यूजरीडर रिपोर्टर :–

समाचारों को दूरदर्शन में आकर्षक रूप से प्रस्तुत करने वाले न्यूजरीडर या समाचार वाचकों की इस तकनीकी विकास के दौर में बहुत अधिक मांग है। स्पष्ट उच्चारण, शुद्ध भाषा प्रयोग और प्रवाह के आधार पर न केवल लोकप्रिय न्यूजरीडर के रूप में पहचान बनती है अपितु तनख्वाह में भी वृद्धि होती जाती है। प्रारंभ में एक फ्रेशर न्यूजरीडर एवं एंकर को 2.5 से 03 लाख रूपये तक सालाना आय हो सकती है जबकि अनुभव, लगातार अभ्यास, निरन्तरता और शानदार प्रस्तुति के आधार पर ये अपनी तनख्वाह में वृद्धि करा सकते हैं। एक स्थापित समाचार पत्र दैनिक भास्कर के अनुसार– ''भारत में कई एंकर्स को 05 करोड़ रूपए सालाना तक वेतन मिल रहा है।''

कॉपी राइटर/ कॉपी एडिटर :–

हिन्दी के विशेषज्ञ कॉपी राइटर, कॉपी एडिटर या एडवरटाइजमेंट राइटर यानि विज्ञापन लेखक बनकर बढ़िया आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञापन लेखक की अच्छी और उत्पाद के अनुरूप वांछित हिन्दी का प्रयोग यदि उपभोक्ताओं को आकर्षित कर लेता है तो उत्पाद सामग्री की बाजार में मांग बढ़ जाती है और मांग के बढ़ने के साथ ही उत्पादक को लाभ मिलने लगता है तब विज्ञापन लेखक को भी फायदा दिया जाता है। इस क्षेत्र में कारोबार की नींव में इन पेशेवरों का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

हिन्दी सब्जेक्ट मैटर एक्सपर्ट :–

इसके अलावा हिन्दी विशेषज्ञ यानि हिन्दी सब्जेक्ट एक्सपर्ट्स के रूप में भी देश– विदेश में कॅरियर बनाया जा सकता हैं। हिन्दी सहिंत विभिन्न विषय विशेषज्ञ के रूप में लगातार मांग बढ़ रही है। उद्देश्य यही है कि वे अपने संबंधित कार्यक्षेत्र में हिन्दी से जुड़े सभी इश्यूज को हैंडल कर सके। आवश्यकतानुसार हर समस्या का समाधान किया जा सके।

हिन्दी फ्रीलांसर :–

हिन्दी में स्टडी नोट्स तैयार करने, हिन्दी ट्रांसलेशन, हिन्दी टायपिंग या हिन्दी कंटेंट मैटर तैयार करने का कार्य फ्रीलांसर के द्वारा किया जाता है। फ्रीलांसर अपने घर में या अपना दफ्तर बनाकर अपनी सुविधा के मुताबिक प्रोजेक्ट्स को ऑफलाइन या ऑनलाइन पूरा कर सकते हैं। वर्तमान में इस तरह की जॉब की बहुत मांग है यही कारण है कि लोग कैरियर के रूप में इसे बहुत तेजी से और रूचिपूर्वक अपना रहे हैं। वर्क फील्ड में अनुभव हो जाने के बाद कई जाने– माने फ्रीलांसर सालाना लाखो रूपये कमा लेते हैं।

अभी हम अपने महाविद्यालय में ऑनलाइन नेशनल वेबिनार करवा रहे हैं 24 जून को कबीर जयंती पर। विषय है; कबीर साहित्य की प्रासंगिकता। इस वेबिनार के लिए ब्रोशर तैयार करना, लिंक जनरेट करना, मिनट टू मिनट रूपरेखा बनाना एवं प्रतिभागियों के लिए प्रमाणपत्र तैयार करने जैसे सारे महत्वपूर्ण कार्य हमारे ही महाविद्यालय की युवा प्रतिभा एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थी पितांबर पटेल के द्वारा किया गया। यह उसका पहला काम था। मैने कहा– लगातार इस तरह के काम करने के बाद जब इस कार्य में तुम्हें थोड़ी दक्षता प्राप्त

हो जाएगी तो वर्तमान में लगभग सभी महाविद्यालय वेबिनार करा रहे हैं। 2000 रू. प्रति वेबिनार की दर से राशि लेकर तुम इस कार्य को एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते हो। इसके लिए हम अपने विभाग की ओर से लगातार सहयोग देते रहेंगे। तो देखिए अभी अध्ययनरत् है वो छात्र। किंतु हिन्दी ने उसे मां सरस्वती की कृपा दृष्टि के साथ ही मां लक्ष्मी की बरकत के लिए भी अवसर दे दिया।

बुक राइटर :-

साहित्य की सभी विधाओं यथा कविता, कहानी, उपन्यास के अतिरिक्त कोर्स की पुस्तकें लिखकर भी उस फील्ड का वांछित योग्यताधारी एक्सपर्ट्स अपनी तनख्वाह के अतिरिक्त साइड इन्कम प्राप्त कर सकता है। इसमें भी अनुभव के आधार पर प्राप्त होने वाले लाभ में निरन्तर वृद्धि संभव है।

प्रकाशक :-

आज के भागम–भाग की दिनचर्या में व्यक्ति मानसिक रूप से बेहद थक जाता है। ऐसे में कुछ अच्छी पुस्तकें पढ़कर मानसिक सुकून पाना चाहता है उनके लिए भाषा का अच्छा जानकार व्यक्ति अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन कर उन्हें अच्छी पाठ्य सामग्री उपलब्ध करा सकता है। प्रकाशकों को एक पुस्तक में उसकी कीमत पर 60 से 70 प्रतिशत तक का लाभ हो जाता है। यह बहुत ही फायदेमंद और सम्मानजनक धंधा है।

इसी तरह आज हम हॉलीवुड की मूवी को हिन्दी में देख सकते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि विदेशी लोगों को भी पता है यदि भारत में व्यापार की ऊंचाई तक पहुंचना है अथवा एक नए आयाम तक पहुंचाना है तो गूगल जैसे अन्य बड़ी कंपनी भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए नए– नए कदम उठा रही है। और अपनी पहुंच उन लोगों तक बना रही है जो लोग केवल हिन्दी जानते हैं।

आज हिन्दी की लोकप्रियता इसलिए भी बढ़ी है क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री खुद को और दूसरों को भी हिन्दी अपनाकर जागरूक करने में अपना महत्वपवूर्ण योगदान दे रहे हैं।

तो साथियों। इस तरह हिन्दी केवल विचारों के आदान– प्रदान की ही भाषा नहीं है अपितु 'हैसियत' स्थापित करने की भाषा भी बन चुकी है। आज हर तबके का व्यक्ति हिन्दी के इस महत्व को समझने लगा है। सचमुच अपनी मिट्टी, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा– बोली से जुड़े बिना विकास करना असंभव है। निश्चित तौर पर विकास के साथ कदमताल करने के लिए भिन्न–भिन्न भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए किंतु हर हाल में बातों में ही नहीं कार्यो में भी हिन्दी को प्राथमिकता दें क्योंकि अपार संभावनाओं से भरी हिन्दी रोजगार के भी बहुत से अवसर उपलब्ध कराने में सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. हिंदी विश्व संस्कृति– नई दिल्ली से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका– वर्ष 25, अंक 4, फरवरी 2001
2. अकादमिक हिन्दी– स्थिति और संभावनाएं– मनोज पांडेय– ए आर पब्लिशिंग कंपनी– दिल्ली
3. विकल्प पत्रिका– डॉ. दिनेश चमोला, अप्रेल जून अंक– संपादकीय।

पत्रव्यवहार का पता– क्लब वार्ड, पो. एवं जिला– महासमुंद (छत्तीसगढ़) पिन– 493445
मो. नं. 9425515019, ईमेल–agrawaldransuya@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 61-64
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी अध्येताओं को रोजगार के अवसर

-कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार
शोध छात्रा, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रस्तावना :-

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। हिंदी भाषा संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में संघ की राजभाषा घोषित की है। केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार के कई विभागों में आज हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य माना गया है। आज वैश्वीकरण और निजीकरण के वर्तमान परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते आर्थिक संबंधों को देखते हुए संबंधित आर्थिक साझेदार देशों की भाषाओं की अंतर शिक्षा की जरुरत महसूस की जाने लगी है। साथ–साथ हिंदी भाषा के प्रति विदेशियों में भी दिन–ब–दिन रुचि बढ़ती जा रही है। इसी कारण देश–विदेश में हिंदी का महत्त्व बढ़ चुका है। कई देशों ने अपने यहाँ हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है। विदेशी छात्र भी हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा मानते हैं। हिंदी भाषा की अत्याधिक लोकप्रियता और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के साथ–साथ आज हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के असीमित अवसर आज देखे जा सकते हैं। हिंदी भाषा में निम्नलिखित क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

हिंदी अनुवादक के रूप में :-

आज वैश्वीकरण के दौर में जब दो लोग अलग–अलग संचार और व्यापार कर रहें हो तो अनुवादक की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है। आजकल मशीन पर भी अनुवाद किया जाता है मगर हम पूरी तरह से मशीन पर निर्भर नहीं रह सकते। इसके लिए एक अच्छे अनुवादक का होना अनिवार्य है। इससे काफी अच्छा वेतन भी पर प्राप्त हो सकता है। आज सरकारी और निजी क्षेत्र में अनुवादक की बहुत बड़ी माँग है। सरकार की लगभग सभी विभागों में अनुवादक की जरुरत है। भारत में राजभाषा अधिनियम तहत सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी तथा हिंदी भाषा में अनुवाद होना अनिवार्य है। साथ ही दूरदर्शन तथा आकाशवाणी में भी अनुवादक की आवशयकता होती है। साथ ही सभी बैंकों में, न्यूज़ चौनलों में, मीडिया में अनुवादक की माँग बहुत बडी है। वर्तमान स्थिति में अखबार हो, या देश विदेश की खबर जानना हो तो अनुवाद सच में महत्त्वपूर्ण होता है। साथ ही एक विज्ञापन को कई भाषाओं में देखने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। फिल्मों की डबिंग के लिए भी अनुवाद की अहम भूमिका होती है। कई हिंदी भाषी प्रदेशों में, कई केंद्रीय विद्यालयों में अनुवादक का स्वतंत्र पद होता है। मंत्रालयों में भी कनिष्ठ हिंदी अनुवादक का पद होता है। इस तरह अनुवाद के क्षेत्र में अनुवादक के रूप में हिंदी अध्येताओं के लिए कई रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

हिंदी अधिकारी के रूप में :-

राजभाषा अधिकारी भारतीय केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी अनुवाद के अलावा राजभाषा हिंदी के अन्य कामकाज जैसे हिंदी दिवस, हिंदा पखवाडा मनाना, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करना, गृह पत्रिका का संपादन करना, हिंदी तिमाही बैठकों का आयोजन करना, राजभाषा निरीक्षण आदि कार्य करते हैं। राजभाषा अधिकारी पदों का सृजन राजभाषा विभाग के आदेशानुसार हर कार्यालयों में किया जाता है। केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में न्यूनतम हिंदी पदों को सृजित करने के बारे में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने विस्तृत आदेश दिए हैं। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि सभी संस्थानों में अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी। भारत के सभी सरकारी तथा निजी संस्थानों में हिंदी अधिकारी के रूप में काम का अवसर मिल सकता है। साथ ही देश– विदेश की सरकारी संस्थाओं में हिंदी सलाहकार के रूप में भी नियुक्ति हो सकती है। इस तरह हिंदी अधिकारी के रूप में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

अध्यापन क्षेत्र में :-

अध्यापन का क्षेत्र तो हिंदी भाषा के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार है। देश के प्रमुख स्कूल, कॉलेजों, विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। हिंदी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा होने के कारण अध्यापन क्षेत्र में रोजगार की कई संभावनाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक कैरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है। उच्च शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक रोजगार के अवसर योग्यता के अनुसार उपलब्ध रहते हैं। और इसे सदाबहार कैरियर माना जा सकता है। समय–समय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इसमें अधिकतम अंक प्राप्त करने वालों को जूनियर रिसर्च फैलोशिप मिल सकती है। जिसके माध्यम से शोध कार्य करने वाले छात्रों को हर महीने छात्रवृत्ति दी जाती है। यह परीक्षा पास करने वालों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति के अवसर मिल सकते हैं। इस तरह अध्यापन क्षेत्र में भी हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

पत्रकारिता में :-

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। इन लोगों का अधिकांश कार्य भी हिंदी में ही होता है। हिंदी में शैक्षणिक योग्यता रखने के साथ–साथ जनसंचार में डिग्री, डिप्लोमा की योग्यता के साथ अभ्यर्थी एक से अधिक स्थानों पर नौकरी के अवसर प्राप्त कर सकते हैं। अभ्यर्थी रेडियो, टीवी, सिनेमा के क्षेत्र में भी अवसर का लाभ उठा सकते हैं। हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षण है, जहाँ मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। पत्रकारिता के जरिए भी हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

हिंदी फ्रीलांसर :-

हमारे देश में हिंदी फ्रीलांसर के लिए भी काम के अवसरों की कोई कमी नहीं है। फिर चाहे वह हिंदी में स्टडी नोट्स तैयार करना हो, हिंदी ट्रांसलेशन, हिंदी टाइपिंग, हिंदी कंटेंट मैटर तैयार करना हो, फ्रीलांसर अपने घर या किसी दफ्तर में सुविधा के मुताबिक प्रोजेक्ट को ऑफलाइन, ऑनलाइन पूरा कर सकते हैं। इसमें

भी लाखों रुपए कमाए जा सकते हैं।

हिंदी स्टेनोग्राफर :-

हमारे देश में विभिन्न सरकारी और निजी दफ्तरों में अभी भी हिंदी टाइपिस्ट और हिंदी स्टेनोग्राफर की काफी माँग है। आजकल तकरीबन सभी दफ्तरों में कई किस्म के हिंदी टाइप राइटर या अन्य स्टाफ मेंबर अपने कंप्यूटर या लैपटॉप पर खुद ही हिंदी में टाइपिंग करते हैं। यहाँ भी रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

इंटरप्रिटेशन :-

अनुवादक की भूमिका के समान इंटरप्रेटर एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। हाँलाकि व्याख्याकार मौखिक रूप से ऐसा करते हैं। एक इंटरप्रेटर उन शब्दों का अनुवाद करता है जो एक व्यक्ति अलग भाषा में कहता है और अनुवादकों की तुलना में व्याख्याकार शब्दों को पढ़ नहीं सकते हैं। लेकिन भाषा की व्याख्या कर सकते हैं। इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर राजनयिक मिशनों, संयुक्त राष्ट्र और विदेशी छात्रों के साथ विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अक्सर सुगम व्यावसायिक कार्यवाही में सहायता के लिए व्याख्याकार को नियुक्त करती है। व्याख्याकार बनने के लिए हिंदी के साथ अन्य भाषा में भी कौशल की आवश्यकता होती है, जहाँ रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

संचार माध्यम :-

आजकल निजी टेलीविजन चौनलों पर और एफएम रेडियो चैनल की शुरुआत और स्थापित पत्र–पत्रिकाओं के हिंदी रूपांतर आने से इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। हिंदी मीडिया एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादक, संवाददाता, न्यूज रीडर, उप संपादक, प्रूफ रीडर आदि की बहुत आवश्यकता है। यहाँ तक कि एनिमल प्लेनेट, डिस्कवरी चौनल और नेशनल जियोग्राफी जैसे अंग्रेजी चैनल भी हिंदी में कार्यक्रम बनाते हैं। हिंदी का बाजार इतना विस्तृत हो गया है कि इन विदेशी चैनलों को भी हिंदी भाषा में प्रसारण करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इस तरह हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

विज्ञापन जगत :-

आजकल विदेशी कंपनियाँ भी हिंदी में विज्ञापन तैयार करवा रही हैं। यदि छात्र विज्ञापन के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं तो इस क्षेत्र में नाम और शोहरत की कोई कमी नहीं है। देश में विदेशी चैनलस, विदेशी मीडिया का आगमन हुआ तो हिंदी की उपयोगिता का आलम आज सबसे ज्यादा देखा जाता है। इस कारण विज्ञापन जगत में भी हिंदी भाषा अध्येताओं के लिए रोजगार की कई संभावनाएँ उपलब्ध हो सकती है।

सरकारी विभाग :-

सरकारी विभाग में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में कार्य करना अनिवार्य है। अतः राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाषा प्रबंधक, आशुलिपिक, टंकक आदि विभिन्न पदों की भरमार है। उल्लेखनीय बात यह है कि भारत सरकार के अधिन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग काम करता है। यहाँ पर हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को परिभाषित और शब्दों का विकास किया जाता है। यहाँ भी हिंदी भाषा अध्येताओं के लिए रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

मनोरंजन जगत :-

मनोरंजन जगत में अगर आपमें प्रतिभा है तो रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि के लिए स्क्रिप्ट राइटर डायलॉग राइटर, गीतकार के रूप में भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। इस क्षेत्र में प्राकृतिक एवं कलात्मक रूप से रचनात्मक लेखन जरुरी है। अंतरराष्ट्रीय लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद, हिंदी के लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद, हिंदी लेखकों की कृतियों का अन्य भाषा में अनुवाद कार्य किया जा सकता है। फिल्मों में, विज्ञापनों को हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करने का भी कार्य किया जा सकता है। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए द्विभाषी दक्षता होना आवश्यक है।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में :-

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में कई सरकारी एजेंसियाँ भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम के पर्यवेक्षक के लिए भाषा विज्ञानियों की नियुक्ति करती है। स्कूल, कॉलेज और अन्य शिक्षा संस्थानों में भी भाषा वैज्ञानियों की जरुरत होती है। शिक्षा परिषद, मीडिया, सामाजिक सेवा, संचार, कंप्यूटर की भाषाएँ, स्वर विश्लेषण, अनुसंधान संप्रेषण, व्यक्तिक्रम और भाषा संबंधी अन्य क्षेत्रों में करियर के कई अवसर रोजगार के रूप में मिल सकते हैं।

निष्कर्ष :-

भूमंडलीकरण के बाद से हिंदी में तेजी से बदलाव देखने मिलता है। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में सौ से भी ज्यादा संस्थानों में हिंदी की विधिवत पढ़ाई होती है। बड़ी संख्या में विदेशी छात्र भी हिंदी भाषा सीखने भारत आ रहे हैं। कई तकनीकी रोजगार हिंदी के जरिए मिलते नजर आ रहे हैं। हिंदी के भविष्य और बाजार को देखते हुए कहना पड़ेगा कि आने वाला समय हिंदी के प्रोफेशनल्स के लिए और भी रोजगार परक होगा। आज स्थिति यह है कि हिंदी भाषा के अच्छे जानकारों की कमी पड़ती जा रही है। माँग बहुत अधिक है पर पूर्ति हेतु योग्य व्यक्ति नहीं मिल पा रहे हैं। यकीन के साथ यह कहा जा सकता है कि आज हिंदी भाषा में असीमित रोजगार के अवसर आज उपलब्ध है।

संदर्भ :-

1. हिंदी का उज्ज्वल भविष्य– महेशचंद द्विवेदी।
2. हिंदी और रोजगार की संभावनाएँ– ratanjagannath.com
3. हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएँ –naiduniya.com
4. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ –whatsknowledge.com
5. हिंदी भाषा में कैरियर– hindiindiawaterportal.org
6. हिंदी के क्षेत्र में रोजगार–diofficerwordpres.com
7. हिंदी में करियर– fromharibhoomi.com
8. हिंदी में करियर के अवसर–https://hiquero.com
9. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर – प्रतिमा त्रिपाठी
10. भाषा विज्ञान के क्षेत्र में रोजगार के अवसर –indiawaterportal.org

ई मेल Kumbharshakuntala22@gmail.com, संपर्क 9822911235

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 65-68

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

–प्रा.डॉ.–गडाख दिपाश्री कैलास

अगस्ती कला, वाणिज्य दादासाहेब रूपवते विज्ञान
माविद्यालय अकोले ता. अकोले, जि. अहमदनगर, राज्य महाराष्ट्र।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा संपर्क भाषा है। इस देश की लगभग 80 प्रतिशत जनता इसी भाषा के माध्यम से एक दूसरे के साथ संपर्क स्थापित करती है। हिंदी भारत के नौ प्रदेशों की मातृभाषा है। यह भारत की प्रमुख तथा जनता के परस्पर विचार–विनिमय की भाषा है। बावजूद इसके हिंदी विदेशों में भी बड़े पैमाने पर बोली और समझी जाती है। इससे स्पष्ट है कि हिंदी का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। हिंदी का प्रयोग क्षेत्र दिन–ब–दिन व्यापक होता जा रहा है। यद्यपि अंग्रेजी भाषा का प्रयोग सरकारी कामकाज में प्रयुक्त किया जाता है, तथापि हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार अभी भी प्रयत्नशील है। राज्य स्तर पर भी हिंदी कई राज्यों की राजभाषा या राज्याभाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती है। जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंण्ड, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान तथा दिल्ली कई अन्य राज्यों में हिंदी भाषा को सहायक भाषा के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

भारत वर्ष में राष्ट्रभाषा व राजभाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान खास बनाई है। भारतीय साहित्य, संस्कृति, दर्शन इतिहास व ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी कतिपय भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए अलग से भाषा विभागों की स्थापना की गई है। भूमण्डलीकरण मुक्त व्यापार के चलते भी समुचा विश्व एक गाँव के रूप में विकसित हो रहा है। वे परस्पर एक दूसरे देश की भाषा को सीखाना चाहते है। यह मौजुदा समय की माँग भी है। अंतः हिंदी भाषा का अध्ययन और अध्यापन रोजगार के दृष्टि से किया जा रहा है।

हिंदी भाषा का अध्ययन रोजगार परक दृष्टि से महत्वपुर्ण हैं। इसे हम कुछ बिंदुओं में जान सकते हैं। सरकारी, अर्ध सरकारी, गैर सरकारी व निजी संस्थाओं में हिंदी भाषा रोजगार के तमाम अवसर प्रदान करती है।

अध्यापन :– अध्यापन के क्षेत्र में हिंदी साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं के द्वारा रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

इनमें प्रमुख हैं :–

1. स्कूल स्तर पर (कक्षा पहली से कक्षा बारवी तक)
2. कॉलेज स्तर पर (स्तानक, स्तानकोत्तर व डिप्लोमा एम.फिला, एवं पीएच.डी.)

भारत सहित विश्व के कई देशों में हिंदी का अध्यायन व अध्यापन किया जाता है।

इसके लिए उन संस्थाओं को पर्याप्त मात्रा मे योग्य अध्यापकों की आवश्यकता होती है। जोकि हिंदी भाषा रोजगार परक बनाती है।

अनुवाद/दुभाषि :- अनुवाद का क्षेत्र रोजगार प्राप्त करने में सबसे उपयोगी हैं। मीडिया क्षेत्र में हिंदी अनुवादकों को रोजगार के कई अवसर प्राप्त हो सकते हैं, क्योंकि प्रिन्ट व इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में विभिन्न समाचार स्त्रोतों से अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में समाचार प्राप्त होते हैं, उन समाचारों की एक अच्छा अनुवादक ही हिंदी भाषा में अनुवादित कर सकता है।

केंद्र सरकार के कई विभागों, राज्य सरकार, अर्ध सरकारी विभागों में हिंदी भाषा में कामकाज करना अनिवार्य है। इसलिए इन विभागों में बहुत प्रकार के पद सृजित किए गए हैं। जैसे हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक या राजभाषा सहायक, आशुलिपिक, प्रबंधक आदि। इसके अतिरिक्त केंद्रीय अपराध प्रयोगशाला, भारतीय जीवन बीमा निगम, बी. आर. डीओ., सरकारी और गैर सरकारी बैक, भारतीय बीमा पतन प्राधिकरण अर्धसैनिक बल में भी हिंदी अधिकारियों व अनुवादकों के पद भरें जाते है।

हिंदी प्रत्रकारिता :- हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं है। इस दौर में हिंदी अखबार और 7 न्युज चैनल की संख्या भी काफी है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र–पत्रिकाऐ हैं जहां हिंदी भाषी प्रतियोंगियों के लिए दरवाजे खुले हैं।

रेडियो तथा टीवी :- रेडियो के लिए नाटक, नाटिकाऐं. समाचार लेखन करने वाले लोगों की तादाद कम नहीं है अपितु दिन–ब–दिन बढ़ती है। रेडियों अर्थात् आकाशवाणी के लिए तेरह मिनट का लेखन जब किया जाता है, तो उसका मुआवजा आठ सौ रूपयों से कम नहीं होता। इससे आर्थिक लाभ भी होता है और घर–घर में अपनी आवाज पहुँचती यह लाभ भी कम नहीं है। टी.वी. यह रेडिओ की अपेक्षा और एक सशक्त एवं शक्तिशाली रूप में उभरने वाला मिडिया का दूसरा रूप है जो विभिन्न सैटेलाइटों के माध्यम से आज हर घर में पहुँचा है। दो–दो या चार–चार सालों तक चलने वाले विभिन्न धारावाहिक मानवी मन का कौतुहल तबा उत्कंठा बढ़ाते हैं जिनके लिए सशक्त संवाद लेखकों की जरूरत होती है। जिसमें संवाद लेखक अपनी अलग पहचान बनाते है।

गीत लेखन :- गीत लेखन के माध्यम से कवियों के गीत रिकार्ड किए जाते है और बाजार में ऑडियों तथा वी.डी.ओ. और सी.डी. के माध्यम से आते हैं, और निरंतर बजते रहते हैं। किसी भी प्रसिद्ध कवि या गीतकार को इसका जो मुआवजा मिलता है उनकी सही कीमत कभी भी ज्ञात नहीं होती इतनी इस क्षेत्र में इतनी इस क्षेत्र में गुँजाईश है और टी.वी. सीरियल के गीतों के लिए तो खास धन मिलता है जिसकी हम कल्पना तक नही कर सकते।

विज्ञापनों के लिए जो या जिंगल्स (छोटी–छोटी पंक्तियाँ) लिखी जाती हैं उसके लिए भी धन मिल सकता है और 'नाम के साथ दाम भी' यह उक्ति सार्थ होती है।

संवाददाता :- आज दूरदर्शन के साथ निजी चैनल्स बड़ी तादाद में शुरू हुए है। खास करते हुए समाचार पढ़ने के लिए, साक्षात्कार के लिए संवाददाताओं की आज बहुत आवश्यकता है। जिस प्रकार समाचार चैनल्स खुल रहे हैं उसे देखकर पता चलता है कि प्रेस मिडिया में संवाददाताओं की अत्यंत जरूरत है जिसे हिंदी का

छात्र बड़ी आसानी से पूरा कर सकता है। प्रेस मिडिया इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ अनंत एवं असीम है जिसे कोई भी नकार नहीं सकता।

विज्ञापन :– विज्ञापन लेखन करते समय भाषा पर प्रभुत्व होना तो आवश्यक एवं जरूरी है ही किंतु इसके साथ जिन शब्दों का चुनाव किया जाता है उनकी संप्रेषणशीलता भी महत्वपूर्ण है। प्रयुक्त संदेश न्यूनतम शब्दों में उपभोक्ता के पास पहुँचना चाहिए इस बात का इसमें ख्याल रहता हैं।

इंटरनेट :– आज हिंदी की कई वेबसाईट उपलब्ध हैं। विभिन्न हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर है। ऐंसे में पोर्टल पर भी जॉब के अवसर उपलब्ध होने लगे हैं।

कॉल सेंटर :– डोमेस्टिक कॉल सेंटर्स में हिंदी के आधार पर भी नौकरी मिलने लगी है। टेली कम्युनिकेशन में भी हिंदी की भुमिका काफी महत्वपूर्ण है। कॉल सेंटर के माध्यम से भी हिंदी का छात्र रोजगार–निर्माण कर सकता है।

सॉफ्टवेयर :– हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरूरत के मद्देनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं।

स्पर्धा प्रतियोगिता के क्षेत्र में :– विशेषतः यु.पी.एस.सी के क्षेत्र में हिंदी के माध्यम से रोजगार के नए–नए अवसर पैदा हो रहे है। वैश्वीकरण का अंजाम जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। यु.पी.एस.सी. की तैयारी के लिए हिंदी में संदर्भ ग्रंथों की बहुतायत है। विशेषतः भारत की विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अनेक संदर्भ ग्रंथ सहजता से उपलब्ध हो रहे हैं।

हिंदी ऑफिसर :– प्रत्येक सरकारी संस्थान में हिंदी ऑफिसर का एक पद होता है यू.पी.एससी. के माध्यम से इस पद के लिए चुनाव होता है। हिंदी का छात्र मेहनत करे तो वह पद पर आसीन ही सकता है और उचित तनख्वाह पा सकता है। अख्सर यह कहा भी जाता है कि–

'लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।'

इसलिए दिल में हौसला रखकर अगर हिंदी का छात्र रोजगार के लिए अपनी अलग पहचान बनाएगा तो उसमें उसे सफलता निश्चित ही मिलगी ऐसा हामरे मन में विश्वास है।

संवाद लेखन :– आज दूरदर्शन के साथ–साथ नए–नए चैनल्स आ रहे है और इन चैनल्सों की पहचान उन पर प्रस्तुत धारावाहिकों के माध्यम से हो रही है। यहीं एक बात काबीले गौर है वह यह कि कोई भी धारावाहिक तब लोकप्रिय होता है बशर्ते उसमें जीवन का बिंब यथार्थ रूप में हो और यह बात दीगर है कि आज कल टी.वी. धारावाहिकों में यथार्थवाद नहीं अपितु अतियथार्थवाद का चित्रण होता है। गीतलेखन के समान इस क्षेत्र में भी रोजगार की अधिक गुंजाईश है जिसे इन्कार नहीं किया जा सकता। इस लेखन के लिए लेखक के पास चुस्त एवं दुरूस्त शब्द प्रयोग, संप्रेषणशीलता, मनोरंजन, अभिव्यक्ति एवं सामाजिक परिवेश की जानकारी होना महत्त्वपूर्ण है। भाषा प्रभुत्व इन सभी गुणों का तौलनिक निर्वाह करते हुए सफल संवादलेखन बना सकता है।

आज ब्लॉग एवं ट्विटर नए रूप में उभर रहे हैं। एक रूप से इन्हें हम पत्रकारिता ही मान सकते हैं। ब्लॉग लेखन के माध्यम से भी धन प्राप्ति हो सकती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी छात्र के लिए अनुवाद, लेखन, पत्रकारिता, कॉल सेंटर, अध्यापन के साथ–साथ इलेक्ट्रनिक मिडिया का क्षेत्र भी खुला है। सामने असीम क्षितिज है जो आप को बुला रहा है। जरूरत है क्षितिज के उपर पर जाने की जहाँ अनगिनत मौके आप की राह देख रहे हैं और पुकार रहे है। केवल आवश्यकता है उनकी पुकार को अपनाने की। हिंदी के छात्र अपने आप को पहचाने, अपनी नई पहचान बनाए, तब अपने रोजगार का निर्माण होगा। इसलिए अपनी भाषिक क्षमता बढ़ाकर हिंदी के छात्र रोजगार क्षेत्र में जिस दिन उतरेंगे उनका भविष्य निश्चित ही उज्जवल एवं आशादायक है ऐसा हम मानते हैं। हिंदी भाषा रोजगार की नई–नई उपलब्धियाँ लेकर हमारे सामने आई है।

Email Id- Prof.dipashrishete@gmail.com
Mob. No.- 9011714379 / 8830475204

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 69-72

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं

–डॉ. सी.एल. महावर

सह आचार्य (हिंदी विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

व्यक्ति के जीविकोपार्जन से भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके माध्यम से व्यापार करना, सेवा देना, नौकरी करना सरल एवं सुगम होता है। हमारे देश में लम्बे समय से यह धारणा बनी हुई थी कि यदि बेहतर जीवनयापन करना है और अधिक धनोपार्जन करना है तो अंग्रेजी ही वह भाषा है जो कि इसमें सहायता कर सकती है। परन्तु विगत कुछ वर्षों में स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है और हमारे देश की स्थानीय भाषाओँ के साथ साथ राजभाषा हिंदी में भी धनोपार्जन एवं रोजगार के भरपूर अवसर आज की तारीख में सहज ही उपलब्ध हैं।

गांवों, कस्बों और छोटे शहरों से हिंदी जब अपने संपन्न भाषाई संस्कार, देशी कहावतों, मुहावरों, किस्से–कहानियों और अंतर्निहित अनगिनत विशेषताओं के साथ रोजगार के वर्तमान प्रतिस्पर्धी मैदान में पहुंचती है, तो हिंदी जानने वालों को विजेता बना देती है। प्रौद्योगिकी से लेकर रोजगार देने वाली नए दौर की तमाम रचनात्मक विधाओं में आज हिंदी का बोलबाला है। हिंदी रोजगार की, बाजार की कमाऊ भाषा बन गई है। पिछले कई वर्षों से ऐसा किया जा रहा है। हिन्दी के अस्तित्व को बचाने के लिए नारे गढ़े जा रहे हैं और इसके सिर पर मंडराते खतरे गिनाए जा रहे हैं। लेकिन तब से अब तक न तो हिन्दी का अस्तत्वि मिटा है और ही इस पर कोई संकट या खतरा आया गहराया है और न ही ऐसा हुआ है कि हिन्दी बचाओ अभियान चलाने से यह अब हमारे माथे का ताज हो गई है। अभी न तो हिन्दी का अस्तित्व कम हुआ है और न ही इस पर कोई संकट है।

हिन्दी की अपनी लय है, अपनी चाल और अपनी प्रकृति। इन्हीं के भरोसे वो चलती है और अपनी राह बनाती रहती है। सतत प्रवाहमान किसी नदी की तरह। कभी अपने बहाव में तरल है तो कहीं उबड़–खाबड़ पत्थरों से टकराती बहती रहती है और वहां पहुंच जाती है, जहां उसे जाना होता है, जहां से उसे गुजरना होता है।

भारत ही नहीं, विदेशों में भी हिन्दी की पढ़ाई करने को लेकर विद्यार्थियों में रुचि बढ़ी है। आज हिंदी भारत के बाहर 260 से अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। इनमें अमेरिका के 67 और चीन के 20 विश्वविद्यालय शामिल हैं। ऐसा समय है, जबकि दुनियाभर में कई भाषाओं पर अस्तित्व बचाए रखने का संकट मंडरा रहा है। ऐसे में भारत के बाहर के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन और अध्यापन, दोनों के अवसर लगातार बढ़े हैं। इन विश्वविद्यालयों में प्रवासी भारतीयों के अलावा, विदेशी छात्र भी हिंदी में ग्रैजुएट से लेकर पीएच.डी.

तक करते हैं। मॉस्को में रूसी–भारतीय मैत्री संघ शदिशाश के अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर सिंह बताते है कि विदेशी धरती पर भारतीय संस्कृति और सभ्यता की अपनी एक अलग पहचान है। उसमें भी हिंदी भाषा को लेकर खासा आकर्षण है। भारतीय संस्कृति को समझने और जानने के लिए विदेशी छात्र हिंदी पढ़ते हैं। रूस के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी का अलग विभाग हैं। इसमें पूर्णकालीन प्राध्यापकों की नियुक्ति होती है। उनकी संस्था विदेश में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करती है। रूस में जो भारतीय व्यवसायी और कंपनियां हैं, उनमें हिंदी जानने वाले विदेशी छात्रों को नौकरी के अवसर मिलते हैं।

कोशिश यही होती है कि हिंदी केवल भारतीयों के लिए ही नहीं, विदेशी विद्यार्थियों के लिए भी रोजगार परक भाषा बने। मुंबई विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय बताते हैं कि विदेशों में भी जहां भारतीय बसे हैं, वहां पर हिंदी में ही बात करते हैं। विदेशों में ज्यादातर उन्हीं शिक्षकों ध्व्याख्याता की मांग है जो हिंदी के अलावा उस देश की भाषा भी जानते हैं। मसलन कोई शिक्षक ध्व्याख्याता यदि कोरिया, जापान, चीन, रूस, जर्मनी, फ्रांस आदि किसी भी देश में जा रहा है तो उस देश की भाषा का ज्ञान अपेक्षित माना जाता है। विदेशों में हिंदी प्राध्यापकों को भेजने का कार्य 'भारतीय सांस्कृतिक और संबंध परिषद' तथा 'केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा' द्वारा किया जाता है। केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा भी प्राध्यापकों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। पुस्तक 'हिंदी का विश्व संदर्भ' में अनेक विश्वविद्यालयों की सूची है, जहां पर हिंदी अध्ययन– अध्यापन की सुविधा उपलब्ध है।

यूनिकोड भाषा कभी किसी अभियान के भरोसे जिंदा नहीं रहती। वो देश, काल और परिस्थति के अनुसार अपनी लय बनाती रहती है। स्वतः ही उसकी मांग होती है और स्वतः ही उसकी पूर्ति। यह 'मांग और आपूर्ति' का मामला है। पिछले दिनों या वर्षों में हिन्दी की लय या गति देख लीजिए। दूसरी भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की मांग है, इसलिए कई किताबों के अनुवाद हिन्दी में हो रहे हैं, कई अंतराष्ट्रीय बेस्टसेलर किताबों के अनुवाद हिन्दी में किए जा रहे हैं। क्योंकि हिन्दी–भाषी लोग उन्हें पढ़ना चाहते हैं, और वे हिन्दी पाठक किसी अभियान के तहत या किसी मुहिम से प्रेरित होकर हिन्दी नहीं पढ़ना चाहते, बलकि उन्हें स्वाभाविक तौर पर बगैर किसी प्रयास के हिन्दी पढ़ना है, इसलिए हिन्दी उनकी मांग है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी में ही चर्चा और विमर्श होते हैं, यह स्वतरू है। हिन्दी में लिखा जा रहा है, हिन्दी में पढ़ा जा रहा है। हाल ही में कई प्रकाशन हाउस ने हिन्दी में अपने उपक्रम प्रारंभ किए हैं। गूगल हो, ट्वटिर या फेसबुक या सोशल मीडिया का कोई अन्य माध्यम। हिन्दी ने अपनी जगह बना ली है, हिन्दी में ही लिखा, पढ़ा और खोजा जा रहा है। ऐसा कभी नहीं होता कि हमारी अंग्रेजी अच्छी हो जाएगी तो हिन्दी खराब हो जाएगी। बल्कि एक भाषा दूसरी भाषा का हाथ पकड़कर ही चलती है। एक दूसरे को रास्ता दिखाती है। अगर हमारे मन में किसी एक के प्रति कोई भी द्वेष न हों।

दुनियां की किसी भी भाषा में यही होता है, ऐसा नहीं हो सकता कि हम अंग्रेजी को खत्म कर के हिन्दी को बड़ा बना देंगे या अंग्रेजी वाले हिन्दी को खत्म कर के अंग्रेजी को बड़ा कर सकेंगे। अगर हमें सच में कोई आशंका है कि हिन्दी पर कोई संकट आ जाएगा तो उसके अभियान का हिस्सा बनने और उस पर बात करने के बजाए हिन्दी में कोई काम कर डालिए। हिन्दी के व्याकरण पर कोई किताब लिख डालिए या हिन्दी के सौंदर्य पर कोई दस्तावेज ही तैयार कर लीजिए। यह लिख दीजिए कि समय के साथ अपना रूप बदलकर अब 'नई

हिन्दी' कैसी नजर आने लगी है। प्राचीन हिन्दी और नई हिन्दी में अंतर पर एक रिसर्च कर लीजिए कि अब किस तरह नई हिन्दी हम सब के लिए सुविधाजनक और सरल हो गई है। कुछ ऐसा लिख दीजिए हिन्दी को लेकर कि हजार बार समय के थपेड़ों से भले उस पर घाव आ जाए, पर उसकी आत्मा नष्ट न हो। आप और हम हिन्दी को बना भी नहीं सकते और मिटा भी नहीं सकते, हिन्दी को आपके ढकोसले की जरुरत नहीं, यह स्वतः स्वाभिमान और स्वतः व्यवहार है। हिंदी केवल राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बना रही है। हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ हो तो कहां–कहां आपको मौका मिल सकता है और आप अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

हिंदी अधिकारी :–

विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते हैं। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि सभी संस्थानों में हिंदी अधिकारी की नियुक्ति होगी। भारत सरकार व निजी संस्थानों में हिंदी अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मिल सकता है। देश–विदेश के सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार के रूप में भी नियुक्ति हो सकती है।

अनुवादक व द्विभाषिया :–

प्रिंट मीडिया सहित कई सरकारी विभागों में अनुवादक व हिंदी लेखक के रूप में मौके उपलब्ध हैं। कई संस्थान अनुवादकों को कॉन्ट्रैक्ट आधार पर रोजगार देते हैं। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अपना लेख लिखने वाले जानेमाने अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के लेख का अनुवाद हिंदी में किया जाता है। हिंदी/अंग्रेजी में फिल्मों, विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही काम है। इसी तरह द्विभाषी दक्षता के साथ कोई भी फ्रीलान्स अनुवादक के रूप में काम कर सकता है और अपनी ट्रांसलेशन कंपनी भी खोल सकता है।

मीडिया :–

टीवी और रेडियो चौनल्स और पत्रिकाओंध्समाचार पत्रों के हिंदी संस्करणों में हुई बढ़ोतरी के कारण इन क्षेत्रों में भी नौकरियों के अवसर कई गुना बढ़े हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। इन लोगों का अधिकांश कार्य हिंदी में होता है। हिंदी में शैक्षणिक योग्यता रखने के साथ–साथ पत्रकारिता/जनसंचार में डिग्री/डिप्लोमा की योग्यता के साथ एक से अधिक स्थानों पर नौकरी का अवसर पा सकते हैं।

फ्रीलांसिंग व स्क्रिप्ट राइटिंग :–

फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापन कंपनियों में स्क्रिप्ट राइटर्स की मांग कम नहीं है। प्रिंट मीडिया में भी क्रिएटिव व तकनीकी लेखकों की जरूरत बनी रहती है।

टीचिंग :–

टीचिंग का प्रोफेशन तो सदाबहार है। देश के प्रमुख स्कूल–कॉलेजों में नर्सरी से लेकर पीजी लेवल तक टीचिंग का स्कोप है, जबकि विदेशी संस्थानों में भी हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति होती है। हिंदी से बीए व बीएड करने के बाद स्कूलों में हिंदी अध्यापक की नौकरी मिल जाती है। कॉलेज के स्तर पर अध्यापन करने वाले छात्रों को एमए के बाद एमफिल और पीएचडी करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता का पद मिल सकता है। पीएचडी होल्डर

कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर देश में कहीं भी लेक्चरर की नौकरी पा सकते हैं। अध्यापन के लंबे अनुभव पर वे रीडर व प्रोफेसर भी बन सकते हैं।

इंटरनेट :–

आज हिंदी की कई वेबसाइट उपलब्ध हैं। विभिन्न हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर हैं। ऐसे में पोर्टल पर भी जॉब के अवसर उपलब्ध होने लगे हैं।

कॉल सेंटर :–

डोमेस्टिक कॉल सेटर्स में हिंदी के आधार पर भी नौकरी मिलने लगी है। टेलीकम्युनिकेशन में भी हिंदी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है।

सॉफ्टवेयर :–

हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरुरत के मद्देनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं।

प्रतियोगी परीक्षा :–

हिंदी से स्नातक करने के बाद कई प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्विस के अलावा रेलवे व बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर हो सकते हैं।

अब यह समय की मांग है कि अब वैश्विक परिवर्तन के इस दौर मैं हम हर भाषा को सम्मान दें और अपनी जरूरतों के अनुरूप अन्य भाषाओँ की भी जानकारी रखें परन्तु यह तथ्य भी स्थापित हो चुका है की हमारी अपनी भाषा हिंदी भी रोजगार का एक सशक्त माध्यम है और हिंदी में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं।

संदर्भीकरण :–

1. अभ्युदय त्रैमासिक पत्रिका, भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय भोपाल, जुलाई–सितम्बर, 2019
2. कामकाजी हिंदी : भूमंडलीकरण के दौर में, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2006
3. बुद्दिदा अर्धवार्षिक पत्रिका, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर, सितम्बर, 2013
4. प्रशासन में हिंदी, हरिबाबू कंसल, सुधांशु बंधु प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
5. राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1989

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 73-77
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा–जीविकोपार्जन के अवसर एवं संभावनाएं

–आरती शर्मा

पीएच.डी.शोधार्थी, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

हिंदी केवल राजभाषा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बना रही है। चाहे वह अध्यापन का कार्य हो या कॉल सेंटर्स, टूरिज्म और इंटरप्रेटर का, सभी में अवसर ही अवसर हैं। जहां तक स्किल का सवाल है, तो छात्र को हिंदी ऑनर्स या एमए करते समय भाषा की अच्छी समझ जरूरी है। हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन एक गहन पठन–पाठन की प्रक्रिया है। पढ़ने–लिखने, विचार करने और किसी भी सिद्धांत और उसके व्यावहारिक पक्ष को समझने का भरपूर मौका इस क्षेत्र में मिलता है। इस संबंध में दिल्ली के सत्यवती कॉलेज के प्रोफेसर मुकेश मानस का कहना है कि इसमें कविता, कहानी के अलावा मीडिया, अनुवाद और रचनात्मक लेखन जैसी कई चीजें हैं, जो करियर बनाने में मदद करती हैं। हिंदी से ऑनर्स करने वालों को नौकरी के लिए कोई दिक्कत नहीं होती। वे विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में हो सकते हैं। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जहां छात्र अपनी किस्मत आजमा सकते हैं

हिन्दी दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इस समय दुनियाभर में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से ज्यादा है, वहीं हिन्दी समझ सकने वाले लोगों की संख्या करीब 1 अरब से भी ज्यादा है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिन्दी के इस्तेमाल में इजाफा हुआ है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर अब हिन्दी का ही दबदबा है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिन्दी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है। हिंदी भाषा में करियर की उज्जवल संभावना है।

हिन्दी अध्यापन :–

हिन्दी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक करियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है। उच्च शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक शिक्षण के अवसर योग्यतानुसार उपलब्ध रहते हैं और इसे सदाबहार करियर माना जाता है। समय–समय पर आयोजित होने वाली 'राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा' (NET) में शामिल हो सकते हैं। इसमें अधिकतम अंक प्राप्त करने वालों को 'जूनियर रिसर्च फेलोशिप' (JRF) मिल सकती है। जिसके माध्यम से शोधकार्य (PHD) करने वाले छात्रों को हर महीने 30,000ध– छात्रवृत्ति दी जाती है। यह परीक्षा पास करने वालों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति के अवसर मिल सकते हैं।

हिन्दी राजभाषा अधिकारी :–

केंद्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहां हर प्रकार

से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आप हिन्दी विषय में स्नातक हैं और एक विषय के रूप में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी के रूप में करियर बनाया जा सकता है।

हिन्दी पत्रकारिता :–

हिन्दी पढ़ने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इस दौर में हिन्दी अखबार और न्यूज चौनल की संख्या भी काफी है। समाचार चौनलों और अखबारों के अलावा भी हिन्दी के अनेक चैनल और पत्र–पत्रिकाएं हैं जहां हिन्दी भाषी प्रतियोगियों के लिए दरवाजे खुले हैं।

हिन्दी अनुवादक दुःभाषिया :–

ट्रांसलेशन यानि अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है। दुनियाभर में जैसे–जैसे हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे–वैसे अनुवादकों और द्विभाषाविदों की मांग बढ़ती जा रही है। कई देशी–विदेशी मीडिया संस्थान, राजनैतिक संस्थाएं, पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े–बड़े होटलों में अनुवादकों और दुभाषियों की अच्छी खासी मांग है।

रेडियो जॉकी और समाचार वाचक :–

रेडियो प्रस्तोता अमीन सयानी की आवाज किसने नहीं सुनी। नवेद की आवाज से कौन नावाकिफ है। इन्होंने हिन्दी में रेडियो जॉकी का कॅरियर बनाया। ऐसी बहुत सी प्रतिभाएं हैं जो इस क्षेत्र में नाम और दाम कमा रही हैं। यदि आप भी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आवाज अच्छी है तो यह एक करियर ऑप्शन है। इसके साथ ही समाचार वाचक भी एक विकल्प है। बस आपको अपनी सधी हुई प्रभावशाली आवाज में समाचार पढ़ने होते हैं और देश–विदेश की घटनाओं की जानकारी देनी होती है।

हिन्दी में क्रिएटिव राइटिंग :–

रचनात्मक लेखन जिसे आज के युवाओं की भाषा में क्रिएटिव राइटिंग कह सकते हैं। इस क्षेत्र में 'स्वतंत्र लेखन' और नियमित लेखन किया जा सकता है। फिल्म, टीवी, रेडियो, वेबसाइट, पोर्टल आदि क्षेत्रों से जुड़कर हिन्दी में लोकप्रिय लेखन किया जा सकता है और बाहर रहकर भी सेवाएं दी जा सकती हैं। हालांकि दोनों में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों ही रूप में आप काम एक ही कर सकते हैं। ब्लॉग लेखन भी एक ऑप्शन है।

अध्यापन :–

हिंदी से बीए व बीएड करने के बाद स्कूलों में हिंदी अध्यापक की नौकरी मिल जाती है। कॉलेज के स्तर पर अध्यापन करने वाले छात्रों को एमए के बाद एमफिल और पीएच.डी. करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता का पद मिल जाता है। पीएच.डी. होल्डर कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर देश में कहीं भी लेक्चरर की नौकरी पा सकते हैं। अध्यापन के लंबे अनुभव पर वे रीडर व प्रोफेसर भी बन सकते हैं।

मीडिया :–

हिंदी से स्नातक करने वालों के लिए मीडिया एक बड़ा अवसर लेकर आया है। देश–विदेश में फैला यह जाल हिंदी के छात्रों को कई तरह से काम करने का अवसर प्रदान करता है। हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ होने के कारण छात्रों को पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करने में आसानी होती है। स्टूडेंट्स बीए या एमए के बाद पत्रकारिता का डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते हैं। यह कोर्स करने के बाद किसी भी पत्र–पत्रिका में

रिपोर्टर या उप संपादक बन सकते हैं।

भारत सरकार का करीब हर संस्थान अपने यहां से हिंदी में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करता है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशन से लेकर संपादन तक में हिंदी के छात्रों की जरूरत पड़ती है। प्रिंट मीडिया के अलावा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी हिंदी जानने वालों को प्राथमिकता दी जाती है। इसके अलावा रेडियो में भी रोजगार के अनेक अवसर हैं।

पर्यटन :–

पर्यटन के क्षेत्र में भी इनके लिए रोजगार के अवसर हैं। इस क्षेत्र में बेहतर करने के लिए कल्चरल टूरिज्म मैनेजमेंट में भी डिप्लोमा कर सकते हैं।

फिल्म :–

फिल्म और टीवी सीरियल में भी आप अपनी किस्मत आजमा सकते हैं। यदि आपको शब्दों से खेलने में मजा आता है, तो आपको यहां भी काम मिल सकता है और आपकी कल्पना उड़ान भरती है, तो स्क्रिप्ट राइटर के तौर पर आप यहां कोशिश कर सकते हैं। इसके अलावा आप गीतकार भी बन सकते हैं।

हिंदी अधिकारी :–

हिंदी के छात्रों के लिए विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते हैं। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि सभी संस्थानों में हिंदी अधिकारी को रखना पड़ेगा। भारत सरकार व निजी संस्थान में हिंदी अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर सामने आता है। देश–विदेश में सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार के रूप में भी काम करने का अवसर भी मिल सकता है।

यदि आप किसी दूसरी भाषा पर पकड़ रखते हैं, तो अनुवादक भी बन सकते हैं। विभिन्न ट्रेवल एजेंसियां और सरकारी व निजी संस्थान ऐसे लोगों को मौका देते हैं। मीडिया के क्षेत्र में भी ऐसे लोगों की काफी डिमांड होती है। हिंदी का ज्ञान होने के साथ–साथ आपको अंग्रेजी का भी ज्ञान होना चाहिए। कर्मचारी चयन आयोग हर साल हिंदी अनुवादकों की भर्ती करता है।

हिंदी से स्नातक करने के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्विस के अलावा रेलवे व बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर हो सकते हैं।

हिंदी भाषा और साहित्य के छात्र लिंग्विस्टिक का भी कोर्स कर सकते हैं और अच्छी नौकरी पा सकते हैं। इसके साथ ही अगर हिंदी में अच्छी पकड़ है, तो क्रिकेट कमेंटरी से लेकर फैशन जगत व एड एजेंसी और एनजीओ में भी करियर बनाया जा सकता है।

हिंदी अपने देश की राजभाषा तो है ही। आज के दौर में इसमें रोजगार के अवसरों में भी कमी नहीं है। इसमें आप अपनी प्रतिभा के द्वारा या शैक्षिक योग्यता बढ़ाकर बेहतरीन करियर संवार सकते हैं। यकीनन वैश्वीकरण और निजीकरण के वर्तमान परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते आर्थिक संबंधों को देखते हुए संबंधित आर्थिक साझेदार देशों की भाषाओं की अंतर शिक्षा की जरूरत महसूस की जाने लगी है। इसके साथ ही विदेशियों में भी हिंदी भाषा के प्रति रुचि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि कई देशों ने अपने यहां हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है। विदेशी छात्र भी हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा मानते हैं।

भूमंडलीकरण के बाद से हिंदी में तेजी से बदलाव देखने को मिला है। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में 100 से भी ज्यादा संस्थानों में हिंदी की विधिवत पढ़ाई होती है। बड़ी संख्या में विदेशी छात्र हिंदी भाषा सीखने के लिए भारत आ रहे हैं। कई तकनीकी रोजगार, हिंदी के जरिए मिलते नजर आ रहे हैं। हिंदी के भविष्य और बाजार को देखते हुए कहना गलत न होगा कि आने वाला समय हिंदी के प्रोफेशनल्स के लिए और भी रोजगारपरक होगा। आज स्थिति यह है कि हिंदी भाषा के अच्छे जानकारों की कमी बढ़ती जा रही है। मांग बहुत अधिक है पर पूर्ति हेतु योग्य प्रोफेशनल्स नहीं मिल रहे हैं। यकीन के साथ यह कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में आपको रोजगार के बेशुमार अवसर मिलेंगे।

हिंदी भाषा में स्नातक, स्नातकोत्तर, एमफिल, पीएच.डी. आदि की जा सकती है। इसके अलावा डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। इन कोर्सों या अन्य हिंदी भाषा से जुड़े कोर्स जैसे अनुवादक, रचनात्मक लेखन करने के उपरांत रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो जाते हैं। यकीनन हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएं अनंत हैं। नौकरी के अवसर गौरतलब है कि हिंदी भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढ़ते अंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ, हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त इजाफा हुआ है।

सरकारी विभाग :–

केंद्र सरकार और हिंदी भाषी राज्यों की सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में कार्य करना अनिवार्य है। अतः केंद्र–राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाषा प्रबंधक, आशुलिपिक, टंकक जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के अधीन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग काम करता है। यहां पर हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को परिभाषित और नए शब्दों का विकास किया जाता है। यहां भी अंग्रेजी की जानकारी के साथ हिंदी भाषा में दक्ष लोगों के लिए रोजगार के ढेरों अवसर हैं। हिंदी की पहुंच और बढ़ती लोकप्रियता के चलते प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थानों ने न केवल हिंदी प्रकाशनों की शुरुआत की है अपितु श्रेष्ठ बिक्री लक्ष्य प्राप्त करने वाली पुस्तकों के बड़े पैमाने पर अनूदित रूपांतर हिंदी में प्रकाशित करना शुरू कर दिए हैं।

अतः इन संस्थानों में भी अनुवादक, संपादक और कंपोजर के रूप में करियर के अवसर मौजूद हैं। पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रकाशकों के यहां प्रूफ रीडिंग, हिंदी टाइपिंग जानने वालों की बहुत मांग है। अंग्रेजी टाइपिंग करने वाले आपको बहुत मिल जाएंगे लेकिन हिंदी में टाइपिंग करना आज भी लोगों के लिए मुश्किल काम है। यदि हिंदी भाषा पर पकड़ बनाने के साथ–साथ हिंदी टाइपिंग भी सीख ली जाए तो प्रकाशकों के यहां जॉब करके अच्छा पैसा कमाया जा सकता है।

विदेशों में अवसर :–

हिंदी भाषा में स्नातकोत्तर और पीएचडी कर चुके उम्मीदवारों के लिए विदेशों में भी रोजगार के अवसर हैं। कुछ देशों द्वारा हिंदी को बिजनेस की भाषा स्वीकार किए जाने के फलस्वरूप विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षकों की जबर्दस्त मांग है।

शिक्षण कार्य :–

भारत में स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक के तौर पर भी परंपरागत शिक्षण व्यवसाय को

अपनाया जा सकता है। अध्यापन के क्षेत्र में अपना करियर बनाने वालों के लिए भी अनगिनत अवसर हैं। बीए, बीएड करने के बाद टीजीटी अध्यापक माध्यमिक विद्यालय शिक्षक बना जा सकता है। आज टीजीटी अध्यापकों की मांग पूरे देश में है। उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की मांग भी कम नहीं है। एमए हिंदी में 55 प्रतिशत अंक लाने और नेट क्लियर करने के बाद एमफिल, पीएच.डी. करने से महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाने की योग्यता हासिल हो जाती है। हिंदी प्राध्यापकों की नियुक्तियां गैर हिंदी भाषी प्रदेशों में भी होती हैं।

विज्ञापन जगत में विदेशी कंपनिया भी अब हिंदी में विज्ञापन तैयार करवा रही हैं। यदि आप विज्ञापन के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं तो इस क्षेत्र में नाम और शोहरत की कोई कमी नहीं है। देश में विदेशी चैनलों, विदेशी मीडिया का आगमन हुआ तो लगने लगा कि हिंदी का वजूद घट जाएगा, लेकिन हिंदी की उपयोगिता का ही आलम है कि आज सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल एवं सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला समाचार पत्र हिंदी में ही है। हिंदी सिनेमा भी लोगों के लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। बीबीसी सहित कई वेबसाइट्स अपना हिंदी पोर्टल चला रहे हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने भी हिंदी के माध्यम से वर्चस्व स्थापित करने के लिए हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टम शुरू किया है। हिन्दी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी बढ़ रही है। यूनिकोड के आने से अब हिन्दी में टाइप करना आसान हो गया है। इससे हिन्दी से जुड़े लोगों को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। वैसे देखें तो तरह–तरह अवसर हिन्दी के जानकारों के लिए अच्छे अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। हिन्दी वेब पत्रकारिता ने हिन्दी के कारोबार को अच्छा–खासा बढ़ावा दिया है। दिल्ली के कुछ कॉलेजों में यह विषय लोकप्रिय भी है। आने वाले समय में हिन्दी को वैश्विक भाषा बनाने की दिशा में और काम करने की जरूरत है।

संदर्भीकरण :–

1. कामकाजी हिंदी : भूमंडलीकरण के दौर में, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2006
2. प्रशासन में हिंदी, हरिबाबू कंसल, सुधांशु बंधु प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
3. राजभाषा भारती : राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, दिल्ली, जुलाई–सितम्बर, 2004
4. राजभाषा हिंदी, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1989

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 78-81

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा तथा रोजगार

-सुश्री. स्वाति हिराजी देडे

बी.ए., बी.एड्., एम्.ए., एम्.एड्, धारासुर मर्दिनी देवी मंदिर, दर्गा रोड़, उस्मानाबाद।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिसके द्वारा मन की बात बताई जाती हैं। सामन्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता हैं। मनोभावों की अभिव्यक्ति के प्रयत्न ने भाषा को जन्म दिया जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों अपने सुख–दुख को एक दूसरे व्यक्ति से कहता हैं तथा सुनता है। इसी भाषा के माध्यम से आज मनुष्य अपने भाषाभिव्यक्ति के साथ–साथ विचार विनिमय करता है। जब भाषा व्यापक शक्ति ग्रहण कर लेती हैं, तब आगे चलकर राजनीतिक और सामाजिक शाक्ति के आधार पर राजभाषा या राष्ट्रभाषा का स्थान पा लेती हैं।

ऐसी भाषा सभी सीमाओं को लाँघकर अधिक व्यापक और विस्तृत क्षेत्र में विचार–विनिमय का साधन बनकर सारे देश की भावात्मक एकता में सहायक होती है। भारत में पन्द्रह विकसित भाषाएँ हैं पर हमारे देश के राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी भाषा को 'राष्ट्रभाषा' (राजभाषा) का गौरव प्रदान किया है। संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद 14 सिंतम्बर सन 1949 का हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। हिंदी दूनिया की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हैं। इस समय दुनियाभर में हिंदी बोलने वालों की संख्या 55 करोड से ज्यादा है। हिंदी भाषा लगातार लोकप्रिय होती जा रही है, बहुत सारे प्लेटफॉर्म पर हिंदी का बोलबाला है। इसके साथ ही हिंदी में रोजगार के विकल्पों में भी इजाफा हो रहा हैं।

हिंदी भाषा और रोजगार :-

स्वंतत्रता के पश्चात भारतीयों के मानस में अंग्रेजी का वर्चस्व था। आज हिंदी बोलने वाले व्यक्ति अंग्रेजी बोलने वालों के सामने बिना हीन भाव की अनुभूति किए अपनी भाषा में बोलना जारी रखता है। जनमानस में हिंदी की प्रतिष्ठा निरंतर बढ रही हैं। आज हिंदी भाषी प्रदेशों की समस्त शासकीय सेवाओं एंव हिंदी के माध्यम से प्रवेश सम्भव है। आज हर एक कर्मचारियों को हिंदी सीखना अनिवार्य होता है। हिंदी भाषा कौशल्य प्राप्त करने के पश्चात प्राप्त होने वाले रोजगार अवसर बहुत सारे है।

हिंदी अध्यापक :–

विद्यार्थी अपने शिक्षक का अनुकरण कर अपने ज्ञान में बढौतरी करता है। प्रत्येक अध्ययन विषय यह निश्चित करता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति का उपयोग किसी न किसी स्तर पर करेगा। अतः प्रत्येक अध्ययन क्षेत्र का किसी न किसी व्यवसाय से संबंध होता हैं। अध्यापक यह एक लोकप्रिय कैरियर विकल्प हैं। आने वाली पीढीयों को भाषा का ज्ञान और क्षमता प्रदान करने का कार्य एक अध्यापक बनकर ही किया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता बढने के साथ–साथ भारत से बाहर के छात्रों कों हिंदी सिखाने के अवसर भी है। सरकारी और निजी स्कूलों में छात्रों की उम्र के आधार पर नौकरी के अवसर उपलब्ध है।

कॉल सेंटर :–

बेरोजगारी के इस दौर में कॉल सेंटर ने लाखों युवाओं को नौकरी देने में काफी मदद की है। कॉल सेंटर में काम करने के लिए आपको हिंदी भाषा कौशल्य हासिल करना अत्यंत आवश्यक है। अगर आप बात करने की कला जानते है। और आपका हिंदी भाषा ज्ञान अच्छा है तो आप यह जरूर नौकरी पा सकते है आज भारत में बड़े–बड़े शहरों में बहुत सारे कॉल सेंटर बन गए है। जहां पर बहुत से युवा नौकरी कर सकते है। आपकी हिंदी भाषा का ज्ञान अच्छा है तो आपके लिए कॉल सेंटर यह एक बहुत अच्छा रोजगार विकल्प हो सकता है।

हिंदी पत्रकारिता :–

पत्रकारिता यह एक साहसी तथा समाज उपयोगी ऐसा रोजगार अवसर है। हिंदी पढने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और प्रतिभावान युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं है। पत्रकारिता ऐसा क्षेत्र है जिसमें युवाओं के लिए रोजगार की कमी नहीं है। वर्तमान में समाचार पत्रों तथा न्यूज चैनलों की बढती संख्या से युवाओ के लिए रोजगार की संभावनाएं बहुत ज्यादा हो गई है। इसमें आप रोजगार के साथ–साथ आप समाज उपयोगी कार्य कर अपना योगदान इस समाज के प्रगति के लिए भी दे सकते है।

हिंदी अधिकारी राजभाषा अधिकारी :–

केंद्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती हैं जो अपने यहां हर प्रकार से हिंदी के प्रयोग को बढावा देते हैं और हिंदी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। हिंदी राजभाषा अधिकारी भारतीय केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी अनुवाद के अलावा राजभाषा हिंदी के अन्य कामकाज के कार्य करते हैं राजभाषा अधिकारी पदों का सृजन राजभाषा विभाग के आदेशानुसार हर कार्यालयों में किया जाता है। केंद्र सरकार के कार्यालयों उपक्रमों, बैंक आदि में न्युनतम हिंदी पदों को सृजित करने के बारे में गृह मंत्रालयों के राजभाषा विभाग ने विस्तृत आदेश जारी किए गए हैं।

अनुवादक तथा द्विभाषीय :–

आज अनुवादकों की बहुत मांग हैं, चाहे वह अधिकारिक दस्तावेजों, समाचार लेख या संपूर्ण पुस्तकों का

अनुवाद करना हो। आप हिंदी भाषा से अन्य भाषाओं में या अन्य भाषाओं का हिंदी भाषा में दस्तावेजों का अनुवाद कर सकते हैं तो यह एक रोजगार का माध्यम बन सकता है। अनुवादक बनने के लिए आपके पास हिंदी तथा अन्य किसी दूसरी भाषा में योग्यता प्राप्त करना आवश्यक हैं। एक भाषा में प्रकट किये गये विचारों को दूसरी भाषा में रुपान्तरित करने को अनुवाद कहते हैं। अनुवाद करने वाल को अनुवादक और अनुवाद की गई हुई रचना को अनुदित कहते हैं। अनुवाद की श्रेष्टता अनुवादक की योग्यता पर निर्भर हैं।

रेडियो जॉकी और समाचार वाचक :–

रेडियो या समाचार वाचक यह दो युवाओं के बेहद पंसदीदा कार्यक्षेत्र है जहां पर काम कर नाम पैसा शौहरत सब हासिल हो सकता है। यदि आप भी हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आवाज अच्छी हैं तो यह एक कैरियर ऑपशन हैं इसके साथ समाचार वाचक भी एक विकल्प हैं। आपको बस हिंदी भाषा का सही ज्ञान और भाषा पर सही पकड़ होनी चाहिए। अगर आप हिंदी में कुशलता से बातचीत करने में सक्षम है तो आपको यहाँ नौकरी के आवसर प्राप्त हो सकता है। लोगों से बाते करना और लोगों की बातें सुनना पसंद हैं तो रेडियों जॉकी बनकर अच्छी कमाई कर सकते है। समाचार वाचक इस रोजगार में भी आपको खासी शौहरत और पैसा मिल सकता हैं। यहां पर काम कर आप एक ऐसी व्यक्ति बन सकते हैं जिसे पैसों के साथ–साथ काफी लोकप्रियता भी हासिल कर सकते है।

प्रतियोगी परीक्षा :–

बहुत सारे युवा आज सरकारी नौकरी पाने की ख्वाईश रखतें है। आज हर कोई सरकारी नौकरी को एक ठोस रोजगार अवसर के रुप में देखते है। यादि सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए आप प्रयास करना चाहते है तो हिंदी से स्नातक करने के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस, और स्टेट सर्विस के आलावा रेलवे तथा बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर हो सकते हैं। हिंदी विषय में अध्ययन कर आप इस विकल्प को भी चुन सकते है इसके लिए आपको अनेकों प्रतियोगी परीक्षाओं को पास कर एक सरकारी कर्मचारी के रुप में रोजगार उपलब्ध हो सकता है।

संपादन :–

संपादन का कार्य यह बहुत ही कुशलता पूर्वक किया जाना चाहिए होता है। इस कारण अगर आप इस क्षेत्र में आप कार्य कर रोजगार प्राप्त करना चाहते है तो आप को हिंदी भाषा का सही ज्ञान प्राप्त कर यह रोजगार हासिल कर सकेंगें। संपादन कार्य को निष्पादित करने वाला व्यक्ति 'संपादक' कहलाता है। जो व्यक्ति संपादकीय कार्य का निर्देशन नियंत्रण एंव निरीक्षण करता है, उसे संपादक कहते हैं।

हिंदी का उपयोग पत्रकारिता के अलावा विभिन्न प्रकाशनों के लिए एक माध्यम के रुप में किया जाता है। जिसमें पाठ्य पुस्तक, उपन्यास, नाटक, कविता और बहुत कुछ शामिल हैं। प्रत्येक प्रकाशन के लिए लेखक और संपादकों को व्याकरण की सटीकता और पर्याप्त कंटेट सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है। आप हिंदी भाषा कौशल्य प्राप्त करने के पश्चात एक फ्रीलांसर एक लेखक या संपादक के रुप में काम कर सकते है।

पटकथा लेखन :-

हमारी पुरी बॉलीवुड फिल्म उद्योग पुरी तरह से हिंदी पर निर्भर करता है। हिंदी में टेलीविजन शो बढ रहे है। जिसमें नेटफिक्स और अमेजॉन जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म है इन सभी प्रारुपों में उपयोगी जानेवाली भाषा हिंदी है। आप हिंदी भाषा के माध्यम से एक स्क्रिप्ट और गीत लेखन का कार्य करके भी रोजगार का अवसर पा सकते है।

हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में जबर्दस्त प्रगति हुई है। केंद्र सरकार राज्य सरकारों हिंदी भाषी राज्यों में के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। हिंदी को लेकर जो पुरानी मानसिकता है वह टूट जानी चाहिए। हिंदी में भरपुर ताकत हैं जो लोगों को रोजगार तक ले जा सकती हैं। हिंदी में पकड़ बनाने के लिए भाषा दक्षता की जरुरत होती है।

हिंदी के जानकारों की मांग अब विदेशों में भी भारी मात्रा में बढ गई है।

मोबाईल नंबर – 83291991461 / 9075341297

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 82-85
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर

–डॉ. भारती बाळकृष्ण धोंगडे

सहायक प्राध्यापक, कला वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय नांदगाव, नाशिक।

भारत बहुधर्मीय–बहुभाषिक एवं बहुप्रांतीय एक विशाल तथा महान राष्ट्र है। भारत में अस्सी प्रतिशत हिन्दी भाषा को जानने वाले लोग हैं समझते हैं और बोलते हैं। पुष्परुपी अनेक प्रांतों में बिखरे हुए दिलों को जोड़ने का धागा रुपी काम हिन्दी भाषा करती है। अनेकता में एकता लाने की इसमें संपूर्ण शक्ति है। हिन्दी किसी जाती–विशेष, धर्म विशेष, वर्ग विशेष अथवा प्रांत विशेष की भाषा नहीं अपितू सर्वधर्मीय, धर्मनिरपेक्ष हिन्दुस्थान के जनमानस की भाषा है।

भारत सरकार ने हिन्दी प्रचार–प्रसार में अपना योगदान देने हेतू भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसी उच्चतम परीक्षाएँ हिन्दी माध्यम से लेनी प्रारंभ की है। उच्चतम न्यायालय, राज्य का केंद्र के साथ संपर्क करने के लिए अथवा केद्र का राज्य के साथ संपर्क स्थापित करने प्रयोग पर विशेष बल दिया है।

हिन्दी प्रचार–प्रसारार्थ सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों को प्रेरित, प्रोत्साहित कर उन्हें विशेष प्रशिक्षण वेतन–वृद्धि एंव पदौन्नती के प्रावधान किये गये है। राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक, हिंदी की वैज्ञानिक एवं व्यापारिक आदि दृष्टी से हिंदी की महत्ता और उपयोगिता सिद्ध हुई है।

हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी की अत्याधिक लोकप्रियता एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व के कारण आज हिंदी भाषा और साहित्य को वैश्विक रूप प्राप्त हुआ है। जैसे अन्य देशों में हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा बनाने में काफी योगदान है। अमरीका में कुछ स्कूलों ने फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ–साथ हिंदी को भी विदेशी भाषा के रूप में शुरू किया है। हिंदी ने भाषा विषयक कार्य–क्षेत्र में स्वयं के लिए एक वैश्विक मान्यता अर्जित की है।

वैश्विक और निजीकरण तथा कोविड–19 के कारण ऑनलाईन व्यापार के लिए अन्य देशो के साथ भारत के बढते व्यापारिक संबधों को देखते हुए संबधित व्यापारिक साझेदारी हिंदी भाषा के महत्व को समझते हुए तथा विभिन्न विज्ञापनों के माध्यम से युवाओं का रोजगार उपलब्ध करा रहे है। सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी ने अपने आपको स्थापित किया है। हिंदी में भाषा प्रौद्योगिकी में विकास की शुरूआत 1991 में इलेक्ट्रॉनिकी के अधीन बड़ी संख्या में गतिविधियां संचालित की गई, हिंदी की संवैधानिक रूप से स्वीकार्य होने से तीन लाख शब्दों का संग्रह

के काम आय आय टी दिल्ली ने किया।

समाज विज्ञान, व्यावसायिक विज्ञान, सौन्दर्य विषयक, प्राकृतिक विज्ञान वाणिज्य, सरकारी और मीडिया भाषाएं, अनुदित सामग्री, शब्द गणना के लिए साफटवेयर टूल्स भी विकसित किए गए, विभिन्न संस्थानों द्वारा असंख्य शब्दों को मशीन से पढने योग्य संग्रह विकसित किया गया। यह कार्य कर्मचारियों के सहयोग से संभव हुआ अर्थात कईयों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

विभिन्न संगठनों ने हिंदी शब्द संसाधक विकसित कर लिपि में वर्ड प्रोसेसर उपलब्ध कराऐं है। सीडैक पुणे ने जिस्ट टेक्नोलॉजी विकसित की है, जिससे सूचना प्रौद्योगिकी में भारतीय भाषाओं हिंदी का प्रयोग सुविधाजनक हुआ है जिससे रोजगार का अवसर प्राप्त हैं। जब से हिन्दी को राजभाषा का स्थान प्राप्त है, तब से उसकी एक नए सिरे से पहचान आरंभ हुई वह एक साहित्यिक जनमानस की भाषा न रहकर रोजगार प्राप्त करने का माध्यम बनने लगी। हिन्दी का परंपरागत अर्थ स्वरूप तथा अध्ययन व्यावहारिक हो गया है। हर जीवित भाषा में वैज्ञानिक, तकनीकी और उद्यमिता की संभावनाए होती है। एक नये नाम 'प्रयोजमुलक' हिन्दी के रूप में जिसमें प्रशासन, सम्पर्क तथा संप्रेषण महत्वपूर्ण है। अतः केंद्र, राज्यसरकारो के विभिन्न विभागों और इकाईयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक प्रबंधक (राजभाषा) जैसे विभिन्न पदों में रोजगार की भरमार है।

हिंदी ज्ञानोत्पादक भाषा बनी है। हिन्दी भाषा में अभूतपूर्व क्रांति हुई है। मानकीकरण आधुनिकीकरण और परिवर्तनीयता के तीन आधारभूत स्तंभों के साथ व्यवहार्यता के चौथे स्तंभ पर टिकी हुई हिंदी निश्चित रूप से भारतीयों को सम्मानजनक रोजगार दिलाने में सबसे आगे हैं। हिन्दी मे रोजगार की कामना रखनेवालों के लिए निजी टी वी और रेडियो चैनलों की शुरूआत और स्थापित पत्रिकाओं समाचार पत्रों के हिंदी रूपान्तर आने से रोजगार के अवसरों में कई गुणा वृद्धि हुई है। हिंदी मीडिया के क्षेत्र में संपादको, प्रूपरीडरों, न्यूजरीडर्स, उपसंपादकों, रेडियो जॉकी, एंकर्स आदि हिंदी भाषा की संपूर्ण जानकारी रखनेवाले रोजगार जीविका प्राप्त करते है।

विश्व अर्थव्यवस्था में आए व्यापक परिवर्तन से भूमंडलीकरण सूचनाक्रांति के पदार्पण तथा भारत सबसे बडे बाजार के रूप में प्रतिष्ठित होने के वजह से हिंदी जोखिम प्रबंधन, विपणन, वाणिज्य एंव मीडिया की भाषा के रूप में स्थापित हुई है। किसने सच ही कहा है– ''अगर हमारे पास देने को कुछ है तो भले ही हम जंगल में रहते है। दुनिया पगडण्डी (रास्ता) बना लेगी और हम तक पहुँच जाएगी। भारतीय संविधान के संशोधन 1967 के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को कायार्लयीन कार्य के साथ–साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य होगा।

आदेश, नियम, अधिसुचना, प्रतिवेदन, प्रेस, विज्ञप्ति, निविदा, अनुबंध एंव विभिन्न प्रारूपों को हिंदी में बनाना तथा जारी रखना आदि समस्त कार्यो के लिए रोजगार उपलब्ध है। भारतीय सेना में हिंदी अधिकारी के रूप में नियुक्त का अवसर है। कैरियर सेना में जीविका है।

राष्ट्रीयकृत एंव निजी बैकों में हिंदी अधिकारी के पद होते हैं। निजी क्षेत्र के बैंक जैसे आय.सी.आय. सी,एच.डी.एफ.सी आदि भी व्यवसाय बढाने के लिऐ उपनगरों एंव ग्रामीण इलाकों में साधारण परिवेश के लोगों की भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षित करके अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं। इससे ग्रामीण और उपनगरों के बेरोजगार युवाओं को रोजगार उपलब्ध होते है। उसके अलावा भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जो हिंदी भाषियों अपना रोजगार प्राप्त करते है। जैसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कई प्रकाशन संस्थाएँ है जो पुस्तकों के अनुवाद के लिए अनुवादक की मांग करती है।

कोई व्यक्ति एक स्वंतत्र अनुवादक के तौर पर अपनी आजीविका संचालित कर सकता और अपनी खुद की अनूवादक फर्म भी स्थापित कर सकता है। तथा बहुत से पेशेवर अनुवादकों को रोजगार उपलब्ध कराती है। विदेशी एजेंसियों से भी अनुवाद परियोजनाओं के अवसर प्राप्त होते है। अकादमिक स्तर पर विभिन्न विषयों की पाठय सामग्री को हिंदी माध्यम के लिए अनुवाद की आवश्यकता है, जो अपने विषय ज्ञान गंभीरता और संजीदगी से सहज भाषा में लिखने में सक्षम है। वह अपना इस क्षेत्र करियर बनाता है। इसमें ही उच्च शिक्षा, संशोधन में मूल कृतियों के अनुवाद की आवश्यकता होती साथ ही शोध कार्य को टंकीत या सॉफटकाफी या हॉर्डकाफी में प्रस्तुत करने के लिए थीसिस बांयडिग तांत्रिक दृष्टि से रोजगार का विशेष अवसर प्राप्त है।

आज समाज का हर हिस्सा डिजीटलायजेशन के दौर से गुजर रहा है। आज बदलते समय के साथ समाज विभिन्न मीडिया माध्यम से जानने का प्रयास करता है। समाज मुखरित होने का व्यावसायिक स्तर भी महत्व रखता है। स्वव्यवसाय के रूप में अनुवाद को अपनाकर इंटरनेट के माध्यम से कई विदेशी एजेन्सियों से अनुवाद के कई प्रोजेक्ट लिए जा सकते है।

विभिन्न उपभोक्ता उत्पाद जैसे–वाशिंग मशीन, मोबाईल, मिक्सर, एयरकण्डीश्नर, औषधियॉ आदि में अनुवादक उपयोग से संबधित दिशा–निर्देश पुस्तिका को बनाने के लिए हिंदी लेखकों की आवश्यकता होती है। अपने उत्पाद के उपभोक्ता वर्ग का दायरा बढाने के लिए समस्त विश्व मे तकनीक के प्रयोग से हिंदी भाषा की उपयुक्तता सिद्ध हुई है।

साहित्य की अनेक विधाओं का प्रकाशन हुआ है, साथ ही राजनीतिक, रोमांच, रहस्य, विज्ञान, फंतासी आदि विषयों पर सामग्री की मांग हो रही है, व्यक्तित्व विकास एंव सफलता के लिए उपर्युक्त किताबों की मॉग जोर पकड रही है, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक किताबों के लिए विश्वभर से मॉग हो रही है। इनकी प्रतियॉ लाखों मे बिकती हैं। इसलिए हिंदी भाषी अनुवादक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। हम हर वैश्विक प्रकाशन में बहुसंख्यक लोगों के बीच विशेषकर हिंदी क्षेत्र में अपना सिक्का जमा चुकें है।

अतः प्रकाशन घरानों में अनुवादक, संपादक, और कंम्पोजर के रूप में व्यापक अवसर मौजूद है। हिंदी भाषा में स्नातकोत्तरों, विशेषकर जिन्होंने अपनी पी.एच.डी पूरी की है। उन्हें विदेशों में भी रोजगार के अवसर है। कुछ देशों द्वारा हिंदी को बिजनेस की भाषा स्वीकार किए जाने के फलस्वरूप विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा

और भाषा विज्ञान के शिक्षण की काफी मांग बढी है। भारत में स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक के तौर पर भी परंपरागत शिक्षण व्यवसाय को चुना जाता है। भारत में अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का परंपरागत एवं आधुनिक अध्ययन कर युवा अपना रोजगार प्राप्त करते हैं।

जनसंचार माध्यमों में आकाशवाणी दूरदर्शन व सिनेमा आदि के क्षेत्र में आज क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे है।. विभिन्न कंपनियों ने अपने स्थानीय आकाशवाणी चैनल खेल लिए है। दूरदर्शन पर निजी चैनलों ही संख्या असीमीत है, 24 घंटे कार्यक्रम प्रसारित करने की हौड़ है। मनोरंजन उद्योग का सालाना बजट करोडों में पहुंचा है। टी.आर.पी बढाने व प्रतियोगिता का हिस्सा बनाऐ रखने के लिए सभी चैनल नित नये कार्यक्रमों का निर्माण प्रसारण संचालन और अभिनय के क्षेत्र में भी रोजगार उपलब्ध कराते है। आर.जे,वी.जे, डी.जे, के रूप में कार्यक्रम संचालक के तौर पर एक सुनहरे भविष्य के द्वारा हिंदी के माध्यम से खुले है। पटकथा लेखन, संवाद लेखन, स्क्रिप्टलेखन, डबिंग, आर्टिस्ट, गीत लेखन, समाचार लेखन, वाचन संपादन आदि। इनके लिए विधिवत प्रशिक्षण लेकर एक उत्तम जीविका के रूप में अपनाया जाता है।

हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक कैरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है। शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक शिक्षण के अवसर योग्यतानुसार उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने वालों को जूनियर रिसर्च फेलोशिप मिल सकती है जिसके माध्यम से शोधकार्य करनेवाले छात्रों को हर महीने 30,000/ छात्रवृति दी जाती है। यह परीक्षा पास करने वालों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर और प्रोफसर के रूप में नियुक्ति के अवसर मिल सकते है। रचनात्मक लेखन जिसे आज के युवाओं की भाषा में क्रिएटिव राइटिंग कह सकते हैं। इस क्षेत्र में स्वतंत्र लेखन और नियमित लेखन किया जा सकता है और बाहर रहकर भी सेवाएं दी जा सकती हैं। हालांकि दोनों में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों ही रूप में आप काम एक ही कर सकते हैं। ब्लॉग लेखन भी एक ऑप्शन है। हिन्दी भाषा विभिन्न पहलुओं प्रदर्शन में रोजगार खुला मिलता है।

संदर्भ :-

1. मीडिया, समाज एवं साहित्य– डॉ. प्रमोद पाटील
2. संचार समाज और साहित्य– संजय सिंह बघेल
3. साहित्य, सिनेमा और दूरदर्शन– डॉ. संतोष रायबोले
4. जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता– डॉ.अर्जुन तिवारी
5. साहित्य और सिनेमा बदलते परिदृश्य में संभावनाऐं और चुनौतियां– संपादक शैलजा भारद्वाज
6. भारतीयता और पत्रकारिता–2016, जून पत्रिका
7. प्रयोजनमूलक हिंदी–डॉ. दामोदर खडसे
8. राष्ट्रभाषा संदेश–15 नवम्बर 2012

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 86-88
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी : रोजगार के अवसर

-श्री.निलेश सुरेशचंद्र पाटील
सहायक प्राध्यापक, कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविदयालय, सटाणा, ता. बागलाण जि.नाशिक

वर्तमान संचार–माध्यमों की क्रांति के काल में 'सूचना प्रौद्योगिकी' शब्द का अपना विशेष स्थान है। 'सूचना प्रौद्योगिकी' शब्द सूचना और प्रौद्योगिकी इन दो शब्दों से बना है। सूचना का अर्थ है सूचित करना, इत्तिला, बतलाना या अवगत करना, और प्रौद्योगिकी का अर्थ है औद्योगिक उत्पादन का विज्ञान या उदयोग विज्ञान। अर्थात प्रौद्योगिकी सूचना के एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने की तकनीक है। प्रौद्योगिकी के अनेक तकनीकी साधनों में भाषा कें उपयोग से सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जाता है। इसी प्रक्रिया में अनेक रोजगारों की निर्मिती होती है। सूचना प्रौद्योगिकी के विविध रुपों ने हमारे लिए तरक्की के नए द्वार खोल दिए है। मानव जीवन के दैनिक कार्य–कलापों से लेकर कृषि, स्वास्थ्य चिकित्सा, शिक्षा, बँकिंग, वाणिज्य–व्यापार आदि अनेक क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी व्यापक परिवर्तन का आधार बनती जा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में संचार–साधनों का महत्व बढ़ गया है। इनमें समाचार पत्र, पत्रिका, रेडिओ, दूरदर्शन, टेलीफोन, टेलिग्राफ, टेली कॉपियर, टेलेक्स, कम्प्यूटर, मोबाईल, टॅब, पेन ड्राईव, मोबाईल में विभिन्न अँप्स, सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, आदि अनेक अनेक साधन आज मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गए है। ये सब संचार – माध्यम या साधन सीधे जनता से जुड़े हुए है। अतरू इनमें ऐसी भाषा का प्रयोग अनिवार्य बनता है,जिसे आम जनता आसानी से समझे, ग्रहण करे और स्वंय को व्यक्त कर सके। और हिंदी भाषा यह शर्त पूर्ण करती है।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में भारत जैसे विशाल देश में संपर्क भाषा हिंदी आज संप्रेषण के साथ अर्थार्जन की भाषा भी बन गई है। हिंदी अध्ययनकर्ता हिंदी का स्वरुप तथा व्यवहार के क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा–ज्ञान प्राप्त करके पत्रकारिता, रेडियो, दूरदर्शन, इलेक्ट्रॅनिक मीडिया, सीरियल, हिंदी कम्प्यूटिंग, विज्ञापन का क्षेत्र, अनुवाद का क्षेत्र, बीमा, बैंक, रेल, शिक्षा जैसे अनेक क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकते है। स्पर्धा परीक्षाएँ, दुभाषियाँ, हिंदी टाईपिस्ट, हिंदी अध्यापन, साहित्य सृजन आदि अनेक क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती है। घशिक्षा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में संगणक के द्वारा रोजगार के कई क्षेत्र खुले है।

भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रमुख भाषा हिंदी है। इसमें रोजगार की असीम संभावनाएँ है। जिनमें

ई–समाचार पत्रों के घलिए स्तंभ या लेख लिखे जा सकते है। इन दिनों दूरदर्शन पर अनेक विषयों पर परामर्श, सलाह संबंधी अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। दूरदर्शन पर प्रसिद्ध शेफ या कुक द्वारा अनेक पकवान बनाते की विधि का सीधा प्रसारण हिंदी भाषा में किया जाता है। जहाँ रोजगार की संभावनाएँ उपलब्ध है। जिनमें शेयर बाजार की जानकारी, स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि, उद्योग, खेल–कूद, सौंदर्य, फिटनेस, पारिवारिक तनाव, व्यसन मुक्ति, शिक्षा, रोजगार आदि अनेक विषयोंपर कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इनमें हिंदी भाषा का ही उपयोग होता है। साथ ही क्रिकेट तथा कॉमनवेल्थ, ओलंपिक, एशियाड और अनेक खेलों का सीधा प्रसारण, चर्चा पुनःप्रसारण, साक्षात्कार, कमेंट्रेटर आदि अनेंक रोजगार के क्षेत्र निर्माण हुए है।

अनेक विज्ञापन संस्थाएँ, सिनेमा जगत, दूरदर्शन सीरियल, रेडियो जॉकी, निजी कंपनियों में कंटेन्ट राइटिंग, अनुवाद, स्क्रिप्ट, गीत, संवाद, पटकथा लेखन के घलिए हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ बढ़ी है। इंटरनेट पर कंटेन्ट राइटिंग तथा अनुवाद के घलिए हिंदी के जानकारों की, विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। हमारे देश में दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में पौराणिक, ऐतिहासिक स्थान, घटना, पर्यटन क्षेत्र, ज्योतिष, धार्मिक प्रवचन आदि से संबंधित कार्यक्रमो का प्रसारण हिंदी में ही होता है। यह भी रोजगार का क्षेत्र है। योग हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग बन गया है। दूरदर्शन पर योग अभ्यास का सीधा प्रसारण हिंदी भाषा में होता है। मोबाईल में अनेक ऐप्स में हिंदी का उपयोग तथा यू–ट्यूब जैसे प पर अनेक वस्तु, कार्य, वाहन, खेती, दवाई, वनस्पति, वास्तु निर्माण, नक्शा, यंत्र दुरूस्ती, गीत कविताओं के वीडिओ हिंदी में बनाकर रोजगार प्राप्त हो सकता है। अनेक विदेशी कार्यक्रम, नेशनल जिओग्राफी चैनल, डिस्कवरी, नीमल प्लैनेट, ट्रावेलर साथ ही कार्टून सीरियल, फिल्मों मे हिंदी डबिंग या आवाज देना ये लोकप्रिय व्यावसायिक क्षेत्र बने है।

पारंपरिक शिक्षा पद्धति अध्ययन–अध्यापन, स्पर्धा परिक्षाएँ, साहित्य सृजन, विभिन्न प्रशासनिक पदों के प्रशिक्षण के लिए हिंदी एक विषय के रुप में होता है। साथ ही निजी कोचिंग केंद्र, व्यावसायिक पाठयक्रम BBA, MBA भी हिंदी में पढ़ाएं जाते है जहाँ रोजगार की संभावनाएँ बढ़ी है। संचार क्रांति के इस युग में ई–गव्हर्नंस, ई–एज्यूकेशन, ई–बैकिंग, ई–कॉमर्स, ई–मेडिसीन, ई–शॉपिंग जैसे अनेक क्षेत्रों में हिंदी भाषा के उपयोग के कारण रोजगार के अवसर बढ़े है।

वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के युग में बाजारवाद का महत्व निर्विवाद है। आज बाजार की गति समाज की गति निर्धारित करती है। समाज की समस्त गतिविधियाँ बाजार के माध्यम से संचालित होती है। जिसमें हिंदी भाषा को अपनाकर कार्य कार्यसिद्धि हो रही है। वैश्वीकरण के इस युग में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा ने अच्छी तरह घुल–मिलकर अपना जनसंचारी व्यक्तित्व स्थिर किया है। हिंदी ने जनसंचार के सभी माध्यमों में अपनी योग्य शब्दावली और क्षमता का विस्तार किया है। आत्मसातीकरण की जबर्दस्त ताकत हिंदी में है। जिससे रोजगार की संभावनाएँ बढती है। सूचना प्रौद्योगिकीं में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग से निश्चित ही रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। साथ ही संचार–माध्यमों के तकनीकी विकास से हिंदी के प्रयोग हेतु नये–नये मंच उपलब्ध होने की संभावनाएँ बढेगी। सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी द्वारा नवीनतम जानकारी उपलब्ध

होगी साथ ही वैचारिक आदान–प्रदान भी सुचारु रुप संभव होगा जो नये रोजगार के अवसर निर्मित करेगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम, सं.प्रो.डॉ.सदानंद भोसले, परिदृश्य प्रकाशन, पुणे।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, ज्ञानदेय प्रकाशन, कानपुर।
3. भाषा और भाषाविज्ञान : डॉ.तेजपाल चौधरी, विकास प्रकाशन, कानपुर।
4. हिंदी कम्प्यूटिंग : डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, विकास प्रकाशन, कानपुर।
5. हिंदी और उसकी परिभाषाएँ : विमलेश कांति वर्मा, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।

ई–मेल :– nspatil14@gmail.com

भ्रमरध्वनी क्र.–७५७८१६६७४२

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 89-90
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्येताओं को रोजगार के अवसर

–प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील
न्यू कॉलेज, कोल्हापुर, सचिव, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (कोल्हापुर विभागीय समिति)

हिंदी भाषा नौवी शती से विभिन्न रूपों में भारतीय समाज पर अपना प्रभाव निर्माण कर रही है। साधू–संतों के माध्यम से यह सदियों से संपर्क भाषा के रूप में कार्य कर रही है। हिंदी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भाषा थी– 'मेरी झाँसी नहीं दूँगी', 'भारत छोड़ो', 'चले जाव', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' ये सारी घोषणाएँ हिंदी में ही दी गई थी। पूरे भारत का भ्रमण करने के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने ऐलान किया था कि "हिंदी के अलावा अन्य कोई भाषा इस देश की राष्ट्रभाषा बन ही नहीं सकती"। आज भी विश्व के दो सौ से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ी और पढ़ाई जाती है। हिंदी के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति और विचारों का आदान–प्रदान तो होता ही है साथ ही देशवासियों में राष्ट्रीय एकता निर्माण होती है और वह विचारों के संक्रामण का साधन है। संविधान के माध्यम से हिंदी को राजभाषा के रूप में सन्मान प्राप्त होने के कारण इसकी गरीमा में वृद्धि हुई हैं। साहित्य के द्वारा समाज में संवेदनशीलता का विकास हो, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना हो, वैचारिक प्रौढ़ता की निर्मिति हो, साहित्यिक विधाओं का परिचय हो, शब्द भंडार में वृद्धि हो, ये सब हिंदी साहित्य अध्ययन के उद्देश्य हैं।

हमारे प्राचीन आचार्यों ने भी साहित्य निर्माण के प्रयोजनों के बारे में कहा है – 'काव्य यश से अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षयेते सद्यः परिनिवृतये कांता सम्मित तयोपदेश युजे' आज के भूमंडलीकरण के वर्तमान दौर में यह प्रश्न उठना अत्यंत स्वाभाविक है कि क्या हिंदी भाषा उसके अध्येताओं को आत्मनिर्भर बना सकती है ? क्या वह रोजी–रोटी के प्रश्न को हल कर सकती है? और इसका जवाब है 'हाँ'। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद के माध्यम से रोजगार की काफी संभावनाएँ हैं। सरकारी कार्यालयों में वरिष्ठ अनुवादक और कनिष्ठ अनुवादक के अलावा विभिन्न विधाओं की प्रादेशिक भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों का संस्थाओं के माध्यम से तथा निजी व्यक्तिगत स्तर पर भी अनुवाद का कार्य करके धन कमाया जा सकता है। टी.वी. सीरियल्स, विज्ञापनों और टेलीविजन के कार्टून्स का विविध भाषाओं में अनुवाद भी किया जाता है।

साहित्यिक अनुवाद ने ही रविंद्रनाथ टैगोर, वि.स.खांडेकर, प्रेमचंद, शेक्सपियर जैसे अनेक रचनाकारों को सीमित क्षेत्र से ऊपर उठाकर सर्वपरिचित बना दिया है। साहित्येतर अनुवाद में विधि सामग्री, कार्यालयीन पत्राचार एवं वाणिज्यिक सामग्री तकनीकी और वैज्ञानिक सामग्री संमिलित है। आज मुद्रित और इलेक्ट्रानिक माध्यमों से

सभी उत्पादनों को ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन निर्माण की आवश्यकता होती हैं। सृजनात्मकता और कल्पना शक्ति के बल पर इस क्षेत्र से बढ़िया धन प्राप्त किया जा सकता हैं।

हम देख सकते हैं कि दक्षिण की और अंग्रेजी भाषा की भी कई फिल्में हिंदी में डब हो रही हैं। हिंदी की प्रसिद्ध फिल्में भी अनेक भाषाओं में डबिंग की जा रही हैं। (उदा. तानजी, बाहुबली, ज्युरासिक पार्क) भाषा के उच्चारण एवं फिल्म टेक्नॉलॉजी के ज्ञान की मदद से इस क्षेत्र में रोजगार की काफी संभावनाएँ हैं। फिल्म डबिंग एक बहुत बड़ा कारोबार है जो हिंदी अध्येताओं के लिए अवसर हैं। हमारे देश में सबसे ज्यादा अखबार और पत्र–पत्रिकाएँ हिंदी भाषा में प्रसिद्ध होती हैं। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में रिपोर्टर, संपादक, प्रूफ़रीडर, अनुवादक जैसे अनेक पद निर्माण हो गए हैं। सरकारी और निजी रेडियो तथा टेलीविजन चैनल निर्माण होने से इस क्षेत्र में भी रोजगार के द्वार खुल गए हैं। रेडियो जॉकी, निवेदक, समाचार वाचक, अभिनेता, क्रीडा–समालोचक, पटकथा लेखक, संवाद लेखक, गीतकार, गीत गायक, ऐसे अनेक अवसर प्रतिभाशाली उम्मीदवारों का मानो इंतजार ही कर रहें हैं।

इसके अलावा अध्यापन और साहित्य निर्माण के क्षेत्र तो वर्षों से विकल्प के रूप में हमारे सामने हैं ही। हिंदी अध्यापक, राष्ट्रीयकृत बैंक, पोस्ट ऑफिस, रेल विभाग, जीवन बिमा क्षेत्र, दुभाषिया आदि क्षेत्रों में हिंदी के माध्यम से रोजगार के बहुत अवसर उपलब्ध है। छात्रों को इन सब का लाभ उठाना चाहिए। लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए भी हिंदी सहायक साबित होती हैं। संगणक के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा पीछे नहीं है। संगणक से हिंदी के उपयोग में सरलता तो आ ही गई है साथ ही अनिनिमेशन यह रोजगार का नया अवसर निर्माण हो गया है। हमारे देश को उज्ज्वल सांस्कृतिक विरासत प्राप्त है। इसके साथ ही ऐतिहासिक स्थल, गढ–किले, प्राकृतिक विभिन्नता भी काफी अधिक है, जिससे पर्यटन गाईड यह भी रोजगार का एक जरिया बन गया है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे यह हिंदी सेवी संस्था पाँचवी कक्षा से ही बालबोधिनी, प्राथमिक, प्रवेशिका, सुबोध, प्रबोध, प्रवीण, पंडित, संभाषण योग्यता आदि परीक्षाओं के आयोजन के साथ–साथ विभिन्न समारोहों के माध्यम से बचपन से ही बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाने का कार्य करते है।

हमें हिंदी को कमजोर नहीं समझना चाहिए। हिंदी भाषा में मृदुता और मिठास तो है ही साथ ही यह वैज्ञानिक दृष्टि भी शुद्ध है। यह 18 करोड़ देशवासियों की मातृभाषा है और लगभग 30 करोड़ लोगों की संपर्क भाषा है। यह भाषा हमारे देश के उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड आदि राज्यों की मुख्य भाषा है। यह फिजी देश की राजभाषा है। इसमें विश्वभाषा बनने का सामर्थ्य भी मौजूद है।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 91-95
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्यताओं को रोजगार के अवसर

–डॉ. एम.एस. पाटील

सहायक प्राध्यापक, पी.जी. विभाग, बेलगम, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई।

विवेच्य विषय पर विचार करें तो दो बाते स्पष्ट होगी। 1. क्या वर्तमान में हिंदी भाषा की उपयोगिता, सामर्थ्य एवं महत्व बढ़ रहा है? और 2. क्या वास्तव में हिंदी अध्यताओं को अब रोजगार के अवसर बढ़े है?

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर खोजे तो हमें निश्चित ही, हाँ! कहना पडेगा। क्योंकि हिंदी भाषा की विकास गाथा से ही यह प्रमाणित होता है कि हिंदी के महत्व एवं सामर्थ्य की पहचान कर ही आजादी के समय से लेकर 'राजभाषा' बनने तक अनेक महापुरूषों ने हिंदी का पक्ष लिया। और अन्त में 14 सितंबर 1949 को हिंदी भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 खण्ड (1) के अनुसार 'राजभाषा' के पदपर प्रतिष्ठित हुई। साथ ही भारतीय भाषाओं तथा अवधि, ब्रज, मारवाडी, दक्खनी, उर्दु आदि बोलियों ने भी प्यार से हिंदी को सींचा है, जो हिन्दुस्थानी बनकर सामने आई है, जो भारतीयता की पहचान है।

हिंदी विश्व का सबसे बड़ा गणतन्त्र भारत में सबसे समृद्ध और व्यापक क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाली एक जानदार एवं शानदार भाषा है। वर्तमान में विश्व की भाषाओं में इसका दूसरा स्थान है। संसार में सर्वाधिक व्यक्तियों द्वारा चीनी भाषा बोली जाती है। इसके बाद सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा हिंदी है जो आज अंग्रेजी की प्रतिद्वदि भाषा बनी है। एक अध्ययन के अनुसार भारत और विदेशों में 75 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिंदी बोलते है तथा इस भाषा के समझनेवालों की संख्या एक अरब से भी ज्यादा है। वैसे यह आंकड़े भी पुराने है। यदि हम टुटी–फूटी हिंदी में काम चलानेवालों की भी इस में गिनती करे तो विश्व में करीब 25 प्रतिशत से भी ज्यादा लोग हिंदी जानते है। अर्थात हिंदी विश्व पटल पर उत्तरोत्तर विकास पाती जा रही है। अतः हिंदी की वर्तमान स्थिति, गति एवं क्षमता से स्पष्ट है कि हिंदी अध्यताओं को निश्चित ही सुनहरा भविष्य है। बस्स उन्हें अपने उत्तम योग्यता एवं आत्मविश्वास के साथ रोजगार की इस स्पर्धा में उतरना होगा। उन्हे देश तथा विदेश में आज रोजगार के कई क्षेत्र खुले है। जैसे 1. राष्ट्रीय स्तर और 2. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सरकारी और निजि क्षेत्रों में।

राष्ट्रीय स्तर :–

भारत में हिंदी 'राजभाषा' बनने के बाद, राजभाषा संकल्प–1968 तथा राजभाषा अधिनियम 1963 और संशोधित 1967 के अंग्रेजी के साथ हिंदी को भी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। हिंदी अब देश की राजभाषा, संपर्क भाषा,

साहित्यिक भाषा तथा प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में कई भूमिका निभा रही है। स्पष्ट है कि देश के उच्च प्रशासनिक पदों से लेकर शिक्षा, रक्षा, तकनिकी, प्रोद्योगिकी, व्यापार, मनोरंजन, पत्राचार, मिडिया, पर्यटन आदि कई क्षेत्रों में।

1. हिंदी अध्यापन :–

हिंदी का अध्ययन करनेवालों को अध्यापन करियर विकल्प के रूप में है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक योग्यतानुसार रोजगार के अवसर उपलब्ध है– जिनमें टायपिस्ट से लेकर शिक्षक, प्रशिक्षक, सहायक प्रोफेसर, प्रोफेसर आदि।

2. राजभाषा हिंदी अधिकारी :–

संविधान के 1967 के 'राजभाषा अधिनियम' के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी में कार्यालयीन कार्य को संपादित करने के लिए हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है।

अ) भारतीय सेना में हिंदी अधिकारी के रूप में नियुक्ति :– जो युवा सेना में अपना करियर बनाना चाहते है – हिंदी अधिकारी के रूप में बना सकते है।

ब) राष्ट्रीय एवं निजि बैंकों में :– सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में हिंदी अधिकारियों के पद पर नियुक्तियों के अवसर रहते हैं। साथ ही निजि क्षेत्र के बैंक जैसे– एच.डी.एफ.सी., आई.सी.आई.सी.आई. एक्सिस बैंक आदि भी अपने व्यवसाय विस्तार के लिए अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे है जिससे रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

3. तकनीकि शब्दावली का निर्माण (राजभाषा गृहमंत्रालय विभाग) :–

केन्द्र सरकार व राज्य सरकार को ऐसे विद्वान लोगों की आवश्यकता है, जो तकनीकी शब्दावली का निर्माण कर सकें।

4. इस प्रकार रोजगार के कई क्षेत्र ऐसे है जो राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उपलब्ध है, ऐसे क्षेत्रों का उल्लेख हम आगे कर रहे है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर :–

विदेशियों में इस समय हिंदी सीखने की पर्याप्त उत्सुकता और लगन दिखाई देती है। उनका विश्वास है कि भारतीय भाषाओं में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से भारत को उसकी सम्पूर्णता में समझा जा सकता है। हिंदी भारतीयता की पहचान है। इसमें भारत की आत्मा बसी है। इसके माध्यम से ही योमा, आयुर्वेद आदि भारतीय ज्ञान, विज्ञान एवं सोच का सही परिचय हो सकता है, इसीलिए हिंदी के प्रति विदेशों में अत्यधिक आकर्षण है।

हिंदी इस समय जापान, कोरिया, चीन, सेवियत संघ, इंग्लैंड, फिनलैण्ड, हंगेरी, बेल्जियम, रोमानिया, इटली, जर्मनी, फ्रान्स, कनाडा, अमेरिका, मेक्सिको, श्रीलंका, नेपाल, मॉरीशस, फजी, वेस्टइण्डीज, दक्षिण आफ्रिका, मियाना, ट्रिनिडाड, सुरीनाम तथा कुछ अन्य देशों में भी बोली जाने के साथ–साथ सांस्कृतिक एकता

का एक समर्थ साधन बनी हुई है। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विश्व मैत्री की एक कड़ी होने का गौरव प्राप्त है। विदेशों में भी हिंदी की पढ़ाई को लेकर छात्रों में रूचि बढ़ी है। आज लगभग 260 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इसमें अमेरिका के 67 और चीन के 20 विश्वविद्यालय शामिल है। तो स्पष्ट है कि हिंदी में बेहतर करियर बनाया जा सकता है, फिर भी आज के युवा हिंदी को कम महत्व दे रहे है; अतः हिंदी में कम्पीटीशन कम है और अवसर ज्यादा है। बस! यदि हिंदी के अध्याताओं के पास योग्य डीग्री के साथ अंग्रेजी का भी ज्ञान है तो यह मणीकंचन योग होगा जिसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध पर्याप्त अवसरों से लाभान्वित हो सकते है।

मीडिया/जनसंचार माध्यम :–

आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा आदि के क्षेत्र में आज क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहें है। विभिन्न निजि कंपनियों ने अपने स्थानीय चैनल खोल दिए है। दूरदर्शन पर निजि चैनलों की संख्या असीमित हो गई है। जो प्रतियोगिता में बने रहने के लिए नित–नये कार्यक्रमों को बनाने में लगे है। अतः विभिन्न कार्यक्रम के निर्माण, अभिनय, संचाल व प्रसारण के क्षेत्र में रोजगार की पर्याप्त संभवनाएँ है जैसे कथा पटकथा लेखन, स्क्रिप्ट लेखन, गीत लेखन, डबींग आर्टिस्ट, समाचार लेखन, समाचार वाचन, रेडियो जॉकी, एंकर आदि पदों पर अवसरों की भरमार हैं। इनके लिए विधिवत प्रशिक्षण लेकर एक उत्तम जीविका का रूप में इसे अपनाया जा सकता है। इसका प्रशिक्षण देने वाली कई संस्थाएँ है। उदाहरण :

1. रग्नू द्वारा संचालित पाठयक्रम
2. सेन्टर फॉर रिसर्च आर्ट फिल्म एण्ड टेलीविजन, दिल्ली
3. फिल्म एण्ड टेलिविजन इंस्टीटयूट ऑफ इंडिया, पुणे.

हिंदी अनुवादक/दुभाषिया :–

आज अनुवाद का क्षेत्र बहुत ही बड़ा है। दुनियांभर में जैसे–जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे–वैसे अनुवादकों और द्विभाषाविदों की मांग बढ़ती जा रही है। कई देसी–विदेशी मीडिया, संस्थान, राजनैतिक संस्थाएँ, पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े–बड़े होटलों में अनुवादकों और दुभाषियों की अच्छी खासी माँग है।

आज राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई ऐसी प्रकाशन संस्थाए काम कर रही है, जो समय–समय पर अनुवादकों की मांग करती है। ये अनुवादक मुख्यतः दो प्रकार के होते है– 1. ॲकॅडमिक, 2. व्यावसायिक

हिंदी का विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण :–

विदेशों में आज हिंदी को व्यवसाय की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी है। चीन, त्रिनिडाड, नार्वे, फिनलैण्ड, हंगेरी, बेल्जियम, अमेरिका, रूस, मॉरिशस, फिजी व इटली जैसे कई देश है, जहाँ हिंदी सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली विदेशी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इन विद्यालयों में हिंदी अध्यापन के लिए न्यूनतम योग्यता पीएच.डी. और प्रयोजनमूलक हिंदी की उपाधि तथा ज्ञान होना आवश्यक है। जिससे विदेशों में हिंदी

अध्यापक, प्रोफेसर आदि पदों पर अवसर बढ़ रहे है।

पत्रकारिता :-

आज देश तथा विदशों में भी पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ रहे है। भारत में 20589 याने सबसे अधिक समाचारपत्र हिंदी में, तथा 7596 समाचार पत्र अंग्रेजी में छपते है। एशिया के प्रमुख देशों में तथा इसके बाहर भी हिंदी पत्रिकाओं को बड़े शौक से पढ़ा जाता है। जिसमें बांग्लादेश, नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, चीन, जापान, यूरोप, रूस, ब्रिटेन, नार्वे अफ्रिका, अमेरिका, त्रिनिडाड, फीजि, कॅनडा, हांगकांग आदि देशों में कई पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं प्रसारण हो रहा है। फिजी में रेडियो व दूरदर्शन भी हिंदी समाचारों को बढ़ावा दे रहे है। इसमें, संवाददाता, समाचार वाचक, प्रुफ रीडर, सह–संपादक, संपादक आदि पदों पर रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही है।

इनमें रोजगार की इच्छा रखनेवालों को पत्रकारिता/जनसंचार में डिग्री/डिप्लोमा के साथ हिंदी में ॲकॅडमिक योग्यता रखना महत्वपूर्ण है। कई संस्थाओं में ऐसे पाठयक्रम है उदा.

1. उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, टी. नगर, चेन्नई–17 (तमीलनाडु) हिंदी साहित्य और भाषा में एम.ए., एम्. फील्. और पीएच.डी. हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, हिंदी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, हिंदी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
2. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प.) कार्यात्मक हिंदी में एम.ए. (पत्रकारिता)
3. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) हिंदी पत्रकारिता में एम.ए.।

पर्यटन :-

देश–विदेश में पर्यटन का क्षेत्र काफी बढ़ा है। वहाँ मार्गदर्शक तथा अन्य कई जगहों पर स्व–व्यवसाय के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

इंटरनेट :-

आज हिंदी की कई वेबसाईट उपलब्ध है। विभिन्न हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर है। आज देश तथा विदेश की कई कंपनियां विज्ञापनों एवं व्यापार हेतु इंटरनेट का प्रयोग कर रही है। ऐसे में रोजगार के पर्याप्त अवसर खुले है।

सॉफ्टवेयर :-

हिंदी सॉफ्टवेयर की जरूत के मध्यनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं।

कॉल सेंटर :-

डोमेस्टिक कॉल सेंटर में हिंदी आधारपर भी नौकरी मिलने लगी है। टेली कम्युनिकेशन में भी हिंदी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। जिसमें रोजगार के अवसर बने है।

देश विदेश में स्व-व्यवसायी के रूप में :-

इसमें हिंदी टायपिंग से लेकर पुस्त्क प्रकाशक तथा क्रिएटीव रायटिंग करके तथा फिल्म, टीवी, रेडियो,

वेबसाईट आदि क्षेत्रों से जुड़कर हिंदी में लोकप्रिय लेखन किया जा सकता है। साथ ही घोस्ट राइटर के रूप में मशहूर हस्तियों, राजनीतिज्ञों और बड़े अधिकारियों के लिए आत्मकथा या अन्य सामग्री संपादित कर के इंटरनेट के माध्यम से इसे पूर्णकामिक या अंशकामिक व्यवसाय बनाया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है, रोजी रोटी के लिए आज हिंदी भाषा किसी जादू की छड़ी से कम नहीं, बस्स उसके सही इस्तेमाल का राज स्वयं हिंदी अध्येताओं को ढूँढ़ना चाहिए। क्योंकि आज के इस भुमण्डलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्ता संस्कृति के दौर में भारत एक बडे बाजार के रूप में उभर रहा हैं, संपूर्ण विश्व की भी यही स्थिति है। ऐसे में हिंदी अध्येताओं का महत्व स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि गांवों, कस्बों और छोटे शहरों से हिंदी जब अपने संपन्न भाषाई संस्कार, देसी कहावते, मुहावरों, किस्सों–कहानियों और अंतर्निहित अनगिनत विशेषताओं के साथ रोजगार के वर्तमान प्रतिस्पर्धी मैदान में पहुँचती है, तो हिंदी जाननेवालों को विजेता बना देती है।

हिंदी आज ज्ञान की विज्ञान की, तकनिकी–प्रोद्योगिकी की, संचार की, मनोरंजन की गीत की, व्यापार की, दुकान की कमाऊ भाषा बन गई है। भारत ही नहीं विश्व का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ हिंदी की पहुँच ना हो। अतः हिंदी के विश्व में बढ़ते दायरे की लगातार बढ़ती सीमाओं को देखते हुए अब हम गर्व से कह सकते है कि, ''हिंदी है हम! हिंदी में है दम! जीतेंगे हम!''

शोध संदर्भ :–

1. राजभाषा प्रशिक्षण – हरीश
2. हिंदी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र
3. हिंदी पत्रकारिता विविध आयम – डॉ. वेदप्रताप वैदिक
4. हिंदी साहित्य का इतिहास –प्रो. दीलीप सिंह
5. भारतवाणी पत्रिका – सितंबर – 2012.
6. वेब www.Employementnews.in.carrerdetails.making-a-career-in-functional-Hindi.

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 96-100

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी अध्ययेता को रोजगार के अवसर

–अनिल रोडू अहिरे

शोध छात्र, आट्र्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, आरा (महाराष्ट्र)

–डॉ. अशोक मराठे

शोध निर्देशक (हिदी विभाग प्रमुख), उमराव पाटिल कला व विज्ञान महाविद्यालय, दहीवेल (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :–

आज विश्वपटल पर लगभग तीन हजार से ज्यादा भाषाएं बोली और सुनी जाती हैं। तमाम भाषाओं को देखते हुए भाषा वैज्ञानिकों ने कुल बारह परिवारों में विभाजित किया है। इसमें भारत से लेकर यूरोप तक फैले हुए भाषा परिवार को भारोपीय परिवार अथवा 'आर्य' परिवार कहा जाता है। इस परिवार की भाषाओं को विद्वानों ने दो वर्गों में विभाजित किया है जैसे 'केतुम' और 'सतम', 'सतम' में आर्य, स्टेबोनिक, भारत–ईरानी तथा आरमेनियम, अथवा अलबेनियम भाषाएं आती हैं। प्राचीनकाल की आर्य भाषाओं से लेकर आधुनिक वर्तमान आर्य भाषाओं तक हिन्दी भाषा का सफर वैज्ञानिक रूप से विकसित हुआ है। वर्तमान समाज में आज हिन्दी भाषा की करीब–करीब अठारह भाषाएं और पांच उपभाषाएं हैं तथा देवनागरी लिपि का प्रयोग लेखन के लिए किया जाता है। 1947 में भारत को आजादी मिली। स्वतंत्र देश के लिए राष्ट्रभाषा अनिवार्य होती है। भारत एक बहुभाषिक देश होने के कारण हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में दर्जा नहीं मिला लेकिन 14 सितम्बर 1947 में राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है। आज विश्व में हिन्दी एक ऐसी एकमात्र भाषा है जिसका प्रचार–प्रसार शीघ्र गति से हो रहा है। इसीलिए आज विश्व में वहीं भाषा सम्पन्न और समृद्ध मानी जाएगी जिसमें मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ उसे रोजगार तथा रोजी–रोटी कमाने के लिए मदद करती है। हिन्दी भाषा संसार में सबसे बड़ी तादाद में बोली और सुनी जाती है। इसीलिए हिन्दी भाषिक अध्येयता विश्व के किसी भी देश में जाकर रोजगार प्राप्त कर सकता है।

हिन्दी भाषिक अध्येता राजभाषा अधिकारी, हिंदी अधिकारी, अनुसंधान अधिकारी, सहायक अनुसंधान अधिकारी, अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार (जूनियर अनुवादक, सीनियर अनुवादक, आशु अनुवाद), अन्वेषक अद्यापक, राज्य सभा में रोजगार (संसदीय भाषान्तरकार हिन्दी राज्य सभा, सचिवालय सहायक हिन्दी, अनुवादक राज्य सभा, प्रुफ रीडर राज्य सभा, अशिलिपिक राज्य सभा, संसदीय रिपोर्टर हिन्दी राज्य भाषा, जूनियर संसदीय रिपोर्टर हिन्दी राज्य सभा, संसदीय इंटरप्रेटर क्षेत्रीय भाषा, टेलीविजन आरएसटीवी में सम्पादक–इन–चीफ, व्यक्तिगत सहायक राज्य सभा), आशुलिपिक, अपर डिविजन क्लर्क, तकनीकी सहायक हिन्दी, संपादक हिन्दी, उपसंपादक हिन्दी, उप निदेशक भाषा, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान (निदेशक भाषा, अनुसंधान सहायक भाषा, अनुसंधान

सहायक हिंदी टंकण एवं हिन्दी आशुलिपिक), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, (आशुलिपिक वरिष्ठ, आशुलिपिक कनिष्ठ, भंडारी, सहायक प्रबंधक, सहायक अनुसंधान अधिकारी), लोक सभा में रोजगार के अवसर, (संसदीय भाषान्तरकार लोकसभा, प्रुफ रीडर लोकसभा, अनुवादक लोक सभा, प्रिंटर, विज्ञापन में कैरियर, पत्रकारिता में कैरियर, डॉक्यूमेंट्री लेखन, पटकथाकार, निवेदक, उदघोषक, गीतकार, पर्यटक, मार्गदर्शक, क्रीड़ा समालोचक, संवाद लेखन आदि पदों पर अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

राजभाषा अधिकारी के रूप में हिन्दी अध्येता को भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों, न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी, भारतीय आर्युविमा मंडल, भविष्य निधि, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में) महानगर दूरसंचार निगम, भारतीय दूरसंचार निगम, भारतीय रेल आदि स्थानों पर राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति होती है और यह पद की नियुक्ति प्रथम श्रेणी के अधिकारी के रूप में होती है। राजभाषा अधिकारी के कार्य हिन्दी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा मनाना, अपने कार्यालयों के कर्मचारियों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण देना, हिंदी भाषा के विकास के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं को आयोजन करना जैसे निबंध लेखन, एकांकी लेखन, मंच सज्जा आदि अपने कार्यालय में बार–बार प्रयुक्त होने वाली हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली बनाने में मदद करना, हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए विविध योजनाएं बनाना आदि राजभाषा अधिकारी का वेतनमान रू. 15,600–39,100 प्लस ग्रेड वेतन 5400 रूपए है। उम्र 18 साल से 30 साल तक (आरक्षण के नियमानुसार आयु में छूट मिलती है।)

आज अनुसंधान कार्य हर क्षेत्र में किया जा रहा है। हिंदी अध्येता अनुसंधान अधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकता है। अनुसंधान यह लगन और कठिन परिश्रम किया जाने वाला ज्ञानवर्धक कार्य है। ज्ञात–अज्ञात विषयों का अनुसंधान करके उसे वैज्ञानिक अध्ययन पर प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दी साहित्यकार तथा श्रेष्ठ आलोचक डॉ. नगेन्द्र कहते हैं, कि ''किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना या किसी तथ्य का परीक्षण करना ही अनुसंधान है। अर्थात् किसी उद्देश्य या लक्ष्य को नजदीक रखकर सही दिशा के साथ तथ्य का परीक्षण करना ही अनुसंधान है। डॉ. देवीदास इंगले कहते हैं, कि अनुसंधान के कार्य में प्रथमतः लक्ष्य निश्चित किया जाता है और बाद में उस लक्ष्य का पीछा किया जाता है। अनुसंधान के कार्य में अनवरत परिश्रम की आवश्यकता है। अर्थात् शोध कार्य में पहले लक्ष्य तय किया जाता है बाद में उसका सही दिशा में पीछा करना और सत्यता का परखना ही अनुसंधान है। शोध कार्य करना मनुष्य की मूलभूत उपज है। वह हमेशा नव सृजन के लिए तैयार रहता है। जो मनुष्य शोध कर में प्रशासकीय और सामाजिक सेवा में रूचि रखता है तथा हिंदी के साथ–साथ अन्य विषयों की सामान्य जानकारी रखता है वह अनुसंधान अधिकारी का पद प्राप्त कर सकता है जैसे विभिन्न विभाग, कृषि सहयोग और किसान कल्याण मंत्रालय, पर्यावरण मंत्रालय, उच्च शिक्षा मंत्रालय, स्थानीय प्राधिकरण मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, आर्थिक विकास मंत्रालय, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी विभाग, आदि विविध जगहों पर कार्य करने तथा राज्य में लोकसेवा आयोग द्वारा विभिन्न जगह पर सेवा करने का मौका मिलता है। अनुसंधान अधिकारी का वेतन रू. 35400–112400/– रूपए होता है और आयु सीमा 18 साल से 30 साल (आरक्षण के नियमानुसार उम्र में छूट मिलती है)।

हिंदी अध्येता अनुवाद के रूप में अपना योगदान दे सकता है। संसार में आज तीन हजार से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं। हर भाषा में लिखा गया साहित्य उच्च कोटि का होता है और अपनी अलग से विशेषता

होती है। जिस जगह वह बोली जाती है वहां की संस्कृति और परिवेश आदि का प्रभाव भाषा पर पड़ता है। हर मनुष्य के लिए अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है। उसकी इच्छा है कि अपनी भाषा में अन्य भाषाओं के लिखित ग्रंथ और संदर्भ कोश आदि महत्वपूर्ण जानकारी देने वाले ग्रंथों अपनी मातृभाषा में अनुवादित की हुई मिले।

वर्तमान समय का जन–जीवन बाजारवाद, विज्ञान तकनीकी, भूमंडलीकरण तथा जन–संचार माध्यमों से प्रभावित हैं। आज आधुनिक युग में मानव अपने निजी जीवन में इतना व्यस्त रहता है कि अपने ही लोगों को वह समय नहीं दे पाता है और वह अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए सोशल मिडिया का सहारा लेता है। सोशल मिडिया के कारण मनुष्य के विचारों को आदान–प्रदानता को गति मिली है। इसीलिए विचारों के आदान–प्रदान की संस्कृति के विकास में अनुवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इस संदर्भ में डॉ. बालेन्द्रशेखर तिवारी कहते हैं, ''संसारभर में प्रयुक्त पांच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सृजनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है।'' अनुवाद यह एक विस्तृत दायरा है इसकी सीमाओं को नापना न के बराबर है। अनुवादकों की मांग दिन–ब–दिन इस भूमंडलीकरण के युग में बढ़ रही है। अनुवाद का महत्व और उपयोगिता स्पष्ट करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण कहते हैं कि ''संसार में ज्ञान असीम है और उस असीम ज्ञान को पाने के लिए जिंदगी सीमित है। दूसरी बात यह है कि संसार का समग्र ज्ञान–विज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नहीं है। वह तो सैंकड़ों भाषाओं में बिखरा हुआ है। संसार की सभी भाषाओं को सीखना संभव नहीं है। अर्थात् संसार के असीम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही साथ हजारों रोजगारों को निर्माण करता है जैसेकि साहित्य क्षेत्र, जनसंचार क्षेत्र, प्रिंट मिडिया क्षेत्र, पर्यटन क्षेत्र, फिल्म क्षेत्र, समाचार क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र, कृषि क्षेत्र, प्रशासकीय क्षेत्र, वाणिज्य क्षेत्र, क्रीड़ा क्षेत्र, विज्ञापन क्षेत्र आदि क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकता है। तथा अनुवादक इन सरकारी क्षेत्र में अवसर प्राप्त कर सकता है जैसे जूनियर अनुवादक, सीनियर अनुवादक और आशु अनुवादक के रूप में मिलता है।

भारतीय समाज में गुरू को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। पढ़ाना यह एक श्रेष्ठ कार्य है। अध्यापक सामाजिक कार्यों के साथ–साथ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना और देश के विकास में योगदान देने वाले हिंदी अध्येता अध्यापक बनकर देश की सेवा कर सकते हैं। अज्ञान और अंधविश्वास को मिटाकर देश के नव युवकों को ज्ञानी बनाना, देश प्रेम की भावना जागृत करना तथा भारतीय संस्कृति से परिचित कराना, जवाहर नवोदय विद्यालय, उच्च माध्यमिक स्तर, केंद्रीय आर्मी स्कूल, माध्यमिक स्तर, स्कूल, पाठशाला तथा निजी संस्थाओं में कार्य करने का मौका मिलता है। हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता व सहजता को देखते हुए आज संसार में इसका अध्ययन और अध्यापन किया जा रहा है। पाठशालाओं, विश्वविद्यालयों, स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी तक हिन्दी भाषा का अध्ययन तथा अध्यापन किया जा रहा है। विश्व के विख्यात विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय पर तथा उसकी वैज्ञानिकता पर महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य किया जा रहा है।

हिंदी अध्येता को विदेशों में भी हिन्दी पढ़ाने का अवसर मिलता है। विश्व के विख्यात कुल 160 विश्वविद्यालयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध स्तर तक हिन्दी भाषा में अध्ययन तथा अध्यापन किया जाता है। हिन्दी भाषा– इटली, नेपाल, गयाना, भूटान, बल्गेरिया, मॉरीशस, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, रूस, यू.के., फ्रांस,

स्वीडन, श्रीलंका, बांग्लादेश, त्रिनिनाद, नार्वे, जापान, हॉलैण्ड, फिजी, युगोस्लाविया, इंग्लैंड, तुर्की, चेकोस्लोवाकिया, सूरीनाम, आस्ट्रिया आदि देशों के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। शैक्षिक योग्यता के अनुसार वेतन मिलता है। कक्षा एक से चार तक के लिए 5200–20200, कक्षा एक से सात तक के लिए 5200–20200, कक्षा पांच से दस तक के लिए 9300–34800, कक्षा सात से 12 तक के लिए 9300–34800, सीनियर कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के लिए 45000–151000 इस तरह से वेतन दिया जाता है।

भारतीय खेलप्रेमी आकाशवाणी और दूरदर्शन पर खेलों का सीधा प्रसारण सुन तथा देख सकते हैं। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय खेलों का सीधा प्रसारण किया जाता है। इन खेलों का आंखों देखा हाल सुनने के लिए कमेंट्रेटर की जरूरत होती है। कमेंट्रेटर या खेल संवाददाता के रूप में हिन्दी अध्येता अपना कैरियर कर सकता है। भारतीय खेलों में इंडियन प्रीमियम लीग, प्रो–कबड्डी आदि खेल देखे जाते हैं।

खेलों के प्रति बढ़ती लोकप्रियता के कारण आज विश्व में हॉकी, टेनिस, बॉस्केटबॉल, बेडमिंटन, क्रिकेट, फुटबाल, बेसबाल, ऑलम्पिक, इंडियन प्रीमियम लीग आदि खेल विख्यात है। इन खेलों को लोग लाखों की तादाद में देखते हैं। कमेट्रेंटर की कामेन्ट्री अच्छी और सटीक हो तो खेल देखने में और भी मजा आता है। खेलों की कॉमेंट्री में उतार–चढ़ाव होना चाहिए। कमेट्रेंटर की कॉमेंट्री में खेल के अनुकूल सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए। कॉमेंट्रेटर के बारे में ओम गुप्ता कहते हैं, ''अर्जुन को जिस तरह चिड़िया की ऑख की पुतली नजर आती थी, उसी एक कॉमेंट्रेटर को भी बस सामने घटित गतिविधियां ही दिखाई दें क्योंकि उसकी एकाग्रता क्षणभर के लिए टूट गई तो हो सकता है कोई अति महत्व वाला विवरण छूट जाए।' हिंदी अध्येता खेल संस्थाएं, आकाशवाणी, निजी खेल चैनेल्स और दूरदर्शन आदि में अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

कहानी सुनना और कहना यह मनुष्य की मूल प्रवृत्ति रही है। प्राचीनकाल से ही कहानी ने पैर जमाए हुए दिखाई देते हैं। हिंदी कहानी का विकास की दृष्टि से देखा जाए तो यह ज्ञात होता है कि आधुनिक कथा साहित्य मूल रूप से प्राचीन संस्कृत कथा साहित्य की देन है। संस्कृत कथा साहित्य में विवेचित आख्यायिकाओं तथा गल्पों की प्राचीन परंपराओं से संबंध जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

कहानी आधुनिक युग की सबसे सशक्त गद्य विधा मानी जाती है। आज के वर्तमान समय में कहानी विधा के पाठक वर्ग अन्य सभी गद्य विद्या की तुलना में सबसे अधिक है। इसी कारण के चलते आज पत्र–पत्रिकाओं में कहानियारें की मांग सर्वाधिक है। गद्य की सभी विधा की तुलना में आज हिन्दी कहानी में यथार्थ और युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई देती है। विश्व में हिन्दी भाषा का प्रभाव दिन–ब–दिन बढता ही जा रहा है। इसका कारण है कि लगान सिनेमा का ऑस्कर पुरस्कार के लिए चुना जाना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। संसार में हिन्दी भाषा को पढने और समझने वालों की तादाद सबसे अच्छी है। इसलिए कहानीकार या पटकथाकार के रूप में इस विभाग में सुनहरा अवसर मिलता है। साहित्य पत्रिकाओं, सिनेमा, निजी चैनेल्स, दूरदर्शन आदि में हिन्दी अध्येता अपना कैरियर बना या कर सकता है।

मनुष्य के जीवन में भाषा का अनन्य साधारण महत्व है। हमारा जीवन भाषा के बिना गूंगा है। मानव समाज में अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए भाषा यह महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य के मन में नव निर्मित कल्पना, भाव, विचार और जिज्ञासा दूसरों तक पहुंचाने के लिए भाषा का सहारा लिया जाता है। मानव समाजशील प्राणी होने के कारण से समाज के अन्य व्यक्ति से उसका संबंध आता है। वह अपने जीवन में आने

वाले हर्ष–उल्लास तथा सुख–दुःख दूसरों को बताकर मन का बोझ हल्का करता है। इसीलिए संवाद मनुष्य के लिए अति महत्वपूर्ण है। साहित्य का दायरा काफी बढ़ा है। हिन्दी साहित्य में अलग–अलग विधाएं हैं जैसे कि कहानी, नाटक और उपन्यास आदि। नाटक, उपन्यास तथा कहानी संवाद अहम् भूमिका अदा करता है। रोजमर्रा के जीवन में चतुर एवं सफल व्यक्ति, दूसरे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मनुष्य अपने पारस्परिक संवाद से अनुभव, ज्ञान, अध्ययन और भावनाओं का प्रकटीकरण करता है। निजी चैनल से प्रसारित धारावाहिक में सिनेमा, डॉक्यूमेंट्री, दूरदर्शन तथा शॉर्ट फिल्म आदि में हिन्दी अध्येता को अवसर मिलता है।

संदर्भ :–

1. अनुसंधान प्रक्रिया एवं रूपरेखा – डॉ. देवीदास इंगले।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. भालेंदुशेखर तिवारी।
3. प्रसारण और फोटो पत्रकारिता – डॉ. ओम गुप्ता।
4. अनुवाद चिंतन – डॉ. अर्जुन चव्हाण।
5. हिन्दी भाषा में रोजगार के अवसर – डॉ. विकास पाटिल।

मो. नं. 9763784601, Email ahirea513@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 101-103

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी और रोजगार की संभावनाएँ

–डा. संदीप पांडुरिंग शिंदे

कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी।

हिंदी दुनियां की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इस समय दुनियाभर में हिंदी बोलने वालों की संख्या 55 करोड़ से ज्यादा है, वहीं हिंदी समझ सकने वाले लोगों की संख्या करीब 1 अरब से भी ज्यादा है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है।

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार "संघ सरकार के सभी कार्य हिंदी में किये जाने हैं; अतः राजभाषा अधिनियर्म 1963, राजभाषा संकल्प, 1968 और राजभाषा नियम, 1976 में हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी प्रावधान किये गये हैं, जो भारत सरकार के सभी कार्यालयों में लागू है। आज देश में सरकारी कार्यालयों के साथ–साथ प्रिंट मिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच और संस्थाओं में हिंदी के इस्तेमाल में इजाफा हुआ है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर अब हिंदी का ही दबदबा है। गूगल और माईक्रोसॉफ्ट जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिंदी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है। इससे स्पष्ट है कि हिंदी आज देश की भाषा न रहकर वैश्विक भाषा बन गई है। विश्व बाजार में अपनी जगह बनाई है। ऐसे में हिंदी भाषा में कैरियर की भी बहुत संभावना है।

हिंदी और रोजगार की सिंभावनाएँ :–

1. हिंदी राजभाषा अधिकारी :–

केंद्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहां हर प्रकार से हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिंदी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आप हिंदी विषय में स्नातक और एक विषय के रूप में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी के रूप में कैरियर बनाया जा सकता है। सरकारी बैंक अथवा वित्तीय संस्थांनों में भी राजभाषा अधिकारी पद होता है। जिसका कार्य होता है बैंकों में हिंदी का प्रयोग को बढाना, दस्तावेजों का अनुवाद करना, हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन करना तथा कर्मचारियों के मन में हिंदी के प्रति लगाव उत्पन्न करना। राजभाषा अधिकारी को अच्छा वेतन मिलता है।

2. हिंदी अनुवादक और द्विवभाषिया :–

ट्रांसलेशन यानि अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है। दुनियाभर में जैसे–जैसे हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे–वैसे अनुवादकों और द्विभाषाविदों की मांग बढ़ती जा रही है। कई देशी–विदेशी मिडिया संस्थान, राजनैतिक संस्थाएं, पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े–बड़े होटलों में अनुवादकों और दुभाषियों की अच्छी खासी मांग है।

प्रिंट मीडिया, नीजि कंपनियों तथा सरकारी विभागों में हिंदी अनुवादक और हिंदी लेखक के रूप में लेखक

उपलब्ध हैं। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषा में लेख लिखने वाले अंर्तराष्ट्रीय लेखकों के लेखों का अनुवाद हिंदी में किया जाता है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था बन चुकी है। बहुत सी विदेशी कंपनियों ने अपना कारोबार भारत में शुरू किया है, तो भारतीय कंपनियों ने विदेश में अपने पैर पसारे हैं। इसलिए हिंदी अनुवादकों की माँग बढी है। भारत देश के चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए अनिवासी भारतीय भी अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिससे भारत में या तो वे निवेश कर सकें अथवा वापिस लौट आयें। 1980 और 1990 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई परिणास्वरूप अनेक विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में आईं है।

3. मीडिया :–

इलेक्ट्रानकि मिडिया और व प्रिंट मिडिया की परिकल्पना हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के अलावा नहीं की जा सकती। मिडिया ने विपणन से लेकर रिपोर्टर तक रोजगार प्रदान किए हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार का एक आकर्षक विकल्प है, जहां मेहनती और प्रतिभा संपन्न युवाओं के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इस दौर में हिंदी अखबार और न्यूज चैनल की संख्या भी काफी है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र–पत्रिकाएं हैं जहां हिंदी भाषियों के लिए दरवाजे खुल हैं।

4. रेडियो जॉकी और समाचार वाचक :–

रेडियो प्रस्तोता अमीन सयानी की आवाज किसने न नहीं सुनी। नवेद की आवाज से कौन नावाकिफ है। इन्होंने हिंदी में रेडियो जॉकी का कैरियर बनाया। ऐसी बहुत सी प्रतिभाएं हैं जो इस क्षेत्र में नाम और दाम कमा रही हैं। यदि आप भी हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं, आवाज़ अच्छी है तो यह एक कैरियर ऑप्शन है। इसके साथ ही समाचार वाचक भी एक विकल्प है। बस आपको अपनी सधी हुई प्रभावशाली आवाज़ें समाचार पढ़ने होते हैं और देश–विदेश की घटनाओं की जानकारी देनी होती है।

5. स्क्रिप्ट राइटिंग :–

फिल्मों धारावाहिकों और विज्ञापन कंपनियों में स्क्रिप्ट राइटर्स की माँग बहुत है। आज अनेक टी.वी चैनल अपने–अपने चैनलों पर अनेक धारावाहिकों का प्रसारण कर रहें हैं। अनेक धारावाहिकों ने अनेक महिनों से टी. वी. पर लगातार अपना दबदबा बनाएँ रखा है। इसका श्रेय स्क्रिप्ट रायटर को ही जाता है। तो आज स्क्रिप्ट रायटरों की भी बहुत बड़ी माँग है। पहले तो अनेक धारावाहिक बहुत ही लोकप्रिय थे। उन धारावाहिकों का समाज मन पर काफी प्रभाव रहा। मगर आजकल उतने सक्षम लेखक नहीं हैं, जिसके चलते प्रभावी धारावाहिकों की कमी महसूस हो रही है। इसके लिए प्रतिभा संपन्न हिंदी भाषा के छात्र इस क्षेत्र में आएँगे तो काफी अच्छा धारावाहिक का निर्माण करेंगे जिसका इंतजार समाज कर रहा है।

6. हिंदी अध्यापक :–

हिंदी का अध्ययन करने वालों के बीच अध्यापन एक पारंपरिक कैरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है। उच्च शिक्षण संस्थानों से लेकर प्राथमिक स्तर तक शिक्षण के अवसर योग्यतानुसार उपलब्ध रहते हैं और इसे सदाबहार कैरियर माना जाता है। आवश्यक परीक्षा पास होने वाले छात्रों को महाविद्यालयों में सहायक प्रोफेसर

और प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति के अवसर मिल सकते हैं।

7. हिंदी में क्रिएटिव राइटिंग :-

रचनात्मक लेखन जिसे आज के युवाओं की भाषा में क्रिएटिव राइटिंग कह सकते हैं। इस क्षेत्र में 'स्वतंत्र लेखन' और नियमित लेखन किया जा सकता है। फिल्म, टीवी, रेडियो, वेबसाइट, पोर्टल आदि क्षेत्रों से जुड़कर हिन्दी में लोकप्रिय लेखन किया जा सकता है। जिससे लोकप्रियता तथा काफी पैसा भी मिलता है।

इसके साथ गायक, गीतकार, कार्यक्रमों के निवेदक आदि क्षेत्र में भी हमें रोजगार मिल सकता है।

8. कॉल सेंटर :-

डोमेस्टिक कॉल सेंटर में हिंदी के आधार पर भी नौकरी मिलने लगी है। टेलीकम्युनिकेशन में भी हिंदी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

9. सॉफ्टवेयर :-

हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरुरत के मद्देनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसर मिल रहे हैं।

10. हिंदी से स्नातक करने के बाद कई प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्सिव के अलावा रेलवे आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष :-

हिंन्दी भारत की राजभाषा है। वह देश की सम्पर्क भाषा है। दुनियां में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। आज हिन्दी भाषा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भाषा बन चुकी है। वे हिन्दी का महत्व जान गए है। जिसके कारण वे हिन्दी वे हिन्दी का प्रयोग करने के लिए मजबूर है। इसी कारण हिन्दी भाषा में रोजगार की काफी संभावनाएं हैं। आज हिन्दी राजभाषा अधिकारी, हिंदी अनुवादक और द्विभाषिया, मीडिया, रेडियो जॉकी और समाचार वाचक, स्क्रिप्ट राईटिंग, हिन्दी अध्यापक, हिन्दी में क्रिएटिव राइटिंग, गायक, गीतकार, कार्यक्रमों के निवेदक आदि पदों पर रोजगार उपलब्ध हैं।

मो 9960165516

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 104-107

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी के अध्यायता को रोजगार के अनेकानेक शुभ अवसर

–डॉ अंजना अप्पासाहेब कमलाकर

र.भा. माडखोलकर महाविद्यालय, चंडीगढ़।

हिंदी हमारी मान है, भारत की शान है,
और हिंदी के बिना, सारा विश्व गूंगा है।

प्रस्तावना :–

भारत की बिंदी हिंदी भाषा के अध्ययन को रोजगार के अनेकानेक शुभ अवसर आज पूरे विश्व भर में उपलब्ध है। भारत स्वतंत्रता के बाद संविधान की अपेक्षाओं के अनुरूप हिंदी राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप के रूप में स्वीकृति मिल गई हिंदी आज बोलचाल तक या साहित्य की भाषा तक सीमित नहीं है और नहीं भारत तक. विश्व अर्थव्यवस्था में आए व्यापक परिवर्तन और निजी करण भूमंडलीकरण सूचना क्रांति का विस्फोट के परिणाम स्वरूप भारत के सबसे बड़े बाजार शिक्षा की भाषा के रूप में स्थापित होती जा रही है। आज पूरी दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। इस बदलते दुनिया का भयानक सच है तो बेरोजगारी। 21 इसवी सदी के उन्नत माहौल में रोजगार के सबसे अधिक अवसर हिंदी भाषा के अध्ययन के लिए है। भारत जैसे देश में हिंदी राजभाषा के अध्ययन मीडिया के बुलबुले पर रोजगार की अनेक संभावनाएं दावत दे रही है। इस युग की मांग के हिंदी अध्येयता को पहचानना ना आवश्यक है। समाज और देश के विकास के लिए भी अब हिंदी के इस प्रयोजन पक्ष को स्वीकारना होगा। हिंदी भाषा का लक्ष्य रोजगार शिक्षा हिंदी कार केयर करना ही करना ही रहा है। आज सरकारी दफ्तरों के बाबुओं से लेकर निजी कंपनियों के प्रबंधन संचालकों तक को रोजगार एवं कारोबारियों का विस्तार बढ़ाने के लिए हिंदी ही एक मात्र भाषा मानी जाती है। के अध्ययन को रोजगार के अनेकानेक शुभ अवसर हम इस आलेख में देखेंगे।

आज हिंदी भाषा के अध्यायों को संपादक अनुवादक संवाददाता निवेदक राजभाषा अधिकारी प्रूफ़ रीडर, डॉक्यूमेंट्री, राइटर, गीतकार, पटकथा लेखक, संवाद लेखक, समालोचक, विज्ञापन, बैंकिंग, प्रकाशन संस्थाएं, मीडिया, पर्यटन, गाइड, ग्राहक सुविधा, केंद्र–राज्य भाषा संस्थान प्रबंधन, नागरिक सेवाएं, वेब, पत्रकारिता, आदि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर आज उपलब्ध है :

1. अनुवाद :–

एक साहित्यिक विधि है। बीसवीं शताब्दी में अनुवाद को जो महत्व प्राप्त हुआ वह उसमें पहले नहीं मिला था। 21वीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है। अंतः अनुवाद को आधुनिक युग की मांग की कहना गलत नहीं होगा। अभाव की पूर्ति एवं जितना सांपों की तृप्ति के प्रयास में मनुष्य ने अनुवाद की खोज की। मनुष्य को

प्रेम समय धन एवं प्रतिभा की सीमाओं के कारण संसार के सभी भाषाएं सीखना संभव नहीं था। अभाव और सीमा के इसी बिंदु ने संसार में अनुवाद को जन्म दिया। निजी एवं सरकारी अनुवाद ब्यूरो इस जरूरत को पूरा करने के लिए स्थापित किए गई है। भारत सरकार ने भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद ब्यूरो बनाने की योजना बनाई है। कर्मचारी चयन आयोग सरकारी कार्यालयों में अनुवाद को की मांग को देखते हुए सालाना परीक्षाओं का आयोजन करता है। अनुवाद के साथ दुभाषिए भी रखे जा रहे हैं। विदेशी फिल्मों की हिंदी में डबिंग हो अथवा संसद में अंग्रेजी भाषा से हिंदी में रूपांतरण या विदेशी शिष्टमंडल की भाषा का हिंदी में रूपांतरण इन सभी कार्यों के लिए दो भाषियों की आवश्यकता होती है। दुभाष यह को रोजगार के अलग से अवसर भी मिल रहे हैं। अंततः अनुवाद के क्षेत्र में जिन छात्रों को अपना भविष्य बनाना है उसके लिए बहुत बड़ा अवसर है।

2. मीडिया :–

मीडिया तो लोकतंत्र का महत्वपूर्ण संभव स्तंभ है।जनता को सांसद कहां जाता है, इसका अधिवेशन निरंतर चलता रहता है। आज मीडिया दो प्रकार के यानी प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया साइबर मीडिया के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार किया है। इस क्षेत्र में हिंदी छात्रों को रोजगार के कई सारे शुभ अवसर प्राप्त है। इन दोनों क्षेत्रों में संपादन एवं लेखन का मुख्य कार्य है। रेडियो टीवी एवं इंटरनेट मीडिया के नए क्षेत्र है। रोज का बनाने एवं स्क्रिप्ट लिखने का कार्य मुख्य रूप से होता है। मीडिया संस्थानों ने पत्रकारिता अध्ययन एवं उसके लिए सामग्री निर्मिती का कार्य भी तेजी से बढ़ रहा है। क्षेत्र में भी हिंदी अध्य अदाओं को अपना भविष्य बेहतर तरीके से बनाने का सुंदर मौका है।

3. विज्ञापन :–

आज का युग विज्ञापन का युग है। पन्ने हमारी जीवन का प्रत्येक कोना काबीज किया है। हर क्षेत्र में विज्ञापन अनिवार्य रूप से मौजूद है। जनसंचार के क्षेत्र में विज्ञापन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विज्ञापन वाणिज्यिक और व्यावसायिक क्षेत्रों के संवर्धन के लिए जन्नत बनाता है। इसलिए आज के प्रचार माध्यम की भांति विज्ञापन एक सशक्त माध्यम बन गया है। विज्ञापन सामग्री के जरिए उपभोक्ताओं तथा विज्ञापित वस्तुओं के बारे में संदेश आदि पहुंचाए जाते हैं। यह विज्ञापन सामग्री घर कार्यालय तथा बाहर विभिन्न स्थानों पर हर समय उपलब्ध कराई जाती है। आकर्षक विज्ञापन बनाने के लिए अखबारों में नेट पर सोशल मीडिया पर कहीं कंपनियां प्रतियोगिताएं रखती है। इन प्रतियोगिताओं में अच्छे खासे विज्ञापन लेखक मिल जाते हैं। हिंदी अध्यक्षों को विज्ञापन में भविष्य बनाने वाले के लिए यह क्षेत्र सुनहरा मौका है।

4. बैंकिंग :–

आज सरकारी बैंकिंग क्षेत्र में ही नहीं बल्कि निजी बैंकिंग क्षेत्र में भी अलग से हिंदी विभाग स्थापित हो रहा है। यहां ऐसे अधिकारी नियुक्त किए जा रहे हैं जो बैंक में हिंदी माध्यम से व्यवहार को बढ़ावा दे सके। समाज के 3 मूल तत्व के लोगों के बीच पहुंचाने के लिए बैंक हिंदी को खास अहमियत दे रही है। तृणमूल स्तर तक के लोगों के बीच कारोबार करने उनकी संवेदनाओं को छूने के लिए हिंदी विज्ञापनों एवं अधिकारियों को सहारा लिया जा रहा है बैंक में यह अधिकारी बैंक एवं ग्राहक के बीच सेतु का काम कर रहे हैं। आज बैंकिंग में यूनिकोड न्यूनिकोड के आगमन की वजह से कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना आसान हो गया है। इसके पूर्व अधिकतर तकनीकी काम अंग्रेजी में ही होता था। बैंक अपने यहां नेट बैंकिंग को भी हिंदी में विकसित करने में प्रयास कर

करता दिखाई दे रहा है। अंततः बैंकिंग में करियर के लिए हिंदी अद्यतन को बेहतरीन सुनहरा मौका है।

5. हिंदी अद्यतन को रोजगार हेतु ता जानकारी देने वाले कुछ वेबसाइट निम्नलिखित है :

1. www.du.ac.in
2. www.ignou.ac.in
3. www.bhu.ac.in
4. www.jobinhindi
5. www.academicjob.in
6. www.careerjeet.co.in
7. www.hindijobs
8. www.upscexam.com
9. www.employmentnews.in/Careear in Functional Hindi
10. http://www.rojgarsamachar.gov.in
11. http:// www.computerduniyain./hi
12. http://www.careeardisha.org
13. http://careear7india.com
14. http://wwwcareearsalah.com
15. www.freejobalart.com

6. पर्यटन मार्गदर्शक :-

विशाल भू प्रदेश वाले हमारे देश में कहीं ऐसे इलाकों में सामाजिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक धार्मिक दृष्टि से अनमोल धरोहर एवं स्थल है। जहां देशभर से लोग उन्हें देखने और समझने जानने के लिए आते हैं। यदि हम उड़ीसा का कोणार्क मंदिर को देखने के लिए गए तो कोणार्क का मंदिर की जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें ऐसे व्यक्ति की गाइड के रूप में जरूरत पड़े जो हमें अच्छी तरह समझा है। क्योंकि वहां के स्थानीय भाषा उड़ीसा से हम परिचित नहीं है। ऐसे समय हमें हिंदी की जानकारी देने वाले व्यक्ति को जरूरत होगी और वहां हमें हिंदी भाषा बेहतरीन जानकारी देंगे। अंततः प्रत्येक प्रांत में आईसीआईसी आस्तिक धरोहर है जैसे महाराष्ट्र में वेरुल अजंता तमिलनाडु की कन्याकुमारी विवेकानंद स्मारक केरल के त्रिवेंद्र में पद्मनाभ मंदिर आदि ऐसे स्थलों की सही जानकारी देने हेतु पर्यटक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। तो हिंदी भाषा अध्ययन के पास बहु भाषा व्यक्तित्व कुशल मौखिक भाषा उच्चारण में स्पष्ट दावा चातुर्य भाषा में सरल, सहज, शुभम, कोमल अधिक गुण हो। तो वहां पर्यटक मार्गदर्शक का कार्य कर रोजगार के बड़े से बड़े सुअवसर हिंदी अध्याय ताऊ को प्राप्त हो सकता है।

उपयुक्त हिंदी भाषा अध्यक्षों को रोजगार के शुभ अवसर के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी रोजगार के शुभ अवसर प्राप्त कर सकता है, जैसे कोर्स निर्मिती का यह कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, गजल, नाटक, एकांकी, जीवनी आत्मकथा, डायरी, गीत, समाचार, आदि लेखन में साथ ही वर्तनी दोष संशोधक क्लेश लेखक फिल्म लेखक आदि साहित्य विधा तथा साहित्य विधा में हिंदी भाषा का अध्ययन और अर्जन कर सकता है। इसके

अलावा पोस्टर, स्टीकर, बैनर, ग्रीटिंग कार्ड, स्लोगंस, लेटर हेड, नेम प्लेट, बायोडाटा आदि ऐसे असंख्य रूपों में हिंदी अध्यक्ष रोजगार पाकर अपना अपने परिवार समाज देश का विकास करने के साथ–साथ खुशियां वाले से अपना जीवन यापन कर सकता है। अंततः यह कहना गलत न होगा कि हिंदी अध्यक्षों को भविष्य में रोजगार ही रोजगार है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. डॉक्टर अर्जुन चवहान : मीडिया कालीन हिंदी स्वरूप एवं संभावनाएं।
2. प्रोफेसर रमेश जैन–जन संचार में करियर।
3. भोलानाथ तिवारी :–हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ।
4. कैलाश नाथ पांडे :– प्रयोजन्मूलक हिंदी की नई भूमिका।
5. डॉक्टर अंबादास देशमुख :– मुल्क हिंदी अधुनातन आयाम।

मो. 9423712949

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 108-110
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रोजगार की भाषा हिन्दी

–डा. संजय बजरंग देसाई
कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी।

प्रास्ताविक :–

भारत बहुभाषिक देश है। भारत में राजभाषा के रूप में हिन्दी और अंग्रेजी को स्वीकारा है। इसमें से हिन्दी अपने देश की भाषा है। भारत की बहुत बड़ी आबादी हिन्दी बोलती है। हिन्दी का साहित्य समृद्ध है। आज देश की प्रमुख सम्पर्क भाषा हिन्दी है, साथ ही दुनियां की सम्पर्क भाषा बनती जा रही है। आज अनेक देशों में हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या काफी है। विश्व बाजार इसके ही ध्यान में रखते हुए अपने कारोबार के लिए हिन्दी भाषा का सम्पर्क का साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। जिससे हिन्दी समृद्ध होती जा रही है तथा हिन्दी भाषा में रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही हैं।

रोजगार की भाषा हिन्दी :–

भारत के राज्यों में हिन्दी एक सम्पर्क भाषा के रूप में अपनी जड़े जमा चुकी है। सिर्फ यहीं तक नहीं बल्कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, दक्षिण एशिया, खाड़ी के देशों आदि में भी हिन्दी अपनी लोकप्रियता में सतत् वृद्धि करती जा रही है। वर्तमान में चीनी भाषा अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है परन्तु शीघ्र ही चीनी भाषा का स्थान हिन्दी ग्रहण कर लेगी क्योंकि विश्व में भारतीय चाहे तमिलनाडु के हो, केरला या ओडिशा के हो अथवा किसी अन्य भारतीय राज्य के जब यह सब विदेशों में आपस में मिलते हैं तो इनकी सम्पर्क भाषा हिन्दी होती है। इसके अतिरिक्त विदेशों में हिन्दी पठन–पाठन का भी चलन जोर पकड़ने लगा है। हिन्दी सोसाइटी सिंगापुर द्वारा कुल 7 हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र चलाये जा रहे है जिसमें बच्चों से लेकर व्यस्कों तक को हिन्दी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रान्त की सरकार ने देश की केन्द्र सरकार से हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में शामिल करने की गुजारिश की है।

भारत देश के विकास को देखते हुए अनिवासी भारतीय भी अपनी अगली पीढी को हिन्दी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिससे भारत में या तो वे निवेश कर सके अथवा वापिस लौट आये। सन् 1990 के बाद में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से शुरू हुई। परिणामस्वरूप अनेक विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में आ गई। वैसे देखा जाए तो हमारी संस्कृति में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' वर्षों से रचा–बसा है। पर जिस साज–सज्जा से वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण ने खुद को प्रस्तुत किया है, उससे ही प्रभावित होकर भारतीय विज्ञापन बोल पड़ा– 'कर लो दुनिया, मुट्ठी में'। कथा साहित्य, यात्रा, फिल्मों, विदेशी वस्तुओं से चलते–मचलते, विदेश कब देश जैसा लगने लगा पता ही नहीं चला। कल तक नौकरी के लिए की

जाने वाली विदेश यात्रा कब शॉपिंग और भ्रमण के रूप में जिंदगी की आम चर्चा का विषय हो गई, यह विभिन्न देशों के जनमानस को भी ज्ञात नहीं। भूमंडलीकरण के इस आरम्भिक दौर में हिन्दी ने स्वयं को राष्ट्र की बिंदी प्रमाणित करते हुए अपने डैने को हनुमान की तरह विशाल रूप देने में सफलतापूर्वक प्रयत्नशील है।

भारत देश की सभ्यता और संस्कृति को इसी प्रकार की भाषा संचेतना सहित आठ सौ वर्षों से कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त किया जा रहा है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में डिजीटल मिडिया द्वारा हिन्दी को अफ्रीका, मध्य–पूर्व, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में एक चित्ताकर्षक ढंग से लगातार पहुंचाया जा रहा है। दूसरी और बहुराष्ट्रीय कम्पनियां दक्षिण एशिया के बाजार में पैठ लगाने हेतु हिन्दी की उपयोगिता में उत्तरोत्तर बढ़ौतरी करते जा रही है। भूमण्डलीकरण 21वीं शताब्दी में वैश्विक गांव बनते जा रहा है। एक अरब से भी अधिक नागरिकों के भारत देश ने, तेज गति से विकसित हो रही इसकी अर्थव्यवस्था ने विश्व को अपनी ओर देखने के लिए विवश कर दिया है।

विश्व स्तर पर हिन्दी के विस्तार में हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका है और अभी भी हिन्दी साहित्य अपनी इस भूमिका को बखूबी निभा रहा है। समय के संग भूमिका के तरीके में बदलाव आते जा रहे हैं। हिन्दी साहित्य अब तकनीकी से भी जुड़ रहा है तथा कम्प्यूटर की विभिन्न विधाओं में हिन्दी अपनी उपस्थिति को दर्ज कराते बढ रही है। हिन्दी गद्य विधा में अभिव्यक्त, गर्भनाल आदि जैसी वेब पत्रिकाएं हैं तथा काव्य में अनुभूति आदि जैसी वेब पत्रिकाएं हिन्दी साहित्य के बेहतर छवि को निरंतर निखार रही है तथा ऐसी कई पत्रिकाओं को विदेशों से एक बड़ा पाठक वर्ग मिला है। जालघर पर अनेकों हिन्दी पत्रिकाएं और ब्लॉक हिन्दी के महत्व को दर्शाते हुए प्रभावशाली ढंग से प्रचार–प्रसार में व्यस्त हैं। भूमंडलीकरण के युग में सूचना और प्रोद्योगिकी के ताल–मेल के बिना हिन्दी के विस्तार की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अपनी तमाम कठिनाईयों के बावजूद भी हिन्दी ने जिस तरह प्रौद्योगिकी जगत में अपना पैर जमाया है उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा मुक्त कण्ठ से जितनी ज्यादा की जाए उतनी ही कम है।

कम्प्यूटर से जुड़े रहने से इंटरनेट की दुनियां में हिन्दी के फैलते साम्राज्य की नवीनतम जानकारियां मिलती रहती हैं। प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक श्मिट का मानना है कि अगले पांच से दस सालों में हिन्दी इंटरनेट पर छा जाएगी और अंग्रेजी और चीनी के साथ हिन्दी इंटरनेट की दुनियां की प्रमुख भाषा होगी। आज हिन्दी के अनेक फॉन्ट माइक्रोसॉफ्ट उपलब्ध करवा रहा है। यूनिकोड जैसे फॉन्ट और गूगल द्वारा उपलब्ध करवाए जा रहे भाषा इनपुट टूल्स ने समय के अनुसार हिंदी के संचार को बाधित नहीं होने दिया है।

हमारे देश के बाजार का असर है जिसमें आर्थिक विकास, जनसंख्या आदि ने भूमण्डल को अपनी ओर मोड़ लिया है। वरना किसने सोचा था कि अमेरिकन प्रशासन एक दिन बोल उठेगा कि 21वीं शताब्दी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका नागरिकों को हिन्दी सिखानी चाहिए। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा हिन्दी को गले से लगाना तो सर्वविदित है। वस्तुतः हिन्दी अब केवल जनसामान्य की भाषा ही नहीं रह गई है बल्कि बाजार की एक मजबूरी भी बन गई है। चैनलों पर रिमोटिय उड़ान भर कर देखिए तो हर ठहराव पर विज्ञापन हिन्दी ही बोलते मिलेगा। हिंदी चाहे विज्ञापन की भाषा के रूप में हो या किसी अन्य विधा में उसका प्रभाव किसी सीमा तक ही नहीं रहता विभिन्न प्रसार–प्रचार माध्यमों से भूमण्डल में विस्तृत हो जाता है।

धरती से 35,000 फीट से अधिक ऊँचाई पर हिन्दी की कमी का अनुभव होने लगा है तथा विदेशी वायु

सेवा कम्पनियां, विशेषकर यूरोप की कम्पनियां हिन्दी को अपनी आवश्यकता बतला रही हैं। आस्ट्रियन एयरलाइन्स, स्विस एयरलाइन्स, एयर फ्रान्स और अलीटॉलिया ने कहा है कि भारतीय यात्रियों की लगातार हो रही वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए वे भारत की अपनी प्रत्येक उड़ान में कम से कम ऐसे दो क्रू को रखेंगे जो हिन्दी बोलना चाहते हो। भूमण्डल पर हिन्दी दौड़ रही है तथा वायुमण्डल में उड़ रही है तथा राष्ट्रीय अस्मिता और अस्तित्व को पारदर्शी तौर पर विश्व के समक्ष सफलतापूर्वक रख रही है।

निष्कर्ष :-

हिन्दी हमारी राजभाषा है। देश की सम्पर्क भाषा है मगर आज युवकों की रोजगार की भाषा बन चुकी है। आज वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी का महत्व काफी बढ़ चुका है। पूरी दुनियां में हिन्दी का बोलबाला है क्योंकि पूरी दुनियां में भारत के लोग पाए जाते हैं। वो विश्व बाजार को भारतीय लोगों को आकर्षित करने के लिए हिन्दी का सहारा है। इसीलिए उन्होंने हिन्दी को अपनाया है। तो हम कह सकते हैं कि चीनी भाषा के बाद हिन्दी ही वैश्विक भाषा बन जाएगी। आज हिन्दी का भारतीय बाजार में पूरी तरह वर्चस्व फैला है। अनुवाद, शिक्षा, पत्रकारिता, बैंकिंग विज्ञापन, सिनेमा, खान–पान आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी एक आधार का काम कर रही है। हिन्दी के न जाने कितने ब्लॉग, ऑनलाइन साहित्य, पत्र–पत्रिकाएँ, फेसबुक, ट्विटर आदि हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न रूप बन चुके हैं। इस कारण भाषा में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
महागांव कोल्हापुर विशेषांक Page No. : 111-115

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी में रोजगार की संभावनाएं

–डॉ. रूपाली दिलीप चौधरी

डॉ. अन्ना साहेब जी.डी. बेंडाले महिला महाविद्यालय जलगांव

'साहित्य संगीत कला विहीन
साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीन'।' –भतृहरि

जीवन की अभिव्यक्ति मानव की मूल और प्राकृतिक प्रेरणा है। इसमें मनुष्य अपने को प्रकट नहीं करता अपितु दूसरों को भी स्पष्ट करता चलता है। अंतर्मन की अनुभूति के द्वारा दूसरों के मन को जानने समझने और व्यक्त करने में सफल होता है। ह्रदय जब भाव से परिपूर्ण होकर अभिव्यक्त होता है तभी कला का जन्म होता है और कला का अविष्कार होता है मात्र भाषा से।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचा सकते हैं। आधुनिक युग में भाषा और साहित्य को वैश्विक रूप प्राप्त हुआ है। संचार विज्ञान और तकनीकी के युग में भाषा का भी महत्व निरंतर रूप से बढ़ता नजर आ रहा है। जब जब किसी भी भाषा का विस्तार एवं विकास होता है तब उसमें एक और दृष्टि जुड़ जाती है और वह है रोजगार की संभावना। आज हिंदी भाषा के बढ़ते प्रचलन के कारण अनेक रोजगार का निर्माण हुआ है। विविध क्षेत्रों में स्वीकृति और प्रयोजनीयता बढ़ने से नई दृष्टि से हिंदी की ओर देखा जाता है।

ज्ञानार्जन के कारण अनुवाद के क्षेत्र का विकास हुआ। साहित्य, भाषा, कला, संस्कृति के बढ़ते चरण में कई क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। हिंदी भाषा में युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खोल दिए। स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के पश्चात युवाओं को क्या करें? यह प्रश्न हमेशा सताता रहता है। अपना जीवन निर्वाह करने के लिए किन साधनों का एवं उपादान ओं का प्रयोग करें यह बहुत बड़ा सवाल उनके सामने आता है। लेकिन आज के युवाओं को हिंदी इस विषय में नए आयामों को खोल दिया।

1. राष्ट्रीय कृत एवं निजी बैंकों में
2. राजभाषा अधिकारी के रुप में
3. स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षा के प्राध्यापक के रूप में
4. अनुवादक के रूप में
5. जनसंचार माध्यमों के लिए
6. पत्रकारिता के रूप में

7. घोस्ट राइडर

कंटेंट राइटर

विज्ञान एवं तकनीकी लेखन

तकनीकी शब्दावली का निर्माण

8. हिंदी की विदेशी भाषा के रूप में शिक्षा

9. विदेशों में हिंदी पत्रकारिता।

ज्ञानार्जन के कारण अनुवाद के क्षेत्र का विकास हुआ। साहित्य, भाषा, कला, संस्कृति के बढ़ते चरण में कई क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। हिंदी भाषा में युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खोल दिए। स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के पश्चात युवाओं को क्या करें? यह प्रश्न हमेशा सताता रहता है। अपना जीवन निर्वाह करने के लिए किन साधनों का एवं उपादान ओं का प्रयोग करें यह बहुत बड़ा सवाल उनके सामने आता है। लेकिन आज के युवाओं को हिंदी इस विषय में नए आयामों को खोल दिया। हिंदी में खासकर बहुत ऐसे सेक्टर है जिसमें कार्य करने के पश्चात लोगों ने बड़ी सफलता हासिल की है। बहुत अच्छा मुकाम बना लिया हिंदी में केवल काम ही नहीं दिया अपितु नाम भी दिया। कई लोग सफलता केवल हिंदी के कारण ही कर पाए हैं।

1. जहां हम सभी लोग मीडिया से बहुत अच्छे खासे परिचित हैं हिंदी में पहले मीडिया केवल प्रिंट मीडिया के नाम से जाना जाता था जो अखबार मैगज़ीन पत्र–पत्रिकाओं को निकालता था। प्रिंट मीडिया के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वेब मीडिया और सोशल मीडिया इस प्रकार की मीडिया को आज विभाजित किया जाता है। प्रिंट मीडिया के माध्यम से यदि हम अखबार में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं को देखते हैं तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से टीवी एवं न्यूज़ चौनलों को देखते हैं। वहीं दूसरी ओर विद मीडिया इंटरनेट और न्यूज़ चौनलों के जरिए फेसबुक इंस्टाग्राम और ट्विटर को भी दर्शाता है तो सोशल मीडिया के जरिए हम फेसबुक और यूट्यूब के माध्यम से उन्नति के नए आयाम को खोलते हैं। यूट्यूब के माध्यम से जहां ल्वनजवइमत हम बन जाते हैं तो ए बी एफ न्यूज रेडियो के रूप में हम जब शेयर करते हैं तो यूट्यूब के जरिए हम अपनी अभिव्यक्ति को ही नहीं बल्कि हम उन्नति के नए दरवाजों को अपने पास अपनी मंजिलों को ले पाते हैं।

2. प्रशासन एवं सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी अधिकारी :–

प्रशासन एवं भारतीय भाषा के रूप में हिंदी साहित्य को भी देखा जाता है। B.C.S., I.S.S. जैसी भाषाओं में भी हिंदी साहित्य को अग्रगण्य माना जाता है। केवल प्रशासनिक अधिकारी के रूप में ही नहीं बल्कि प्रतियोगिताओं के परीक्षा स्वरूप तथा क्लरीकल जॉब के लिए भी पर्याई शब्द विलोम शब्द व्याकरण अनेक शब्दों के लिए एक शब्द इस प्रकार के तमाम ऐसे शब्दों को देखा जाता है पूछा जाता है अतः हिंदी एक सेक्टर के रूप में बहुत अच्छी आय हम कमा सकते हैं।

संविधान के संशोधन 1967 के अनुसार सभी सरकारी अधिकारियों को कार्यालयीन कार्य को संपादित करने के लिए अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य माना गया स्टॉप केंद्र सरकार हो या राज्य

सरकार इन दोनों की विभागों में उप विभागों में हिंदी अधिकारी अनुवादक प्रबंधक या प्रबंधक के रूप में रोजगार के तमाम ऐसी संभावनाएं मौजूद हैं। अंग्रेजी के साथ आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, निविदा इन की विभिन्न प्रारूपों को हिंदी में बनाना अनिवार्य माना गया इस कारण रोजगार के तमाम संभावनाएं अपने आप सामने आ गई। I.A.S. अधिकारी के रूप में जितेंद्र सोनी, कृष्णकांत पाठक, निशांत जैन जैसे लोगों ने प्रशासन में हिंदी के साथ उच्चतम कार्य किया। इन लोगों को केवल हिंदी ने काम दिया बल्कि एक उच्चतम नाम भी प्रदान किया।

3. जनसंचार माध्यम :–

आकाशवाणी दूरदर्शन मशीनीमा आदि के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। क्रांतिकारी परिवर्तन इसलिए होते हैं क्योंकि दूरदर्शन रामायण महाभारत महाराणा प्रताप झांसी की रानी अहिल्याबाई जैसे तमाम ऐसी धारावाहिक मौजूद हुए जिसके द्वारा मनोरंजन के साथ–साथ उद्योग सालाना टर्न ओवर करोड़ों में पहुंच चुका है। नए–नए कार्यक्रमों के निर्माण के लिए प्रसारण संचालन एवं अभिनय के क्षेत्र में भी आज पहले से कहीं अधिक अवसर उपलब्ध है। आर.जे.; वी.जे;डी.जे.; के रूप में कार्यक्रम संचालक के तौर पर एक सुनहरे भविष्य के द्वार हिंदी के द्वारा खुल गए हैं। इसके माध्यम से स्क्रिप्ट राइटिंग, पटकथा लेखन, संवाद लेखन, डबिंग आर्टिस्ट, गीत लेखन, समाचार लेखन, वाचन, संपादन आदि।

4. विज्ञापन : एडवरटाइजमेंट् :–

विज्ञापन के क्षेत्र में भी एवं डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में भी हिंदी के लिए नए द्वार खोल दिए। जैसे हम यदि टीवी की बात करें तो टीवी पर हमेशा विज्ञापन आता था खेतान फैन का केवल वही है बहुत अच्छे हवा दे सकता था जिस कारण हेमा मालिनी फेमस हो गई थी। असली मसाले सच सच एमडीएच तथा वॉशिंग पाउडर निरमा के साथ–साथ ठंडा माने कोका कोला इस प्रकार के स्लोगन अर्थात पंच लाइन लिखने वाले व्यक्ति को भी अच्छी खासी आय मिल सकती है और आय के साथ–साथ उसका नाम भी बड़ा हो जाता है। क्योंकि हम हिंदी में बोलते हैं सुनते हैं लिखते हैं और उसी के अनुरूप हमें विज्ञापन भी करना आना चाहिए और यदि सोशल मीडिया पर हम एडवर्टाइजमेंट करते हैं तो वह डिजिटल मार्केटिंग कहलाती है और यह डिजिटल मार्केटिंग ही उन्नति के शिखरों को पार पहुंचा देती है।

5. पत्रकारिता :–

समाचार पत्रों एवं समाचार चैनलों की निरंतर बढ़ती हुई संख्या के कारण आज पत्रकारिता क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। किंतु यह हिंदी नागरी के रूप में हो क्योंकि वह सरल एवं शुद्ध हो। संपादक उप संपादक प्रूफरीडर आदि कई पदों पर हिंदी भाषा में आज रोजगार उपलब्ध है।

6. आत्म व्यवसाय के रूप में :–

किताबें लिखना आर्टिकल लिखना क्रिएटिव राइटिंग करना न्यूज़पेपर में फीचर लिखना जिसे अलग–अलग अखबारों में पर आते हैं उसे फीचर लिखना अखबारों में राइटिंग आर्टिकल लिखने के लिए हमें नौकरी छोड़ने की आवश्यकता नहीं होगी नौकरी करते हुए भी हम आर्टिकल को लिख सकते हैं आप आज पत्र–पत्रिका एवं

जर्नल्स के लिए अनेकानेक प्रकार की वेबसाइट है जिसमें विभिन्न विषयों के लेखकों के लिए नए अवसर पैदा किए गए हैं। इतना ही नहीं तो आईबीएम आईटी कंपनियां भी इस क्षेत्र में आगे आ रही है।

कंटेंट राइटर :–

आधुनिक युग में एवं तकनीकी की सामग्री को हिंदी में बनाने के लिए हिंदी लेखकों की आवश्यकता होती है। कंप्यूटर के सामान्य ज्ञान से भी आजीविका कमाई जाती है। कई बार साहित्य या कविता लिखते हैं तो उन कविताओं को जब बड़े–बड़े कवि सम्मेलनों में जाकर कविता को पेश करते हैं तो वह कभी अच्छी आय को प्राप्त कर सकता है।

राष्ट्रीय कृत एवं निजी बैंकों :–

अधिकारी के पद नियुक्तियों के लिए अभी आए दिन समाचार पत्रों में रिक्तियां प्रकाशित हो रही है। आईसीआईसीआई एचडीएफसी इन्होंने अपने व्यवसाय विस्तार के लिए नगरों के साथ–साथ ग्रामीण परिवेश ओं में भी साधारण परिवेश के लोगों की भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षित कर अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं। इस नीति से न सिर्फ लगातार बढ़ रही मंदी को थामने में मदद मिल गई है बल्कि ग्रामीण आंचल के एवं उप नगरों के बेरोजगार युवकों को भी रोजगार मिल रहाहै। Teaching, Primary, Secondary, College, University (NET, SET, TGT, PGT, GBT. Ph.D.) के क्षेत्रों मे भी अपनी उन्नति कर सकता है आज भारत भर के हर स्कूल में हिंदी को पढ़ाने का कार्य निरंतर रूप से हो रहा है। कई लोग हिंदी को पढ़ाने के पश्चात अपनी अच्छी आय को प्राप्त कर सकते हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में :–

आज युवा लोगों का भविष्य इनफॉर्मेटिव ज्ञान विज्ञान इनके हाथों में चला गया है। आज के युवाओं ने हिंदी में अपना नया स्कोप निर्माण किया है। परा आधुनिक युग में अच्छे ट्रांसलेटर की आवश्यकता है पुष्पा ट्रांसलेशन का डिप्लोमा करने के पश्चात दो तरह के अर्थात सरकारी एवं निजी मार्ग खुल जाते हैं। एसएससी एग्जाम कंडक्ट करती है जूनियर हिंदी ट्रांसलेटर की जिसके माध्यम से लोकसभा राज्यसभा बैग एवं रेल में राजभाषा अधिकारी के रूप में भी व्यक्ति कार्य करता है और कार्य के साथ–साथ अच्छी आय और अच्छा नाम भी उसे मिलता है। प्राइवेट सेक्टर में भी ट्रांसलेट करने के पश्चात अच्छी मिलती है रोजगार के नए उपादान अपने आप खुल जाते हैं।

सभी लोगों ने डॉ. कुमार विश्वास का नाम सुना होगा तो दुनिया भर में नाम कमा चुके हैं। एक अच्छे खासे प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहने वाले कुमार विश्वास जी ने कवि के रूप में कार्य किया और ख्याति प्राप्त हो गए इसके साथ ही प्रसून जोशी जो केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड में लिरिक्स का कार्य करते हैं। इन्होंने अपने गीतों के माध्यम से पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की। मीडिया वेब मीडिया सोशल मीडिया इनमें सौरभ द्विवेदी जी का बड़ा नाम है इंडियन इंस्टिट्यूट मास कम्युनिकेशन में उन्होंने अपना कार्य किया और आज कई पुरस्कारों से गौरवान्वित भी हुए। एक अनुवादक, लेखक, उत्तम प्रशासकीय कार्य करने वाले प्रतियोगिता के स्वरूप की पहचान रखने वाले I.S.S. अधिकारी निशांत जैन अपने वक्तव्य में कहते हैं – 'हम अकेले नहीं हैं जो हिंदी की

सेवा करते हैं जमाल ऐसे विद्वान है जिन्होंने हिंदी की अविरल सेवा की है और हिंदी ने भी उसकी सेवा करने के पश्चात उन्हें भूखा नहीं रहने दिया भरपेट खाना दिया। हिंदी को अपनी मजबूती बनाने के लिए कहते हैं।'

उपर्युक्त विवरण के पश्चात रोजगार के लिए हिंदी एकमात्र ऐसा आयाम है जो अनेकानेक प्रकार के द्वारों को खोल देती हैं। किंतु इन द्वार को पार करने के लिए हमें भी हिंदी के व्याकरणिक स्वरूप को पहचानना अत्यावश्यक होगा। आलोचना, वसुधा, वागर्थ, साहित्य वैभव, कादंबिनी, अहा जिंदगी, हंस, जैसी पत्रिकाओं को पढ़ना अत्यावश्यक होगा। इन पत्र–पत्रिकाओं के साथ–साथ हमें हिंदी समाचार पत्रों को भी जरूर पढ़ना चाहिए। यूट्यूब पर आने वाले अच्छे साहित्यकारों को भी सुनना चाहिए ताकि हमारा उच्चारण सरल हो सटीक हो। जब हम अपनी व्याकरणिक गलतियों को सुधारते हैं इन सब कार्यों को अपनाते हैं तो हिंदी रोजगार के रूप में नए आयामों को खोलती है।

शोध संदर्भ :–

1. विदेशों में हिंदी पत्रकारिता, डॉक्टर प्रद्युम्न मिश्र, इंदौर।
2. दैनिक भास्कर, लक्ष्य पत्रिका, नवंबर 2009

भ्रमणध्वनी 9371166339

डॉ. सुगंधा हिं. घरपणकर

जन्म : 01 जून 1967, गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी, इतिहास), एम.एड., एम.फिल., पीएच्.डी. (हिंदी साहित्य)

शोध विषय : डॉ. प्रभा खेतान के समग्र साहित्य का अनुशीलन

शोध-निर्देशन : एम.फिल. (दो), पीएच्.डी. (एक)

प्रकाशित पुस्तकें : तीन

अन्य गतिविधियाँ

- हिंदी की विविध पत्रिकाओं के लिए लेखन-कार्य।
- अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, संगोष्ठियों में प्रपत्र-पाठन एवं सहभागिता।
- शोध आलेख प्रस्तुतीकरण अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय संगोष्ठी-61
- अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय शोध आलेख का प्रकाशन-11
- कार्यशालाओं में सक्रिय सहभाग

पुरस्कार :

1. महात्मा फुले प्रतिभा अन्वेषण प्रतिष्ठान नागपुर द्वारा 'महादेवी वर्मा लिट्रेरी नॅशनल अवार्ड 'मार्च-2013)।
2. गूगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी, भिवानी (हरियाणा) द्वारा डॉ. प्रभा खेतान का साहित्य : एक अनुशीलन इस कृति को पुरस्कार प्राप्त

अभिरुचि : वाचन-लेखन, सामाजिक कार्य, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण।

संप्रति : असोसिएट प्रोफेसर, राजा शिव छत्रपति कला और वाणिज्य महाविद्यालय, महागाँव, तहसील- गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र) 416502